पुस्तक एजन्सी माला—१५

राम बादशाहके छः हुक्मनामे

(स्वामी रामतीर्थके व्याख्यान
उनके
संक्षिप्त परिचय सहित)

सम्पादक—
रामभक्त

प्रकाशक—
हिन्दी-पुस्तक-एजेंसी
२०३ हरिसन रोड,
कलकत्ता।

तीसरा संस्करण] बसन्त पंचमी सं० १९८६ [मूल्य १)

प्रकाशक—
बैजनाथ केडिया
प्रोप्राइटर
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
२०३, हरिसन रोड,
कलकत्ता।

मुद्रक—
बैजनाथ केडिया
प्रोप्राइटर
वणिक् प्रेस,
१, सरकार लेन, कलकत्ता।

प्रकाशकका निवेदन

आज हिन्दी पुस्तक एजेन्सी मालाका "रामबादशाहके छः हुक्मनामे" नामक १५ वां पुष्प (तीसरा संस्करण) हिन्दी प्रेमियोंकी भेंट किया जाता है। यह परमपदप्राप्त स्वामी रामतीर्थजीके लेख और व्याख्यानोंका संग्रह है। हम इन व्याख्यानोंकी बड़ाईमें कुछ कहना नहीं चाहते हैं, पाठक पढ़कर इनका मूल्य स्वयं समझ सकेंगे। इसमें स्वामीजीकी भाषा ज्योंकी त्यों रखी गई है। क्योंकि उनकी असली भाषामें जो जोर है वह अनुवादमें नहीं आ सकता था। फारसी न जाननेवाले पाठकोंके सुभीतेके लिये फुटनोटमें कठिन शब्दोंके अर्थ दे दिये गये हैं। थोड़ी कठिनाई होगी भी तो वह असली भाषाद्वारा प्राप्त होनेवाले आनन्दकी अपेक्षा कम ही होगी। इसमेंके ५ हुक्मनामे ज़माना आफिस कानपुरसे प्रकाशित उर्दू पुस्तक "यादगार राम" से लिये गये हैं। उनके लेनेकी आज्ञाके लिये हम "ज़माना" के सहृदय सम्पादक श्रीयुक्त दयानारायणजी निगमके विशेष कृतज्ञ हैं। फुटनोट तथा प्रूफमें हमें अपने हितैषी श्रीयुक्त नारायण प्रसादजी "बेताब" से बड़ी मदद मिली है। "संक्षिप्त परिचय" एक प्रेमी मित्रका लिखा हुआ है। दोनों सज्जन हमारे धन्यवादके अधिकारी हैं।

—प्रकाशक

विषय सूची

रामबादशाहके छः हुक्मनामे

स्वामी रामतीर्थ (१९०३)

वणिक् प्रेस, कलकत्ता।

स्वामी रामतीर्थ

संक्षिप्त परिचय

स्वामी रामने, जिनका पूर्वनाम गोस्वामी तीर्थराम एम० ए० था, सन् १८७३ ई० में दीपमालिकाके एक दिन पीछे पंजाबप्रान्तके गुजरानवाला जिलेमें मुरलीवाला ग्राममें जन्म लिया था। जन्मके थोड़े ही दिन पीछे उनकी माताका देहान्त हो गया। उनका पालन-पोषण उनके पिता गोस्वामी हीरानन्दकी बहनने किया। बाल्यावस्थासे ही उनकी रुचि पुराण, महाभारत, भागवत आदि ग्रन्थोंकी कथाओंसे हो गई। वह इन कथाओंको बड़े ध्यानसे सुनते और उनपर नाना प्रकारके प्रश्न करते। उस गांवके लोगोंका कथन है कि वह असाधारण बालक थे, बड़े चतुर और विचारशील थे। उन्हें एकान्तमें घूमना और बैठना पसन्द था। पढ़ने-लिखनेमें बहुत कुशल थे।

लड़कपनहीसे उनके दृढ़संकल्प होनेका परिचय मिलता था। जो काम उचित समझते उसे पूरा करनेमें कोई बाधा उन्हें न रोक सकती थी। मैट्रिकुलेशन परीक्षा पास होनेके समय उनकी आयु केवल १५ वर्षकी थी। उनके पिताने उनसे किसी दफ्तरमें नौकरी करनेका आग्रह आरम्भ किया। पर इतनी अल्पावस्थामें नौकरी करना अपनी भावी उन्नतिके द्वारको बन्द करना था। वह सहमत न हुए। तब उनके पिताने रुष्ट होकर उन्हें घरसे निकाल दिया। पर वह अपने संकल्पसे तिलमात्र भी विचलित न हुए। कालेजमें भरती हो गये।

इससे उनके पिताकी क्रोधाग्नि और भी प्रज्वलित हुई। उन्हों ने उनकी स्त्रीको भी उनके पास पहुंचा दिया। ऐसी कठिनाइयोंमें विद्याभ्यास करना सरल काम न था। शहरका रहना, गृहस्थीकी चिन्ताएं एक साधारण मनुष्यके उत्साहको क्षीण करनेके लिये बहुत काफी थीं। पर रामने दृढ़ताके साथ इन कठिनाइयोंका सामना किया। उन्हें कुछ छात्रवृत्ति मिलती थी, पर इससे काम चलते न देखकर उन्होंने दो एक रईसोंके लड़कोंको पढ़ाना शुरू कर दिया। इस अवस्थामें भी उनकी वृत्ति अन्तःकरणकी पवित्रता और आत्मिक विकासकी ओर रहती थी। इसी समय वह एक पत्रमें लिखते हैं:—"आदमीकी जानसे परे भी एक वस्तु है, अर्थात् परमात्मा। दुनियामें जो कुछ होता है उसकी मर्जीसे होता है। पुतलियां बग़ैर तारवालेके नहीं नाच सकतीं। बांसुरी बग़ैर बजानेवालेके नहीं बज सकती। इसी तरह दुनियाके लोग बग़ैर उसके हुक्मके कोई काम नहीं कर सकते......जिस तरह बादशाहके साथ सुलह (भक्ति) करनेसे तमाम अमला (कर्मचारी-गण) हमारे दोस्त बन जाते हैं, उसी तरह परमात्माको राजी रखनेसे तमाम खल्क़ (संसार) हमारी अपनी हो जाती है।"

कितने उच्च पवित्र विचार हैं!

बी० ए० क्लासतक उनकी दूसरी भाषा फ़ारसी थी। फ़ारसीका अभ्यास उन्होंने बाल्यावस्थाहीसे अच्छी तरह किया था। पर बी० ए० में पहुंचकर अपने कुछ मित्रोंके अनुरोधसे उन्होंने संस्कृत भाषा लेनेका निश्चय किया। उस समयतक वह संस्कृतका कुछ भी न जानते थे। संस्कृतके अध्यापकने उनके प्रार्थनापत्रका विरोध किया, पर उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा न छोड़ी। और यद्यपि वह पहले साल बी० ए० की परीक्षामें संस्कृताभ्यासके कारण फेल हो गये, पर दूसरे साल पञ्जाब विश्वविद्यालयमें सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। एम० ए० परीक्षामें भी उनका स्थान सबसे ऊंचा था। प्रान्तीय सरकारकी

ओरसे उन्हें इङ्गलेण्ड जाकर पढ़नेके लिये छात्रवृत्ति मिलनेकी बहुत सम्भावना थी। जब स्वामीजीके मित्रोंने उनसे पूछा कि आप कहां जाकर क्या पढ़ना चाहते हैं, तो उन्होंने दृढ़तासे कहा, मैं अपनेको शिक्षाकार्य्यके निमित्त तैयार करूंगा। सिविल-सर्विस या बैरिस्टरीकी ओर उनका ध्यान भी न हुआ! पर ईश्वरको मंजूर न था कि ऐसा महान् पुरुष, जिससे केवल भारतका ही नहीं समस्त संसारका कल्याण होनेवाला था, केवल अभियुक्तोंको दण्ड देने, दिलाने और भूमिकर वसूल करनेमें अपना जीवन व्यतीत करे। यह छात्रवृत्ति एक दूसरे विद्यार्थीको मिल गई।

स्वामी राम सांसारिक सुखोंपर कभी मोहित नहीं हुए। विद्याभ्यासके दिनोंमें भी वह बड़े संयमसे रहते थे। उनका भोजन सादा और थोड़ा होता था। वह बहुत ही सादे कपड़े पहनते थे, व्यवहारमें बड़ी कोमलता तथा सरलता होती थी। यों कहना चाहिये कि वह जन्मसे ही विरक्त थे। अवस्थाके साथ साथ उनके मनकी यह वृत्ति और भी प्रबल होती गई। हां, पहले इसका विकास कृष्णभक्तिके रूपमें हुआ। एम० ए० पास करनेके बाद जब वह लाहौरके एक कालेजमें अध्यापक नियुक्त हुए तो कृष्णभक्तिमें इतने तल्लीन हुए कि अहर्निशि उसीमें मग्न रहते थे। कभी कभी कृष्णका नाम सुनते ही वह प्रेमसे मूर्छित हो जाते थे, कहीं बांसुरीकी ध्वनि सुनाई देती तो विह्वल हो जाते। छुट्टियोंमें मथुरा वृन्दावन चले जाते थे। होशियारपुरके एक वकील लाला अयोध्याप्रसाद लिखते हैं :—

"गुसाईंजी एक बार लाहौरमें रामायणकी कथा सुन रहे थे। थोड़ी देर बाद बालकोंकी भांति रोने लगे। लोगोंने बहुत दिलासा दिया, पर कोई फल न हुआ। कथा समाप्त होनेपर वह कहते सुनाई देते थे, "कृष्ण! मुझपर दया कीजिये। क्या मैं किष्किन्धाके बन्दरोंसे भी गया गुजरा हूं? क्या भिल्लोंसे भी नीच हूं? यदि आपके

दर्शन न हुए तो चूल्हेमें जाय यह विद्या, खाकमें जाय यह इज्जत, और भाड़में जाय यह शरीर।"

एक बार रावी नदीके किनारे अपने प्रियतमके ध्यानमें मग्न बैठे थे। इतनेमें कोयलकी कूक सुनकर चौंक पड़े। कहने लगे, "अरी कोयल, तेरी ध्वनिमें यह मधुरता कहांसे आई? क्या तूने उस बांसुरी-वालेको देख लिया है? सच बता वह किस उपायसे और कब मिलेगा? अरी आंखों, अगर श्यामको नहीं देख सकती हो तो अभी फूट जाओ। अरे हाथो! अगर प्यारे कृष्णके चरण नहीं छू सकते हो तो मैं तुमको रखकर क्या करूंगा?......अच्छा, मैं पापी सही। अब तो आपकी शरण आया हूं, दया कीजिये, क्षमा कीजिये, झलक दिखलाइये। नाथ! प्राण देनेसे भी आप मिलते हैं तो ले लीजिये, यह प्राण भी आज आपकी भेंट किये देता हूं।"

जो हृदय भक्तिमें ऐसा रत हो रहा हो उसे सांसारिक वस्तुओंसे क्या आनन्द मिल सकता था? जो वेतन पाते थे उसे तुरत ही दीन-दुखी मनुष्योंको प्रदान कर देते थे। अपने लिये दो चार रुपये भी न रखते थे। एक पत्रमें, जो इसी समयका लिखा हुआ है, कहते हैं:—

"किसी वस्तुको अपनी नहीं समझता, न गहने बनानेका, न सामान जमा करनेका ध्यान है। अगर वृक्षकी छांह घरकी जगह, भभूत कपड़ोंकी जगह और भीखका टुकड़ा खानेको मिले तो भी आनन्द ही है।"

इसी कालमें द्वारकामठके जगद्गुरु श्री १०८ स्वामी शङ्कराचार्य-जी लाहौर आये। वह ब्रह्मसूत्रों, उपनिषदों और वेदान्तके ग्रन्थोंके बड़े ज्ञाता थे। राम उन दिनों लाहौर धर्मसभाके मंत्री थे। उन्हें स्वामी शङ्कराचार्यके सत्सङ्गका बड़ा सुअवसर मिला। वह उनके साथ काश्मीर चले गये। शङ्कराचार्यजीके उपदेशोंका रामपर यह असर हुआ कि प्रेमकी ज़रदी (पीलापन) ज्ञानकी लालीमें बदलने लगी।

काश्मीरसे लाहोर वापस आनेपर गुसाईंजी वेदान्त और उपनिषदोंके मनन और चिन्तनमें मग्न रहने लगे। छुट्टियोंमें मथुरा या वृन्दावनकी जगह हृषीकेश और हरिद्वारकी यात्रा करते थे। अब एकान्त सेवनमें रासलीलाकी अपेक्षा कहीं अधिक आनन्द और शांति मिलती। आप एक पत्रमें लिखते हैं :—

"आजकल तो वेदान्त-विचार, भजन और एकान्त सेवनहीको कुल समय देता हूं। इसमें वह आनन्द है कि छोड़नेको जी नहीं चाहता। अगर व्यवहार-कालमें चलते-फिरते सब काम करते हमारी वृत्ति ब्रह्माकार रहे और दिल अर्शआला (ब्रह्मलोक) से कभी नीचे न उतरे तो धन्य है हमारा जीवन, नहीं तो मनुष्यदेह निष्फल खो दी।"

वेदान्तके अभ्यासमें गुसाईंजी ऐसे अनुरक्त हुए कि उन्होंने फरवरी सन् १८६८ ई० में एक अद्वैतामृतवर्षिणी सभा स्थापित की। यहां सप्ताहमें एक दिन महात्माओंका सत्सङ्ग होता था। इस समय उन्होंने अपने गुरुको जो पत्र लिखे हैं, उनसे विदित होता है कि प्रतिदिन उनका ब्रह्मानुराग प्रगाढ़ होता जाता था और चित्तपर शांति और स्थिरताका आधिपत्य जमता जाता था। इसी सालके ग्रीष्म-कालमें वह फिर हरिद्वार पधारे। यहांसे हृषीकेश होते हुए ब्रह्मपुरीके निकट आकर गङ्गातटपर आसन जमा दिया और आत्मसाक्षात्का दृढ़ संकल्प कर लिया। इस स्थानका उन्होंने स्वयं वर्णन किया है जिससे उनके चित्तकी वृत्ति भलीभांति प्रकट होती है:—

"गङ्गा! क्या वह तेरी छाती है जिसके दूधसे यह ब्रह्मविद्या पर-वरिश पाती है? हिमालय! तेरी ही गोद है जिसमें ब्रह्मविद्या खेला करती है? हाय! वह परमानन्द कहां है जिसकी मस्तीमें कोई फ़र्दा[1] है न इमरोज़[2] है? हाय! वह बहरेसरूर[3] कब मिलेगा जो लज़्ज़त दुनियवीको ख़स[4] व ख़ाशाक[5] की तरह बहा ले जाता है?"

१-कल २-आज ३-आनन्दसागर ४-५-कूड़ा-करकट।

अगराज़े जिस्मानी १ और जज़्बात नफ्सानी २ धुन्ध और अन्धेरेकी भांति कब साफ़ उड़ जायंगे ?

... ...

श्रीभागीरथीकी शोभा कौन वर्णन करे ? क्या विराट् भगवानका हृदयस्थान यही है ? इसका गम्भीर और शील स्वभाव चित्तकी चुलबुलाहटको साफ़ कर रहा है। कहीं कहीं गङ्गाजलके अजब शांति भरे हुए कुण्ड बन रहे हैं। चांदनीमें तू चमकती-दमकती गङ्गा है कि कोटानुकोट हीरे मोती कूट कूट कर भरे हैं। गङ्गा अपनी महाशीलता और निर्मलतासे वैष्णवपन दिखाती और महाशक्ति और ज़ोर शोरसे शेरकी तरह गरजने और अस्थियोंके चबानेसे शाक्तपन ज़ाहिर करती विष्णु और शिव दोनोंकी झलक मारती है। गंगा मानो कह रही है कि ऐ अहंकार! आ मैं तेरा शिकार करूं, ऐ जेहल ३ तेरी जिस्मानियत और अनानियत ४ की हड्डियां चबा जाऊंगी; पसुलियां अलग अलग कर दूंगी। ऐ मोहरूपी पत्थर! आ, मैं तुझे चीर डालूं, पहाड़को काटकर आई हूं, अब तेरी बारी है।

... ...

क्या हम अकेले हैं? कोई विद्यार्थी साथ नहीं, नौकर पास नहीं, आबादी बहुत दूर है, आदमीका नाम काफ़ूर है, तारोंभरी रात, आधी इधर आधी उधर. बिल्कुल सुनसान है, बियाबान५ है, सन्नाटेका आलम है, पर क्या हम अकेले हैं? अकेले हमारी बला, अभी वर्षा बांदी स्नान करा गई है, हवा लौंडी चारों तरफ़ दौड़ रही है, सामने गङ्गा अपनी गङ्ग गङ्गकी रागिनी अलाप रही है, सैकड़ों खादिम इर्दगिर्द झाड़ियोंमें आराम कर रहे हैं। हम अकेले क्यों? पर हां, हम अकेले ही हैं, यह घने दरख्त नहीं हम ही हैं, हवा नहीं हम हैं, गङ्गा नहीं हम हैं,

---

१-शारीरिक स्वार्थ २-इन्द्रिय-सुखभोग ३-मूर्खता ४-अहंकार ५-जंगली।

तारे-वारे और चांद नहीं हम हैं। खुदा नहीं, हम। हम ही हम!"

... ...

इस तपोवनसे लौटकर स्वामी राम लाहोरमें ओरियण्टल कालेजमें अध्यापक नियुक्त हो गये और जब गर्मियोंमें कालेज बन्द हुआ तब काश्मीरकी यात्रा की और अमरनाथ होते हुए लाहोर वापस आये। इस यात्राका स्वामीजीने स्वयं वर्णन किया है, जिसका एक एक शब्द आत्मानन्दमें डूबा हुआ है। लिखते हैं :—

"इधर उधर रामकी सेना कल्लोल कर रही है। छोटे छोटे ममोलों जैसे रंग रंगके परिन्दे बेल बूटोंपर फुदक रहे हैं और आवाज़ खुश आइन्द१ पर चहचहा रहे हैं।

सफ़ेद सफ़ेद झागके अन्दरसे नीला पानी इस तरह झलक रहा है जैसे गोरे रंगके वदनपर नीली नीली रगें। बाज़ जगह पानीके नीचे पत्थरोंकी यह चमक है कि अगर "सब जगह घर समझनेवाला" कोई आदमी यहां हो तो फिलफौर उसके जीमें यही आये कि जैसे बने इन सङ्गरेज़ोंको चुराकर ज़रूर ले जावें,लेकिन घर कैसा? यह वह मुकाम है कि जब एक दफ़ा देखा तो यहीं घरकर बैठनेको ख्वाहिश होती है। छोड़नेको जी नहीं चाहता।

हाय रे! दुनियांकी हवा व हवस, तेरे रस्से कैसे मज़बूत हैं। ऐसे आनन्दके आगोश २ से भी लोगोंको खींच ले जाती है, फिर गर्मीमें रुलाती और मिट्टीमें मिलाती है।

... ...

सड़कके दोनों किनारोंपर आमने-सामने कतारोंमें शमशाद३ आसमानसे बातें करते हुए खड़े हैं। गोया कशीदा४ क़ामत माशूक़ हैं कि लिबासे५ सब्ज दरबर किये६ बदनसे बदन मिलाये रामके इन्त-ज़ारमें सफ़बस्ता७ हैं। अजब नजारा८ है। बाज़ बाज़ मुकामातपर तो

१-सुहावनी २-गोद ३-वृक्ष ४-लम्बे ५-वस्त्र ६-पहने ७-खड़े ८-दृश्य।

शमशाद ऐसे तंग एस्तादा१ हैं कि बेचारोंका कन्धेसे कन्धा छिलता है। और यों सरबफलकर हैं कि अगर मुतला साफ़ हो और सड़कपर ठहरकर आसमानकी तरफ़ नज़र उठाई जाये, तो रोज़ रोशनमें दिन दोपहरके वक्त, तारोंका नज़र आना कुछ बड़ी बात नहीं।

एक दिन ऐसी सड़कपर अनन्तनागके क़रीब घोड़ेपर सवार राम जा रहा था। बादल घिर रहे थे। हवा शमशादोंकी ज़ुल्फोंसे अठखेलियां कर रही थी। एकाएक घटा तमाम आसमानपर फिर गई।

वह आई वह आई घटा,
गुलिस्ताने आलमपर छाई घटा।
घटा काली काली धनुष लाल लाल,
कन्हैयाके ऊपर है जैसे गुलाल।

पीछेसे एक नग़मा३ की आवाज़ निकली। हवापर सवार होकर फैलने लगी। बादलोंतक गूँजसे तमाम आलम भर गया। यह एक पहाड़ी लड़का बांसुरी बजा रहा था। कैसा समा बंध गया—अहा! हा! हा! बादलके सातवें पर्देतक वह सुरें धँस गईं। अब किसमें ताब थी कि घोड़ा बढ़ाकर आगे निकल जाये। नग़मा तालके साथ घोड़ेका क़दम उठने लगा। मील एक गुज़र गये और खयालतक नहीं आया।

यूनानी मिथलोजी४ से सुना है कि हुस्न५की परी फेनमेंसे पैदा हुई थी। लेकिन 'शुनीदा६के बुद मानिन्द दीदा७' इन आबशारोंके८ फ़ेनपर प्रत्यक्ष नाच (नृत्य) करती देखो। पानी इतना तो गहिरा, लेकिन शफ़्फ़ाफ़ ऐसा कि प्यारी गङ्गी (गङ्गाजी) याद आती है। गोपियां अगर यहां नहातीं तो गोकुलचन्द्रको कभी ज़रूरत न पड़ती

१-आकाशसे मिले हुए २-आकाशमें बादल न हो ३-राम ४-पुराण ५-सुन्दरता ६-सुना हुआ ७-देखा हुआ ८-झरने।

कि इनको बरहना तन[1] देखनेके लिये पानीसे बाहर निकालनेकी तकलीफ़ देता। यह झलकते झलकते ऊँचे आबशार चांदीके कमन्द और रस्से मालूम देते हैं कि जिनको पकड़कर आलम उलवी[2]को चढ़ जायें। या यह हीरेकी गातवाली कंचनियां (चादरें) हैं जो सरके बल रक़्सकुनां[3] ज़मीन ख़िदमत चूम रही हैं और निहायत सुरीली आवाज़से रामकी महिमाके गीत गाती जाती हैं।"

... ...

सन् १६०० में "अलिफ़" नामकी उर्दू पत्रिका जारी की गई और इसके दो तीन अंक ही निकले थे कि जुलाईमें रामने वानप्रस्थ ले लिया। उनके कई भक्तों तथा पत्नी और पुत्रने भी उनके साथ जङ्गलको प्रस्थान किया। किन्तु थोड़े ही दिनोंमें उनकी पत्नीका स्वास्थ्य ऐसा बिगड़ा कि वह विवश होकर अपने घर चली आईं। १६०१ के आदिमें रामने संन्यास ग्रहण कर लिया। संसारमें वह कभी लिप्त नहीं रहे। युवावस्थाहीसे इनकी वृत्ति एकान्ताभ्यासकी ओर थी, अब वह पूर्ण रीतिसे विरक्त हो गये। कुछ दिनोंतक तो वह उसी स्थानपर रहे, फिर गङ्गोत्री, बद्रीनाथ आदि पवित्र स्थानोंकी यात्रा करते हुए वह लगभग सालभरके बाद लौटे और भारतके नगरोंमें घूम घूमकर लोगोंको अपनी अमृतवाणीसे कृतार्थ करने लगे।

स्वामी रामके उपदेशोंमें ऐसा विह्वलकारी आकर्षण होता था कि जिसने एक बार भी उनके सुननेका सौभाग्य प्राप्त किया है, वह उस रसको जीवन पर्य्यन्त नहीं भूल सकता। मथुरामें धर्ममहोत्सवके अवसरपर स्वामीजीका व्याख्यान भी होनेवाला था। लोग दिनभर उपदेश सुनते सुनते थकसे गये थे। यहां तक कि उत्सवका समय व्यतीत हो गया। अन्तमें स्वामीजी मण्डपमें आये, पर व्याख्यान न देकर केवल यह कहा कि यदि आप लोगोंको रामकी बातें सुननी हों

१-नग्न २-स्वर्ग ३-नाचती हुई।

तो वह इस मण्डपके बाहर यमुनाके तटपर आकर सुन लें। यह कहकर स्वामीजी यमुनाकी ओर चले गये। श्रोतागण भी कुर्सियां छोड़ छोड़कर उनके पीछे हो लिये। कोई ठोकरें खाता था, कोई झाड़ियोंमें उलझता था, साथियोंके साथ छूटे जाते थे, पर उस प्रेमाकांक्षामें उन्हें किसी बातकी सुधि न थी। जब राम यमुना किनारे पहुंचे तो रात हो गई थी और पौष मासकी शीतल वायु चल रही थी। नदी किनारेकी रेती और भी ठंडी हो गई थी। महोत्सवका समय केवल दिनका था इसलिये लोग अपने साथ ओढ़नेके कपड़े न लाये थे। पर वह ८ बजे तक उसी ठंडी रेतीपर बैठे हुए रामके मनोहर वचन सुनते रहे, किसीने शीतकी परवाहतक न की। महोत्सवमें और भी कितने ही साधु महात्मा उपस्थित थे, परन्तु राम उस महोत्सवके बादशाह थे। उनके उपदेशोंमें ऐसा अनुराग होता था कि अन्य मतके लोग भी सुनकर मस्त हो जाते थे। शङ्काओंका वह ऐसे शान्तभावसे समाधान करते थे कि द्वेषी भी उनका भक्त हो जाता था। विवादियोंकी आधी अश्रद्धा तो उनके दर्शनमात्रसे गायब हो जाती थी। अमेरिकामें एक नास्तिक महिलाने रामको समाधिमें मग्न देखकर कहा, "प्रभो, अब मैं नास्तिक नहीं हूं। मेरी शंकाएं शांत हो गईं।" जो लोग उनकी हँसी उड़ानेका इरादा करके आते थे, वे भक्तिका प्रसाद लेकर जाते थे। इसका मुख्य कारण यही था कि राम किसी मतसे द्वेप न रखते थे। उनके पवित्र निर्मल अन्तःकरणमें मतमतान्तरोंको जगह न थी। प्रत्येक मतमें उन्हें ईश्वरका हाथ काम करता दिखाई देता था। मिश्र देशमें लोग उनपर इतने आकर्पित हुए कि उन्हें मस्जिदमें व्याख्यान देनेको निमंत्रित किया। अमेरिकाके धार्मिक सम्मेलनमें देश देशान्तरोंके विद्वान् एकत्रित थे, किन्तु राम उन नक्षत्रोंमें चन्द्रके समान थे। उनके सत्संगसे लाभ उठानेके लिये वहां लोगोंने एक "हरमेटिक ब्रदरहुड" स्थापित की। उनके व्याख्यानोंपर

समाचार-पत्रोंमें बड़ी उदारता पूर्वक आलोचनाएँ की जाती थीं। अमेरिका-निवासियोंको उनके जीवनपर कौतूहल होता था। स्वामी विवेकानन्दके बाद भारतवर्षसे कई महात्मा अमेरिका गये और जाते हैं, उनके उपदेशोंसे वहां हिन्दू मत, वेदांत, दर्शनका अच्छा प्रचार हो गया है। कमसे कम वहांका शिक्षित-समुदाय इन विषयोंसे इतना अनभिज्ञ नहीं है जितना इंगलैंडका शिक्षित-समुदाय। किन्तु रामके त्याग और वैराग्यका उनपर जितना प्रभाव पड़ा वह कम किसीका पड़ा होगा। वहांके एक बड़े विद्वान्ने रामको देखकर कहा था—"यह अद्भुत पुरुष हैं। यह अधिकांश बुद्धि-लोकमें रहते हैं, शरीरसे इनका सम्बन्ध बहुत कम रहता है।" उनका निवास सदा परमात्मामें रहता था, यही उनके जगद्व्यापी प्रेमका मूल मन्त्र था। अमेरिकासे लौटने-पर उनके कुछ भक्तोंने उनके नामसे एक पृथक् संस्था खोलनेकी चर्चा की। रामने इसका उत्तर दिया--"भारतमें जितनी सभाएं और समाज हैं वह सब रामके हैं, राम उनमें काम करेगा; ईसाई, आर्य्य, सिक्ख, पारसी, मुसलमान सब मेरे भाई हैं, उनसे कह दो कि राम उनका है।"

समस्त संसारसे प्रेम रखनेपर भी स्वामी राम अपनी मातृभूमिके सच्चे भक्त थे। यह भारतका परम सौभाग्य है कि उन्होंने अपने लेखों और व्याख्यानोंमें देश और जातिकी सेवाका बारबार अनुरोध किया है। वह दरिद्र देशवासियोंके पालनको ईश्वर-भक्तिका महत्व देते थे। एक पत्रमें लिखते हैं :—

"ऐ हिन्दवालो! क्या तुम भी देशभक्त बनना चाहते हो? तो फिर अपने आपको मुल्क और उसके निवासियोंकी सेवामें लगा दो। सच्चे आध्यात्मिक सिपाही और मर्द मैदान बनकर अपने तन, मन, धनको देशके हितपर अर्पण कर दो, देशकी दशाका अनुभव करो।"

एक दूसरे लेखमें लिखते हैं:—

"मैं सदेह भारत हूं। सारा भारतवर्ष मेरा शरीर है। रासकुमारी

मेरा पैर और हिमालय मेरा सिर है। मेरे बालोंकी जटाओंसे गंगा वह रही हैं। मेरे सिरसे ब्रह्मपुत्र और अटक निकली हैं। विन्ध्याचल मेरा लङ्गोट है, कारोमण्डल मेरा दायां और मलाबार मेरा बायां पांव है। मैं सम्पूर्ण भारत हूं। पूर्व और पच्छिम मेरी दोनों भुजाएं हैं जिनको फैलाकर मैं अपने देशवासियोंको गले लगाता हूं। हिन्दुस्तान मेरे शरीरका ढांचा है और मेरी आत्मा सारे भारतकी आत्मा है। चलता हूं तो अनुभव करता हूं कि तमाम हिन्दुस्तान चल रहा है, जब मैं बोलता हूं तो तमाम हिन्दुस्तान बोलता है।"

देशभक्तिका ऐसा ऊंचा आदर्श और कहां मिल सकता है? मातृभूमिकी दुर्दशापर वह कभी कभी विकल हो जाते थे। देशानुरागसे उन्मत्त होकर वह लिखते हैं:—

"ऐ गुलामी, अरे दासपन, अरी कमजोरी, अब समय आ गया, बांधो बिस्तर, उठाओ लत्ता-पत्ता, छोड़ो मुक्त पुरुषोंके देशको। सोनेवाले! बादल भी तुम्हारे शोकमें रो रहे हैं, बह जाओ गंगामें, डूब मरो समुद्रमें, गल जाओ हिमालयमें······रामका यह शरीर नहीं गिरेगा, जबतक भारत बहाल न हो लेगा। यह शरीर नाश भी हो जायगा तो भी इसकी हड्डियां दधीचिकी हड्डियोंके समान इन्द्रका वज्र बनकर द्वैतके राक्षसको चकनाचूर कर ही देंगी। यह शरीर मर भी जायगा तो भी इसका ब्रह्मबाण नहीं चूक सकता।"

यह देशानुराग बहुधा भावमय पद्योंमें प्रकट होता था। उन्हें पढ़नेसे विदित होता है कि जिस हृदयसे वह निकले हैं वह जातीयताका कैसा अखंड और अनन्त स्रोत था—

सारे जहांसे अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं उसकी वह बोस्तां हमारा॥
गुरबतमें हों अगर हम, रहता है दिल वतनमें

रामको वहीं हमें भी हो दिल जहां हमारा ॥
देखा है प्यारे मैंने दुनियांका कारख़ाना
सैरो सफ़र किया है, छाना है सब ज़माना ॥
अपने वतनसे बेहतर कोई नहीं ठिकाना
प्यारे वतनको गुलसे खुशतर है सबने माना ॥
अहलेवतनसे पूछो तुम ख़ूबियां वतनकी
बुलबुल ही जानती है आज़ादियां चमनकी ॥

स्वामी राम विद्याके अगाध सागर थे। उन्हें पदार्थविज्ञानसे प्रेम था और निपुण रसायनी तथा वनस्पति-शास्त्रज्ञ थे। तत्त्व-विज्ञानशास्त्रमें विकासवाद उनका विशेष प्रिय विषय था। उन्होंने समस्त पाश्चात्य और पूर्वीय दर्शन-शास्त्रोंका अपने ढंगसे पूरा पूरा अध्ययन किया था। उन्होंने शंकर, कणाद, कपिल, गौतम, पातञ्जलि, जैमिनि और व्यासके ग्रन्थोंके साथ साथ कांट, हेगल, गेटे, फिक्टे, स्पिनोज़ा, स्पेंसर, डार्विन, हैकल, टिंडल, हक्सले, स्टार, जार्डन और अध्यापक जेम्सके ग्रंथोंमें भी पारदर्शिता प्राप्त की थी। फार्सी, अंग्रेज़ी, हिन्दी, उर्दू और संस्कृत साहित्योंके पूर्ण पंडित थे। ई० १९०६ में उन्होंने चारों वेदोंका अध्ययन किया था। प्रत्येक मन्त्रके पूर्ण ज्ञाता थे। वैदिक ऋचाओंके प्रत्येक शब्दका विश्लेषण वह एक शब्दशास्त्रीकी भांति करते थे। इस प्रकार उन्होंने अपनेको विलक्षण विद्वान् बना लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि अपनी आयुके तैंतीस वर्षोंके प्रत्येक क्षणका उन्होंने अत्यन्त सदुपयोग किया था। अपने अन्त समयतक वह कठोर परिश्रम करते रहे। अमेरिकामें दो वर्षके प्रवासकालमें सार्वजनिक कार्योंमें घोर श्रम करते हुए भी, बहुत कुछ अमेरिकन साहित्य उन्होंने पढ़ा।

संसारके सब ग्रंथकारों, साधुओं, कवियों और परमभक्तोंके सम्बन्धमें अपना मत प्रकट करते समय वह एक अद्भुत रसिकताका परिचय देते थे। उनकी अनोखी तथा निष्पक्ष आलोचनामें किसी प्रकारके पांडित्य-प्रदर्शन तथा बनावटी अभिमानकी नाममात्रकी भी छाया अथवा कोई निस्सार बात नहीं होती थी। वह अति उच्च कोटिके विद्वान्, तत्वज्ञ और ब्रह्मवादी थे। मेधाशक्तिके विकासके साथ ही वह अपने आध्यात्मिक उत्थानको बड़े ऊंचे शिखरतक पहुँचा सके थे। जो कुछ समय उन्हें मिलता था, वह उपनिषदोंके रहस्यों और प्राचीन आर्य ब्रह्मविद्याका मनन करते हुए हिमालयकी पहाड़ियों तथा जङ्गलोंमें बिताते थे।

वह कवियोंमें कवि थे। पहाड़ी नदीका नाद उनके लिये यथेष्ट सङ्गीत था। उनके लिये पक्षी वृक्षोंकी छायाके नीचे प्रकृतिके रहस्यों-का वर्णन करते थे, विश्व-संगीत उन्हें सुनाई देता था और उनके लिये परमप्रिय कृष्ण ही विश्व-ब्रह्मांड तथा मूर्तिमान विश्वनृत्य और विश्व-समाधि थे, समुद्रकी थिरकती हुई लहरोंमें, बनों (वृक्षों) के डोलनेमें, जङ्गलकी निर्जनतामें उन्हें सार्वभौम सौन्दर्य दिखाई देता था। प्रकृति माताकी आत्मासे एकताको ही वह वास्तविक आचरण समझते थे। उन्होंने प्रकृतिमें ही सर्वश्रेष्ठ मानवीय काव्य पढ़ा था और उनकी आत्माकी अग्निको शीतल हिम और पहाड़ी दृश्योंके विस्तारके सिवाय कौन बुझा सकता था? किसी घरका रहना उन्हें अच्छा नहीं लगता था। सबसे अधिक सुखी वह तभी होते थे जब हिमालयके जंगलोंमें नेत्रोंको आधा बन्द किये हुए विचरते थे और सर्वाधिक शक्तिशाली पर्वतराजको कनखियोंसे देखते थे। उन्होंने अनेक विषयोंपर कविता की है, पर विषय चाहे जो हो, उनकी काव्य-शैली बिलकुल अनूठी है। उन्हें जंगलोंमें, बनके वृक्षोंमें, तारोंमें, सभी जगह ब्रह्मका प्रकाश दिखाई देता। उनकी कविताके

सांचेमें ढलकर सभी विषय आध्यात्मिक बन जाते हैं। इन कविताओंको उरूज या पिंगलके नियमोंसे जांचना अन्याय है। उनका महत्व केवल उनकी सजीवता, उनकी मस्ती, उनका सारस्य है। वह हृदयकी उमंग है, भरे हुए सरोवरकी लहर है। उनकी भाषा अधिकांश उर्दू ही है, कहीं कहीं पञ्जाबी और हिन्दीका भी प्रयोग किया गया है। पर भाषा कुछ ही हो, भावसे जातीयता बरसती है। उनमें वह गुण कूट कूटकर भरा हुआ है जो कविताका प्रधान गुण है। हृदयको मसोस लेती है, उसे एक जोश, सच्चे उत्साहसे परिपूर्ण कर देती है। "आज़ादी" (स्वतन्त्रता) उनकी एक उत्तम कविता है, उसमें एक धनशाली मनुष्यके ठाट-बाटका वर्णन करनेके बाद आप पूछते हैं:—

क्या यह आज़ादी है ? हाय यह तो आज़ादी नहीं
गोय चौगांकी परेशानी है आज़ादी नहीं
अस्प हो आज़ाद सरपर कैद होता है सवार
अस्प हो मुतलक़ इनां हैरान रोता है सवार।
इन्द्रियोंके घोड़े छूटे बागडोरी तोड़कर
वह मरा, वह गिर पड़ा, असवार सिर मुँह फोड़कर।

अमरनाथके दृश्य अत्यन्त मनोरम हैं, उस यात्राका वर्णन करते हुए राम एक दृश्यका वर्णन करते हैं:—

ढलकता है उल दीदये महलकासा
धड़कता है दिल आइना पुर सफ़ासा।
हिलाता है कोहोंको सदमा हवाका
खिले हैं केवल फूल है एक बलाका।

यह सूरजकी किरनोंके चप्पे लगे हैं
अजब नाव हम भी हैं खुद खे रहे हैं।

भावार्थ—डल (झील) में इर्दगिर्दके पहाड़ोंकी छाया पड़ रही है और पानीके हिलनेसे इतने बड़े पर्वत हिलते हुए दिखाई देते हैं। सूर्य एक नावके सदृश डलमें कांप रहा है और उसकी किरनें मानो उसे खे रही हैं।

एक पर्वतका प्राकृतिक वर्णन यों करते हैं:—

आसमांका बतायें क्या हम हाल
ोतियोंसे भरा हुआ है थाल।
चांद है मोतियोंमें लाल धरा
अब्र है थालपर रूमाल पड़ा।
सिरपर अपने उठाके ऐसा थाल
रक्स[१] करती है नेचर[२] खुश हाल।

चांदनीमें गंगाकी शोभा यों वर्णन की है—

क्या कहूं चांदनीमें गंगा है
दूध हीरोंके रंग रंगा है।

वर्णनको मूर्तिमान बना देना कविताका सर्वप्रधान गुण है, और यह गुण इन शेरोंमें भरा हुआ है।

स्वामी रामके जीवनपर यों तो संसारकी कितनी ही महान् आत्माओंके विचारोंका प्रभाव पड़ा जिसने उनकी मनोवृत्तियोंको और भी विकसित कर दिया, पर आदिसे सबसे अधिक प्रभाव धन्ना भगत जीका पड़ा। यह महानुभाव गुजरानवालेमें रहते थे। वेदान्तके अनुयायी

---

१ नाच २-प्रकृति।

और बड़े पवित्र आचरणके मनुष्य थे। युवक तीर्थराम जब गुजरानवालेमें अङ्गरेजी पढ़ने आये ता वहां भगतजीसे उनकी भेंट हुई। भगतजीने उनकी धार्मिक प्रवृत्ति देखकर उन्हें उत्साह दिलाया और तीर्थरामको भी उनपर श्रद्धा हो गई। उनके सत्संगका कोई अवसर हाथसे न जाने देते। भगतजीके प्रति उनकी यह श्रद्धा जन्मभर रही। लाहोर आनेपर भी वह उनके पास बराबर पत्र भेजते थे, जिनके एक एक शब्दसे आदर और भक्ति टपकती है। अपनी आर्थिक कठिनाइयोंमें, अपने जीवनको संयमी बनानेमें उन्हें भगतजीके उपदेशोंसे बड़ी सहायता मिलती थी। रामके इन पत्रोंसे उनके आत्मिक विकासका भलीभांति स्पष्टीकरण होता है। धन्नाजी ज्ञानको भक्तिसे श्रेष्ठ समझते थे। जिन दिनों तीर्थराम कृष्णभक्तिकी तरङ्गोंमें बहे जाते थे, भगतजीने उन्हें बारम्बार ज्ञानमार्गपर लानेकी चेष्टा की। उनके जीवनका ध्येय गृहस्थ रहकर वेदान्तका व्यवहार करना ज्ञात होता है। उन्होंने स्वयं संन्यास नहीं ग्रहण किया। वह दबी जबानसे तीर्थरामको संन्याससे पृथक् रहनेका उपदेश करते थे, किन्तु जो आत्मा जगद्व्यापी प्रेमके प्रकाशसे परिपूर्ण हो रही हो उसे गृहस्थधर्मके संकुचित क्षेत्रमें रोक रखनेका प्रयत्न कैसे सफल होता?

स्वामी राम बड़े सरल प्रकृतिके मनुष्य थे। बहुत कम बोलते, लेकिन लेक्चर देते समय उन्हें इतना जोश आ जाता था कि दो तीन घंटेतक लगातार बोलते रहते थे। सोते बहुत कम थे, अधिकांश समय मनन और एकान्त अभ्यासमें लगाते थे। शारीरिक परिश्रममें उन्हें बहुत आनन्द मिलता था। बाल्यावस्थामें वह बहुत दुबले-पतले थे, लेकिन बादको नियमानुकूल कसरत करनेसे इतने सबल हो गये थे, कि ऊंचे पहाड़पर तेजीसे चढ़ जाते थे। पैदल चलनेका उन्हें व्यसन था। संन्यास ग्रहण करनेके बाद बहुधा गंगातटसे पत्थर उठा उठाकर फेंकते थे और पसीनेसे तर होकर

छोड़ते थे। उनका भोजन थोड़ा और सादा होता था। दूधसे उन्हें प्रेम था। मूंगकी दाल और रोटी भी खा लेते थे। मांस और मादक पदार्थोंसे घृणा थी। अमेरिका और जापानमें भी वह भाजी, शाक, मेवे और दूधका सेवन करते रहे। भोजनकी तरह वस्त्र भी बहुत सादे पहनते थे। गृहस्थावस्थामें जाड़ेमें पट्टूका गर्म कोट और धोती या मामूली पाजामा और गरमीमें मलमलका कुर्ता, उजला कोट और धोती पहनते थे। घरपर नंगे सिर ही रहते थे, बाहर जाते समय सफेद साफा बांध लिया करते थे। संन्यास धारण करनेके कुछ दिन पहले वह बढ़िया रेशमी कपड़े पहनने लगे थे। इसका अभिप्राय यह था कि संन्यासी हो जानेपर मन सुन्दर वस्त्रोंकी ओर न लपके। वैराग्यावस्थामें वह सामान्यतः एक सफेद या लाल रेशमी धोती पहनते थे, पांवमें खड़ाऊं होती थीं, नंगे पैर, पानी या दूध पीनेके लिये लकड़ीका कूंडा या नारियलका टुकड़ा साथ रखते थे।

स्वामीजीके निज-सम्बन्धियोंमें अब उनके दो भाई और दो पुत्र हैं। माता, पिता, पत्नीका देहान्त हो चुका है। दोनों भाई अपनी प्राचीन वृत्तिपर निर्वाह करते हैं। बड़े पुत्र गुसाईं मदनमोहनजी महाराज साहेब टेहरीकी सहायतासे विलायत गये थे और इस समय पटियालेमें इंजीनियर हैं। छोटे पुत्र ब्रह्मानन्द उन्हींके पास शिक्षा पा रहे हैं।

रामके जीवनका 'मिशन' क्या था? अद्वैतका प्रचार। संसारके प्राणीमात्रसे प्रेम करके उन्होंने ब्रह्मकी एकताका प्रत्यक्ष स्वरूप दिखा दिया। जिस प्रकार राजाके सिंहासनपर आते ही दरबारमें एक व्यवस्था स्थापित हो जाती है, उसी प्रकार मनुष्य ज्यों ही अपने ईश्वरत्वका ज्ञान प्राप्त कर लेता है, समस्त जातिमें कर्म और जीवनका संचार हो जाता है। मनुष्य स्वयं आनन्दका भंडार है। प्रेम—निष्काम प्रेम—ही उसे शरीरके बन्धनसे मुक्त कर सकता है।

अमेरिकासे लौटनेपर रामको विचार हुआ कि हिमालयके अन्तर्गत किसी स्थानपर वेदान्तका एक आश्रम खोला जाय। उसमें विशेषतः साधु-ब्रह्मचारी दाखिल किये जायं। यह लोग इस आश्रमसे निकलकर संसारमें वेदान्तका प्रचार करें। इस आश्रमके निवासियोंको खेती-बारीका काम सिखाना चाहते थे, जिससे आश्रमको दूसरोंसे धन मांगनेकी ज़रूरत न रहे। लेकिन स्वामी रामका यह संकल्प पूरा न हो सका। वह सन् १९०४ ई० में विदेशसे लौटे और सन् १९०७ में जलसमाधिस्थ हो गये। इन दो वर्षोंमें उनका समय अपने लेखों तथा व्याख्यानोंके संग्रह करनेमें व्यतीत हुआ।

सौभाग्यसे उनकी रचनाओंका संग्रह अंग्रेजीमें प्रकाशित हो गया है और देशकी अन्य भाषाओंमें भी उनका प्रचार दिनोदिन बढ़ रहा है। यही उनका वेदान्त आश्रम है। इनके द्वारा हम चिरकालतक उनकी अमृतवाणी सुनते रहेंगे। उनका प्रकाश चिरकालतक हमारे अन्तःकरणके अंधकारका नाश करता रहेगा।

इस पुस्तकमें उपासनाकी आवश्यकता, उसके प्रकार, परब्रह्ममें मनको लीन करना, उपासनाके बाधक और सहायक, सच्चे उपासकोंके लक्षण आदि बातें स्वामी रामतीर्थजी द्वारा लिखी गयी हैं। मूल्य।)

भक्तियोग

(लेखक—श्रीयुक्त अश्विनीकुमार दत्त)

यह ईश्वर-भक्तिके लिये हिन्दी साहित्यमें सर्वोत्तम ग्रन्थ है। मूल्य सजिल्द १॥)

भक्ति

(लेखक—श्री स्वामी विवेकानन्द)

स्वामीजीने अपने प्राच्य और पाश्चात्य ज्ञानसे इसे बड़े ही रोचक ढंगसे लिखा है। मूल्य ।=)

भक्ति रहस्य

(लेखक—श्री स्वामी विवेकानन्द)

इस पुस्तकमें स्वामीजीने बड़ी सरल रीतिसे भक्तिके रहस्यका उद्घाटन किया है। मूल्य ॥)

रामबादशाहके छः हुक्मनामे

स्वामी रामतीर्थ (१९०५)

वणिक् प्रेस, कलकत्ता।

ॐ

रामबादशाह

के

६ हुक्मनामे

नक़द धर्म

(यह लेक्चर स्वामीजीने ग़ाज़ीपुरमें दिया था)

सत्यमेव जयते नानृतम्

हमारे वेदमें लिखा है कि जय सत्यहीको होती है, झूठकी कभी नहीं। सांचको आंच नहीं। दरोग़१ को फ़रोग़२ नहीं। जहां कहीं दुनियांमें दौलत व इक़बाल है धर्म ही उसका असली सबब है। हिन्दू कहते हैं कि लक्ष्मी विष्णुकी स्त्री है और वह पतिव्रता है, जहां विष्णु-जी (यानी सत्य या रास्ती) होंगे वहीं लक्ष्मी होगी। इसको और किसी शख़्सका लिहाज नहीं। इक़बाल जिन्से-जुग़राफ़िया३ नहीं। यानी किसी मुक़ामपर महदूद४ नहीं। जो लोग यूरुप और अमेरिका वग़ैरःकी तरक्क़ीको वहांकी सर्द आबोहवासे मन्सूब५ करते हैं या जो बाज़ और मुल्कोंकी पस्ती६ को वहांके हुदूदे-अरबा७ से तअ-ल्लुक़ देते हैं ग़लती करते हैं। अभी दो हज़ार साल नहीं हुए इङ्ग-

१-झूठ २-रौनक़ ३-भूगोलसम्बन्धी जिन्स ४-घिरा हुआ ५-सम्बन्धित ६-निचाई ७-चौहद्दी।

लैण्डके बाशिन्दे१ रोम वग़ैरःमें बरदे२ और गुलाम बने बिकते थे, आज इङ्गलैण्ड इतने बड़े मुल्कोंका राज कर रहा है। क्या इङ्गलेण्ड अपने पुराने हुदूद-अरबासे भागकर कहीं आगे निकल गया है? पांच सौ साल पहले अमेरिका ज़मीनके उसी मौक़े पर था जहां आज, लेकिन इस अर्सेमें बाशिन्दोंकी हालतमें तफ़ावुत३ का अन्दाज़ा लगाइये। रोम, यूनान, मिश्र और हमारा हिन्द आज वहीं तो हैं जहां उन दिनों थे, जब तमाम दुनियांमें इनके इल्म व फ़ज़्ल४ की धाक थी। खुशहाली मुल्कों और इन्सानोंका लिहाज़ नहीं करती। जो लोग सत्यपर चलते हैं सिर्फ़ उन्हींकी जय होती है और जबतक सत्यधर्मपर चलते रहते हैं उनकी जय रहती है। प्यारे, मुआफ़ करना। राम आपका है और आप रामके हैं। तुम हमारे हो, हम तुम्हारे हैं। पूरे प्रेमके साथ सामने आओ। जो कुछ हम कहेंगे मुहब्बतसे कहेंगे। लेकिन खुशामद नहीं करेंगे। मुहब्बत इस बातकी मुक़्तज़ी५ है कि आदमी खुशामद न करे। राम जापानमें रहा, अमेरिकामें रहा, यूरुपके बाज़ मुल्क भी देखे, पर जहां फ़तह पायी रास्ती६ को पायी। अमेरिका जो तरक्क़ी कर रहा है धर्मपर चलनेसे कर रहा है। धर्मपर किसीका इजारा नहीं। हर जगह अमल७ में आ सकता है। धर्म दो क़िस्मका है, एक नक्द दूसरा उधार। यह एक मिसालसे वाज़ेह८ होगा। एक आदमीने कुछ माल ज़मीनमें दफ़न९ कर रक्खा था। उसके लड़केको मालूम हो गया। लड़केने ज़मीन खोदकर रुपया निकाल

१-रहनेवाले २-विक्रयार्थदास ३-फ़र्क़ ४-बुज़ुर्गी ५-तक़ाज़ा करने वाली, चाह रखती ६-सचाई ७-काम ८-ज़ाहिर ९-गाड़।

लिया और सर्फ़१ कर डाला, लेकिन तोलकर उतने ही वज़नके पत्थर वहां रख छोड़े। चन्द२ रोज़ बाद जब बापने ज़मीन खोदी और रुपया नदारद, तो रोने लगा, "हाय मेरी दौलत कहां गयी"! लड़केने कहा बाबाजान, रोते क्यों हो? आपको उसे बरतावमें तो लाना ही न था और रख छोड़नेके लिये देख लो उतने ही वज़नके पत्थर वहां मौजूद हैं।

बराये निहादन च संगो च जर ३

मज़हबी लड़ाइयां और रोने जो होते हैं वह नक़्द धर्मपर नहीं होते उधार धर्मपर होते हैं। नक़्द धर्म वह है जो बादअज़मर्ग४ से नहीं बल्कि मौजूदः ज़िन्दगीसे सरोकार रखता है। उधार धर्म एत-बारी५ होता है नक़्द धर्म यक़ीनी है। उधार धर्म कहनेके लिये, नक़्द धर्म करनेके लिये। वह हिस्सा धर्मका जो नक़्द है उसपर तमाम ही मज़ाहब७ का इत्तफ़ाक़८ है। सत्य बोलना, इल्म पढ़ना और उसपर अमल करना, ख़ुदग़र्ज़ीसे पाक होना, पराये मालको, पराई औरतको देखकर हराम-दिल न होना, दुनियांके लालच और धमकियोंके जा-दूमें आकर हक़ीक़त असली (ज़ाते मुतलक़) को न भूलना, मज़बूत दिल और मुस्तक़िल९ मिज़ाज होना वग़ैरः। इस नक़्द धर्मपर कहीं दो रायें नहीं हो सकतीं। उधारके दावे मुद्दई पेशा लोगोंको सौंप ख़ुद फ़र्ज़ मौजूदः (नक़्द धर्म) पर चलनेवाले उरूज१० और तरक़्क़ी-को पाते हैं। इस बातका अमली११ यक़ीन और मुल्कोंमें जानेसे

१-खर्च २-थोड़े ३-रखनेके लिये जैसा पत्थर वैसा सोना ४-मरनेके बाद ५-विश्वासपर निर्भर ६-प्रत्यक्ष ७-धर्मों ८-एक मत होना ९-पक्का १०-उन्नति ११-व्यावहारिक।

हुआ। हिन्दुस्तान और अमेरिकामें क्या फ़र्क़ है ? यहां दिन है तो वहां रात है। वहां दिन है तो यहां रात है। जिन दिनों हिन्दुस्ता-न का सितारा वाला१ था अमेरिकाको कोई जानता भी न था। आज अमेरिका उरूजपर है तो हिन्दुस्तानकी पूछ नहीं। हिन्दुस्तानमें बाज़ार वग़ैरःमें रास्ता चलते बायें रुख चलते हैं वहां दायें रुख (दाहिनी तर्फ़)। पूजा और ताज़ीम२ के वक़्त यहां जूता उतारते हैं वहां टोपी। यहां घरोंमें राज्य मर्दोंका है, वहां औरतोंका। इस मुल्कमें यह शिकायत है कि बेवा३ ही बेवा हैं, उस मुल्कमें क्वांरी ही क्वांरी औरतें ज़ियादह हैं। हम कहते हैं किताब मेज़पर है, वह कहते हैं "किताबपर मेज़ है" (The book on the table) हिन्दुस्तानमें गधा और उल्लू बेवकूफ़ीकी अलामत४ है उस मुल्कमें गधा और उल्लू नेकी और अक़्लमन्दीकी निशानी है। इस मुल्कमें जो किताब लिखी जाती है अगर निस्फ़५ के क़रीब पहले बुज़ुर्गों के हवालोंसे न भरी हो तो उसकी क़द्र नहीं। उस मुल्कमें किताबकी कुल बातें नयी न हों तो उसकी क़द्र नहीं। यहां कोई कारआमद बात मालूम हो जाय तो उसे छिपाकर रखते हैं वहां मतबामें६ छपा देते हैं। यहां मज़हब परस्ती बेअन्दाज़ है वहां नक़्द धर्म बहुत हैं। हमारे यहां इस बातमें बुज़ुर्गी है कि औरोंसे न मिलें अपने ही हाथसे पकाकर खाएं और सबसे अलग रहें, वहांपर जितना औरोंसे मिलें उतनी ही क़द्र है। यहांपर ग़ैर मुल्कोंकी ज़ुबान पढ़ना कुछ मायूब७ सा समझा जाता है। "न पठेद्यावनीं भाषाम्८।" वहां जिस क़द्र ग़ैर मुल्कोंकी ज़ुबान-

१-ऊंचा २-सत्कार ३-विधवा ४-निशानी ५-आधे ६-छापेखाने ७-दूषित ८-म्लेच्छोंकी भाषा न पढ़नी चाहिये।

से वाक़फ़ियत१ हासिल करो उतनी ही ज़ियादह इज़्ज़त होती है। जब राम जापानको जा रहा था तो जहाज़पर अमेरिकाका एक उम्र-रसीदा२ प्रोफ़ेसर दोस्त बन गया। वह रूसी ज़ुबान पढ़ रहा था। दर्याफ़्तसे मालूम हुआ कि ग्यारह ज़ुबानें पहले भी जानता है। उससे पूछा गया कि इस उम्रमें यह नयी ज़ुबान क्यों सीखते हो? जवाब दिया कि मैं जिआलोजी (इल्म तबक़ातुल अर्ज़३) का प्रोफेसर हूं। रूसी ज़ुबानमें जिआलोजीकी एक नादिर४ किताब लिखी गयी है। अगर इसका तर्जुमा कर सकूंगा तो मेरे अहलेमुल्क५ को फ़ायदा क़सीर६ पहुंचेगा, इसलिये रूसी ज़ुबान पढ़ता हूं। रामने कहा, अब तुम मौतके क़रीब हो, अब क्या पढ़ते हो? अब ख़ुदाकी ख़िदमत करो "डुकृञ्करणे" में क्या धरा है। जवाब दिया कि बन्दोंकी ख़िदमत ख़ुदाकी ख़िदमत है।

बन्दः हूं वा ख़ुदा मैं, बन्दे मेरे ख़ुदा हैं?

नीज़ अगर बफ़र्ज़े मुहाल यह काम करते दोज़ख़में७ जाऊं तो जाऊं कुछ परवा नहीं मुझे जहन्नम८ के दुःख मिलते हों तो हज़ार जानसे क़ुबूल हैं बशर्ते कि भाइयोंको सुखलाभ मिल जाय। इस ज़िन्दगीमें लज़्ज़त ख़िदमत गुज़ारीका हक़्क़ मैं मौतके उस पारके डरसे नहीं छोड़ सकता।

गुज़िश्ता९ ख़्वाबो आयन्दा ख़ियालस्त।
ग़नीमत दां हमीं दम रा कि हालस्त॥

१-जानकारी २-बड़ी उम्रका ३-भूतत्व विद्या ४-श्रेष्ठ ५-देशवासियों ६-बहुत ७-नरक ८-नरक ९-भूत तो स्वप्न है और भविष्य अनुमानमात्र है। वर्त्तमान ही ग़नीमत समझ।

यही नफ्द धर्म है। भगवद्गीतामें बड़ी खुश अस्लूबीसे[1] इरशाद[2] है कि—

> कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

यानी काम तो करते ही जाओ लेकिन फल (नतीजा) पर आंख मत रक्खो।

लार्ड मेकाले[3] की दुआ थी कि मैं मरूं तो कुतुबख़ाने[4] में मरूं। मरूं तो कूचए यारही[5] में मरूं।

> दफ़्न करना मुझको कुए[6] यारमें ।
> क़ब्र बुलबुलकी बने गुलज़ार[7] में ॥

मरें तो फ़र्ज़ अदा करते मरें, मुसल्लह[8] मरें, मैदाने कारज़ार[9] में मरें, हिम्मत आनन्द और उत्साहके साथ जान दें।

एक शख्स बाग़ लगाता था। किसीने पूछा बुड्ढे मियां! क्या करते हो? तुम क्या इसका फल खाओगे? एक पांव तो तुम्हारा गोया पहले ही क़ब्रमें है। क्या तुमको वह फ़क़ीरकी बात याद नहीं है?

> घर[10] बनाऊं ख़ाक इस वेहशतकदेमें नासिहा ।
> आये जब मज़दूर मुझको गोरकन याद आ गया ॥

बाग़बानने जवाब दिया, औरोंने बोया था हमने खाया, हम बोयेंगे और खायेंगे। इसी तरह दुनियांका काम पड़ा चलता है।

१-अच्छी तरह २-आज्ञा ३-एक विद्वान् अंग्रेज़का नाम है ४-पुस्तकालय ५-६-गली ७-फुलवाड़ी ८—हथियारबन्द ९—रणक्षेत्र १०-हे उपदेशक, इस दुनियांमें घर क्या ख़ाक बनाऊं जब मज़दूर आये तो मुझे क़ब्रखोदनेवाले याद आ गये।

जितने बुजुर्ग हो गये हैं ईसा, मुहम्मद वग़ैरः क्या इन हज़रातने उन दरख्तोंका फल खुद खाया था जो वह बो गये। हरगिज़ नहीं। इन बुज़ुर्गोंने तो फ़क़त अपने जिस्मोंको गोया खाद बना दिया, फल कहां खाये। जिन दरख्तोंका फल सदियों[१] से लोग आज खा रहे हैं वह उन ऋषियोंकी खाकसे पैदा हुए हैं। यही उसूल[२] मज़हबकी अस्ल जान है, यही उसूल इस प्रोफ़ेसरके अमलमें पाया गया जो रूसी जुबान पढ़ता था।

जिस वक़्त राम जापानसे अमेरिकाको जाता था, जहाजमें कोई डेढ़ सौ लड़के जापानी थे जिनमें बाज़[३] अमीरोंके घरानेके भी थे पर उनमें शायद ही कोई ऐसा होगा जो अपने घरसे रुपया ले चला हो। अक्सर तो ऐसे थे कि जहाज़का किराया भी उन्होंने घरसे अदा न किया था। कोई उनमेंसे अमीर मुसाफ़िरोंके बूट साफ़ करनेपर, कोई जहाज़की छतके तख्ते धोनेपर, बाज़ किसी ऐसे ही और रज़ील[४] कामपर नौकर हो गये थे और यों जहाजका खर्च अदा कर रहे थे। दरयाफ्त करनेसे इनका यह खियाल पाया गया कि अपनी क़ौमका रुपया ग़ैर मुल्कोंमें जाकर क्यों खर्च करें, जहाजका किराया भी मिहनतके ज़रीये अदा करते हैं। अमेरिकामें जाकर इनमेंसे बाज़ तालिबेइल्म तो अमीरोंके घरोंमें दिनभर मिहनत मजदूरी करते थे और रातको नाइट[५] स्कूलोंमें पढ़ते थे और बाज़ रेलकी सड़कपर या बाजारोंमें रोड़ी कूटनेपर या किसी और कामपर लग गये। यह लोग गर्मियोंमें मजदूरी करते थे और जाड़ोंमें कालेजकी तालीम पाते थे।

१—सैकड़ों वर्ष २—सिद्धान्त ३—कुछ ४—नीच ५—रातके।

पेये[१] इल्म च शमअ बायद गुदाख़्त ।

इसी तौरपर सात आठ साल बसर-औक़ात[२] करके अपने दिमाग़-को अमेरिकाके इल्मो हुनरसे और अपनी जेबोंको अमेरिकाके रुपये-से भरकर यह जापानी अपने मुल्कमें वापस आते हैं। हर जहाज़में बीसियों और कई दफ़ा सैकड़ों जापानी अमेरिका वग़ैरःको जाते रहते हैं। हज़ारों बल्कि लाखों जापानी हर साल जहाज़ोंमें जर्मनी व अमेरिकाको जाकर वहांसे इल्म लेकर आते हैं, इसका नतीजा आप देख ही रहे हैं। पचास साल हुए जापान हिन्दुस्तानसे भी पस्त[३] था, आज यूरुपसे भी बढ़ गया। तुम्हारा हाथ ख़ूब गोरा चिट्टा है और इसका ख़ून बिलकुल साफ़ है। अगर कलाईपर पट्टी बांध दोगे तो ख़ून हाथका हाथहीमें रहेगा बाक़ी जिस्ममें नहीं जायगा, लेकिन गन्दा हो जायगा और हाथ सूख जायगा। पस[४] जिन मुल्कोंने यह कहा कि हम ही ख़ूब हैं, हम ही अच्छे हैं, हम ही बड़े हैं, हम म्लेच्छों या क़ाफ़िरोंसे क्यों सरोकार रक्खें और अपने आपको अलग अलग कर लिया, उन्होंने अपने आपपर गोया पट्टी बांधकर अपनी तईं सुखा लिया। मसल मशहूर है "बहता पानी निरमला खड़ा सो गन्दा होय।"

आबेदर्या[५] बहे तो बहतर।

इन्सान[६] रवां[७] रहे तो बहतर ॥

अगर ग़ौरसे देखा जाय तो मालूम होगा कि जिन मुल्कोंने तरक़्क़ी की है, चलते ही रहनेसे की है, अमेरिकाके लोगोंकी कैफ़ियत इस

१-इल्मके लिये मोमबत्तीकी तरह घुलना चाहिए २-गुज़र ३-नीचा ..लिये ४-पानी ६-आदमी ७-चलता।

बारेमें देखिये—औसतन१ ४५००० अमेरिकन फ़ी रोज़ पेरिस रहते हैं, गुरोहों के२ गुरोह आते हैं और जाते हैं, कोई ज़रासी ईजाद३ व इख़्तिराअ४ फ्रांसमें देखी तो झट अपने मुल्कमें पहुंचा दी, पुराने फ़ुनून और हुनर सीखनेमें भी कोई फ़रोगुज़ाश्त५ नहीं करते। हर मौसममें कोई ८०००० अमेरिकन मिश्रमें आते हैं, मीनारों को देखते हैं, ४० फ़ी सदी अमेरिकन सारी दुनियां घूम चुके हैं। इस तरहसे यह लोग जहां इल्म होता है वहांसे लाकर अपने मुल्कमें पहुंचा देते हैं। जर्मनीवालों की भी यही कैफ़ियत है। अमेरिकासे आते वक़्त राम जर्मन जहाज़पर सवार था। क़रीबन् तीन सौ दर्जा-अव्वलके मुसाफिर होंगे। उनमें प्रोफेसर६ ड्यूक७ बेरन८ सौदागर लोग शामिल थे, दिनके वक़्त उमूमन९ जहाजकी बालातरीं१० छतपर जाकर राम बैठता था, तनहाईमें११ लिखता पढ़ता था या ध्यान-विचारमें लग जाता था, लेकिन जर्मन लोग जहाज़के ऊपरकी छतपर आकर रामको नीचे लाते थे और रामके लेक्चर१२ कराते थे। रामको ग़ैर मुल्कका समझ कर काफ़िर या म्लेच्छका सलूक तो न था। यह ख़ियाल था कि जितना भी इल्म इस ग़ैर मुल्कवालेसे मिल सकता है ले लें अज़लाअ मुत्तहिद:१३ अमेरिकामें सबसे पहला शहर जो रामने देखा वाशिंगटन है। वहाँ वाशिंगटन यूनिवर्सिटीने१४ रामको हिन्दू फ़िलासफ़ः१५ पर लेक्चर

१-पड़तेसे २-झुंडों ३-नई बात निकालना ४-आविष्कार, नई उपज ५-छोड़ना, कमी ६-अध्यापक ७-८-अमीरोंके ख़िताब ९-आम तौरपर १०-सबसे ऊंची ११-एकान्त १२-व्याख्यान १३-संयुक्तदेश १४-विश्व विद्यालय १५-दर्शन शास्त्र।

देनेके लिये मदऊ१ किया। लेक्चरके बाद एक जवान प्रोफेसरसे मुलाक़ात हुई जो अभी अभी जर्मनीसे वापिस आया था। रामने पूछा कि जर्मनी क्यों गये थे ? उसने कहा कि इल्मे-नबातात२ और इल्म३ कीमियामें अपनी यूनिवर्सिटीका वहांकी यूनिवर्सिटियोंसे मुक़ाबिला४ करने गया था और आम तौरपर इसका नतीजा यह सुनाया कि दस सालका अर्सा हुआ जर्मनी हमसे बढ़कर थी लेकिन आज हम उससे कम नहीं। पीर शो बियामोज़५ ! जांफ़िशानी६के साथ ग़ैरोंसे सीख सीखकर उन लोगोंने विद्याको पाया है और बढ़ाया है।

यह ख़ियाल सही नहीं कि अमेरिकाके लोग डालर (रुपया) के गुलाम हैं बल्कि विद्याके पीछे डालर ख़ुद आता है। जो लोग अमेरिकावालोंको यह इलज़ाम७ लगाते हैं कि उनका धर्म 'नक़द धर्म' नहीं, बल्कि 'नक़दी' धर्म है वो या तो अमेरिकाकी हक़ीक़ी८ हालतसे वाक़िफ़ नहीं या बिलकुल बेइन्साफ़ हैं और मिसदाक़९ इस मक़ूले१०के हैं "अभी कच्चे हैं कौन दांत खट्टे करे" केलीफोरनियां (California) में एक औरतने अठारह करोड़ रुपया देकर एक यूनिवर्सिटी क़ायम की। इसी तरह इल्मके बढ़ाने फैलानेके लिये हर साल करोड़ोंका दान दिया जाता है। हिन्दुस्तानकी ब्रह्म-विद्याकी वहां यह क़द्र है कि जैसा वेदान्त अमेरिकामें है वैसा अमली वेदान्त हिन्दुस्तानमें आजकल नहीं है, मगर गो उन लोगोंने हमारे वेदान्तको पचा लिया है और अपने जिस्म व जानमें दाखिल कर लिया है लेकिन हिन्दू नहीं बन गये। वैसे ही हम

१-निमन्त्रित २-वनस्पति ३-रसतन्त्र विद्या ४-मिलान ५-बुढ़ापेतक पढ़ते रहो ६-मिहनत ७-दोष ८-असली ९-अनुसार १०-कहावत ।

उनके उलूम१ व फुनून२को पचाकर भी अपनी क़ौमियत क़ायम रख सकते हैं। दरख़्त बाहरसे खाद लेता है लेकिन ख़ुद खाद नहीं हो जाता। बाहरकी मिट्टी पानी हवा रोशनीको खाता है और हज्म करता है लेकिन मिट्टी पानी हवा नही हो जाता। जापानियोंने अमेरिका और यूरोपके उलूम व फ़ुनून पचा लिये लेकिन जापानी बने रहे। देवताओंने अपने कच३को राक्षसोंके यहां भेजकर उनकी जांबख़्श४ विद्या सीख ली लेकिन इससे राक्षस नहीं हो गये। इसी तरह तुम यूरुप व अमेरिका जाकर उनके इल्म सीखनेसे ग़ैर हिन्दू या ग़ैर हिन्दुस्तानी नहीं हो सकते। जो लोग इल्मको जुग़राफ़ियेकी हदबन्दीमें डालते हैं कि "यह हमारा इल्म है, वह ग़ैर लोगोंका इल्म है, ग़ैर लोगोंका इल्म हमारे यहां आनेमें गुनाह होगा५, और हाय ! हमारा इल्म और लोग क्यों ले जायं"। इस ख़ियालवाले लोग अपने इल्मको जहालतेमुतलक़६में बदलते हैं। इस कमरेमें रोज़ रोशन है। यह रोशनी निहायत दिल-पसन्द और सुहावनी है, अगर हम कहें यह हमारी रोशनी है, हमारी है। हाय ! कहीं बाहरकी रोशनीसे मिलकर अपवित्र (नापाक) न हो जाय। और वहीं७ ख़ियाल अपनी रोशनीकी हिफ़ाज़त करते हुए हम चिकें गिरा दें, परदे डाल दें, दरवाज़े भेड़ दें, खिड़कियां लगा दें, रोशनदान बन्द कर दें तो रोशनी एकदम काफ़ूर८ हो जायगी, नहीं मुश्केह सियाह हो जायगी यानी अन्धेराही अन्धेरा फैल जायगा। हाय ! इस लोगोंने हिन्दुस्तानमें यह ग़लत पालिसी१० की चाल क्यों इख़्तियार की—

१-इलूमों २-हुनरों ३-बृहस्पतिपुत्र ४-संजीवनी ५-पाप ६-निरी नादानी ७-इस ख़ियालसे ८-भाग जायगी ९-कस्तूरी (अन्धेरी) १०(Policy) नीति।

हुब्बुल्वतन१अज़ मुल्के सुलेमां खुश्तर ।
खारे वतन अज़ संबुलो रहाँ खुश्तर ॥

कहकर खुद तो खार २ हो जाना और मुल्कको खारिस्तां३ कर देना हुब्बेवतन४ नहीं है। उमूमन एक ही क़िस्मके दरख्त जब इकट्ठे गुञ्जान झुण्डों में उगते हैं तो सब कमज़ोर होते हैं। इनमेंसे किसीको ज़रा अलग बो दो तो बहुत मज़बूत और तनावर५ हो जाता है। यही हाल क़ौमोंका है। कश्मीरकी बाबत कहते हैं—

अगर६ फ़िरदोस बर रूये ज़मीनस्त ।
हमीनस्तो हमीनस्तो हमीनस्त ॥

लेकिन वो कश्मीरी लोग जो अपने फ़िरदोस (Happy Valley) को छोड़ना गुनाह समझते हैं कमज़ोरी, नादारी और जहल७ में ज़रबुलमसल८ हो रहे हैं और वो बहादुर कश्मीरी पण्डित इस

१-यह शब्द हुब्बुल नहीं जुब्बुल है, प्रायः लोग हुब्बुल ही लिखते पढ़ते हैं। "हुब" के मानी हैं मुहब्बत और जुबका अर्थ है कुआं। भाव देशभक्ति है कि अपने देशका छोटासा कुआं भी सुलेमानके मुल्कसे अच्छा है। पात्रसे पात्रका मुक़ाबिला है हुबमें यह मजा नहीं। यह भाव भी उत्पन्न होता है कि दूसरी जगहका राज्य मिलनेसे अपने देशके कुएं में क़ैद रहना उत्तम है। यह शेर हजरत यूसुफसे सम्बन्ध रखता है वो कुएं में क़ैद किये गये थे। मिश्र देशमें उनको राज्य मिलता था परन्तु वो अपने देशमें भीक मांगना अच्छा समझते थे—इससे भी कुएंवाला शब्द 'जुब्बुल' ठीक मालूम होता है।

२-कांटा ३-कांटेका जङ्गल ४-मुहब्बते मुल्क ५-मोटा ६-अगर बैकुण्ठ जमीनपर है तो यही है यही है यही है। ७-नादानी ८-मशहूर।

पहाड़ी फ़िरदोससे बाहर निकले, गोया सचमुच फ़िरदोसमें आ गये। उन्होंने, जहां गये, बाक़ी हिन्दुस्तानियोंको हर बातमें मात कर दिया, उनमेंसे सब आला आला१ उह्दोंपर मुमताज़२ हैं। जबतक जापानी जापानमें बन्द रहे, कमज़ोर थे और पस्त थे, जब ग़ैर मुल्कोंमें जाने लगे, हवा लगी, मज़बूत हो गये। यूरुपके ग़रीब नादार और उमूमन अदना लोग जहाज़ोंपर सवार हो अमेरिका जा बसे। अब वो लोग दुनियांकी सबसे क़वी३ ताक़त हैं। चन्द हिन्दुस्तानी भी बाहर गये। जबतक अपने मुल्कमें थे कुछ पूछ न थी और मुल्कोंमें गये तो उन बढ़ो बढ़ी क़ौमोंमें भी दर्जा अव्वलमें शुमार हुए, नामवरी हासिल की।

पानी न बहे तो उसमें बू आय।
खञ्जर न चले तो मोरचा खाय॥
गादश४से बढ़ा क़मर५का पाया६।
गर्दिशसे फ़लक७ने औज८ पाया॥

जैसे दरख़्त सब रुकावटोंको काटकर अपनी जड़ें उधर भेज देता है जिधर पानी हो, इसी तरह अमेरिका, जर्मनी, जापान, इंगलैण्डके लोग समन्दरोंको चीरकर पहाड़ोंको फाटकर रुपया ख़र्च करके हर तरहकी तकलीफ़ें झेलकर वहां वहां पहुंचे जहांसे थोड़ा बहुत ख़्वाह किसी क़िस्मका भी इल्म मयस्सर हो सका। यह एक बाइस है उन मुल्कोंकी तरक़्क़ीका अब और सुनिये।

१—बड़े २-सुशोभित ३-बलवान ४-दौरा ५-चन्द्र ६-दर्जा ७-आसमान ८-ऊँचाई, बलन्दी।

जांनिसारी[1]

एक जापानी जहाजमें चन्द हिन्दुस्तानी लड़के सवार थे। जहाजमें जो इस दर्जेके मुसाफ़िरोंको खानेको मिला वह खास वजह-से उन्होंने नहीं लिया। एक ग़रीब जापानी लड़केने देखा कि ये हिन्दुस्तानी भूखे हैं, सबके लिये दूध फल वग़ैरह खरीदकर लाया और सामने रख दिया। हिन्दुस्तानियोंने पहले तो हस्ब दस्तूर इन्कार किया बादको खा लिया। जब जहाजसे उतरने लगे तो शुक्रिये[2] के साथ उन चीजोंकी क़ीमत देने लगे। जापानीने नहीं ली। लेकिन रोकर इल्तिजा[3] करने लगा कि जब हिन्दुस्तानमें जाओगे तो कहीं यह ख़ियाल न फैला देना कि जापानी लोग ऐसे नालायक़ हैं कि उनके जहाजोंपर अदना[4] दर्जेमें मुसाफ़िरोंके लिये खाने पीनेका ख़ातिर ख्वाह इन्तज़ाम नहीं है। ज़रा ख़ियाल कीजियेगा एक ग़रीब मुसाफिर लड़का जिसका जहाजके साथ कोई तअल्लुक़ नहीं वह अपने निजका पैसा क़ुर्बान[5] कर रहा है कि कहीं कोई उसके मुल्कके जहाजोंको भी बुरा न कह दे। यह लड़का अपने तईं अलहदा हस्ती[6] नहीं मानता। सारे मुल्ककी हस्तीको[7] अपनी हस्ती अमलन जान रहा है। क्या मुहब्बत है। क्या जांनिसारी है। यह है अमली वहदत[8]। नक़्द धर्म! इस अमली तौहीद[9] के बग़ैर कोई सूरत फ़लाह[10] व बहबूदीकी नहीं है।

1—न्योछावर होना, आत्मत्याग। 2-धन्यवाद 3-प्रार्थना 4-छोटे 5-भेंट 6-जीवन, व्यक्ति 7-अस्तित्व 8— एकता 9-वेदान्त 10-भलाई।

मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये।
जीता है वह जो मरता है निज देशके लिये॥

आपको याद होगा कि जापानमें जब ज़रूरत पड़ी कि रूसियों-की ताख़्त१ को रोकनेके लिये कुछ जहाज़ समन्दरमें ग़र्क़२ किये जायं—मिकाडो३ ने कहा कि मैं रैयतमें किसीको मजबूर४ नहीं करता, लेकिन जिसको ऐसे जहाजांके साथ ग़र्क़ होना मंजूर है ख़ुदको वालं-टियर५ (Volunteer) करें और अर्जियां पेश करें। हज़ारों अर्जियां ज़रूरतसे ज़ियादह एकदम आ गयीं। अब इनमें इन्तख़ाव६ की ज़रा दिक्कत थी। तिसपर जापानी जवानोंने बदनोंसे ख़ून निकाल, ख़ून-की लिखी हुई दरख़्वास्तें हाज़िर कीं कि जल्दी मंजूर हों। आख़िर ख़ूनकी अर्जियोंको तरजीह७ दी गयी। जब जहाजोंके साथ यह लोग ग़रक़ाव हो रहे थे तो इनमें दो एक कप्तान अगर चाहते तो अपनी जान बचा भी सकते थे। किसीने कहा, कप्तान साहब! आप काम तो कर चुके अब जान बचाकर जापान चले जाइये। तो मौतकी हँसी उड़ाते हुए कप्तान साहबने हिक़ारत८ से जवाब दिया, क्या मैंने वापिस जानेके लिये यहां आनेकी अर्ज़ी दी थी।

यद्गत्वा९ न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।
मरदानीका दर्जा वह नहीं है कि वापिस लौट जायं

१-फ़ौजका हमला २-डुबाये जावें ३-जापानके बादशाहका नाम ४-बाध्य ५-अपनी मरज़ीसे भरती हों (स्वयं सेवक) ६-चुनने ७-अधिक मान ८-तिरस्कार ९-जहांसे जाकर फिर कोई नहीं लौटता वह मेरा परमधाम है (भगवद्गीता)।

ईजा१ जुज़ी कि जां विसुपारन्द चारा नेस्त ॥
शेर२ सीधा तैरता है वक़्ते रफ़्तन् आब में ।

यह है नक़्दधर्म असली वेदान्त—

नैनं छिन्दन्ति३ शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
मुझको काटे, कहां है वह तलवार ।
दाग़ दे मुझको, है कहां वह नार४ ॥
ग़र्क़ मुझको करे कहां पानी ।
बाद५में ताब कब सुखानेकी ॥
मौतको मौत आ न जायेगी ।
क़स्द मेरा जो करके आयेगी ॥

इल्मी तहक़ीक़ातके लिये ज़िन्दा इन्सानकी जराहत६ की ज़रूरत पड़ी । अमेरिकामें नौजवान अपनी छातियां खोलकर खड़े हो गये कि लो चीरो, हमें काटो, इंच इंच करके हमारी जान जाय, हमारी वीवीसेक्शन७ (जराहते ज़िन्दा) हज़ार बार मुबारक८ है, अगर इससे इल्मकी तरक्क़ी हो और दूसरोंका भला हो । अब इसे हम प्रेम कहें कि बहादुरी ? यह है नक़्द धर्म अमली तौहीद ।

अज़लाय मुत्तहिदा९ के प्रेसीडेण्ट१० एब्राहम लिंकनका तज़किरा

१-यहां सिवाय जान देनेके कोई तदबीर नहीं है २-शेर बहावकी परवा न करके पानीमें सीधा तैरता है । ३-न हथियार उसको छेद सकते हैं न अग्नि उसको जला सकती है ४-आग ५ हवा ६-जख्म लगाने ७-(Vivisection) जिन्दःको जख्म लगाना इल्मी तहकीकातके लिये ८-शुभ है ९-संयुक्त देश १०-सभापति ।

है कि एक मर्तबा अपने मकानसे दरबारको आ रहा था। रास्तेमें क्या देखता है कि एक सूअर दलदलमें फंसा हुआ नीम१जां हो रहा है, बहुत ही ज़ोर कर रहा है; लेकिन निकल नहीं सकता, दर्दसे कराह रहा है। प्रेसीडेण्टसे देखा न गया, सवारीसे उतरकर सूअरको बाहर निकाला और उसकी जान बचाई। तमाम लिबास२ पर कीचड़के छींटे पड़ गये, लेकिन परवा न की और उसी हालतमें दरबारमें आये। लोगोंने पूछा। जब क़िस्सा मालूम हुआ तो सबने बड़ी तारीफ़ करते हुए कहा कि आप बड़े खुदातर्स३ और रहमदिल४ हैं। प्रेसीडेण्टने कहा कि बस, बस, ज़्यादह मत बोलो, मैंने रहम वहम कुछ नहीं किया, मर्ज़ मुतअद्दी५ की तरह इस सूअरके दर्दने मुझमें अपना असर पैदा किया, बस, मैं तो फ़क़त अपना दर्द दूर करनेके लिये सूअरको निकालने गया था। वाह! कैसी मुहब्बत आलमगीर६ है! कैसी वहदते हमदर्दी है!

खू रगे मजनूसे निकला फ़स्द लैलीकी जो ली।

क्या तौहीद अमली है!

पत्तीको फूलकी लगा सदमा नसीम७ का।

शबनम८ के कतरे आंखसे उनकी टपक पड़े॥

ज़िन्दा मज़हब (नक़्दधर्म) की रूह यह है कि तुम सारे मुल्कके वजूद (आत्मा) को अपना खुद (आत्मा) देखो। यह मज़हबकी जान जिन मुल्कोंमें अमलन है वह तरक़्क़ी कर रहे हैं। जिन क़ौमोंमें

१-आधी २-पोशाक ३-परमेश्वरसे डरनेवाले ४-दयालु ५-दूसरेपर असर करनेवाला रोग ६-विश्वव्यापी ७-सर्द हवा ८-ओस।

यह नहीं, वह गिर रहे हैं। अपने मुल्ककी बाबत अब एक बात बड़े दर्दसे कहनी पड़ेगी। इन दिनों हांकांगमें१ सिक्खोंकी फ़ौज है, उसके पहले पठानोंकी फ़ौज थी। हांकांगमें सिक्खोंको शायद एक पौण्ड२ फ़ीकस३ मुशाहरा४ मिलता है और आम फ़ौजी सिपाहीको इससे भी कम, शायद दस रुपया (दो तिहाई पौण्ड) माहवार मुशाहरा मिलता है। हांकांगमें पठानोंको गोरोंके बराबर फ़ीकस तीन तीन पौंड (हमें ठीक याद नहीं) मिलता था। जङ्ग चीनके मौक़े पर जब सिक्ख लोग वहां गये तो पठानोंकी यह सेहचन्द५से भी ज़्याद: तनख़्वाह इन्हें नागवार गुज़री। ब्रिटिश६ पार्लीमेंट७ के यहां अर्ज़ियां पेश कीं कि पठानोंको जो तीन तीन पौण्ड मिलता है क्यों नहीं हमें आजकलके दो तिहाई पौण्डके बजाय एक पूरा पौण्ड माहवारी दिया जाता और हमें उनकी जगह भरती कर लिया जाता ? इन दरख़्वास्तोंके ख़ानगी८ और बेरूनी९ गवर्नमेंटके यहां फिरने घूमनेके बाद पठानोंसे पूछा गया कि क्या तुम लोगोंको बजाय तीन पौण्डके एक पौंड मुशाहरा लेना मंजूर है ? एक पठानने भी क़ुबूल न किया। पस, कुलकी कुल फ़ौज पठानोंकी मौक़ूफ़ की गई। सब पठान बेरोज़गार हो गये। भोले सिक्खोंने इतना न देखा कि आख़िर यह पठान भी हमारे ही मुल्कके हैं, दर्द न आया कि इनका रिज़्क़१० मारा गया, रहम न आया कि भाइयोंका गला कट गया। हाय रश्क११ और मुल्की फूट ! यह

१- (Hong cong) चीनके दक्खिनमें है। २-पौंड (१५) रुपयेका होता था ३-हर आदमीको ४-वेतन, तनख़्वाह ५-तिगुनी ६-अंग्रेजोंकी ७-बड़ी सभाका नाम ८-स्वदेशीय ९-विदेशीय १०-रोजी ११-ईर्षा।

भूखों मरते पठान तलाशे रोज़गारमें अफ्रिकाको गये और सुमालीलैण्डके मुल्लाके साथ होकर इन्हीं सिक्खों से लड़े। इस लड़ाईमें वग़ैर लड़े आबोहवाकी सख़्ती वग़ैरःहीसे सिक्खों का वह हाल हुआ कि इलाहीतोबः१, लक़्वेर हो गये, गर्दनें मुड़ गईं, बदन सूख गये, तप वग़ैरःने निढाल३ कर दिया। सच कहा है, जो औरों की मौतकी तदबीर करता है वह अपनी ही तदबीर४ से मरता है।

करदनी५ ख़ेश आमदनी पेश।

चाहकनरा६ चाह दरपेश॥

जो आदमी खन्दक़ खोदता है वह ख़ुद गिरेगा।

*जापानमें एक हिन्दुस्तानी लड़का तालीम पाता था। इल्म जर्रे-*सक़ीलको७ एक क़िताब लायब्रेरी८ से आरियतन९ ले गया। बाकी इबारत या उसके मतलबको तो कापीपर उतारा लेकिन मशीनों (कलों) के नक़शों या तस्वीरों की नक़्ल न कर सका। अब यह न सोचा कि और लोग भी इस क़िताबसे फ़ायदा उठानेवाले हैं। यह न ख़्याल किया कि इस हरकत१०से मेरा मुल्क बदनाम होगा। झट क़िताबसे वह औराक़११ जिनपर तसवीरें थीं फाड़ लिये और क़िताब वापिस कर दी। क़िताब ज़ख़ीम१२ थी, भेद न खुला, लेकिन छुपे कैसे? सच भी कभी छुपता है? एक रोज़ एक जापानी तालिबेइल्म१३ उसके कमरेमें आया। मेज़पर वो फटे हुए औराक़ पड़े थे। देखकर

१-ईश्वर रक्षा करे २-एक रोग ३-अचेत ४-उपायों ५-अपनी करनी आगे आती है ६-कुवां खोदनेवालेके आगे कुवां ७-आकर्षणशक्ति ८-पुस्तकालय ९-मांगकर १०-कर्म ११-वरकका बहुवचन १२-मोटी १३ विद्यार्थी।

उसने अफ़सरको इत्तिलाअ कर दी और वहां क़ानून हो गया कि अब किसी हिन्दुस्तानी लड़केको कोई किताब न दी जाय। डूब मरनेका मुक़ाम है! एक तो आपने उस जापानी लड़केकी बात सुनी जो जहाज़पर हिन्दुस्तानी लोगोंके लिये खाना लाया था और एक इस हिन्दुस्तानीकी कैफ़ियत देखी। जापानी अपने निजका सब कुछ दे देनेको हाज़िर है कि मुल्कपर धब्बा न आ जाय और हिन्दुस्तानी निजका भला चाहता है, सारा मुल्क पड़ा बदनाम हो। हाथ यह नहीं कह सकता कि मैं अकेला या अलहदा हूं, मेरा खून और है और सारे जिस्मका खून और है। इस ग़ैरबीनी (भेदभाव) से यह ख़याल पैदा होगा कि हाय! कमाऊं तो मैं और पले सारा जिस्म। इस ख़ुदग़रज़ीको पूरा करनेकी सिर्फ़ एक ही सूरत हो सकेगी, वह यह कि जो रोटी कमाई है बजाय सारे जिस्मके लिये मुंहमें डालनेके, उसे अपनी हथेलीपर बांध ले या नाख़ूनोंमें घुसेड़ ले। पर क्या यह ख़ुदग़रज़ीकी पालिसी कारआमद[१] होगी? अलबत्ता एक सूरत और भी है कि सहदकी मक्खी या भीड़से हाथ अपनी उंगलियां डसवा ले, इस तरह सारे जिस्मको छोड़कर ख़ुद अकेला हाथ बहुत मोटा हो जायगा, लेकिन यह फ़रबही[२] तो सूजन है, बीमारी है। इसी तरह जो लोग क़ौमका भला अपना भला नहीं समझते, अपने ख़ुद (आत्मा) को क़ौमके ख़ुद (आत्मा) से जुदा मानते हैं ऐसे ख़ुदग़रज़ोंको सिवा सूजन बीमारीके और कुछ हाथ नहीं आता। हाथ वही ताक़तवर और मज़बूत होगा जो कान, नाक, आंख, पैर वग़ैरः सारे जिस्मकी

१-कामके लायक २-मोटापन।

आत्माको अपनी आत्मा मानकर अमल करता है और आदमी वही फले फूलेगा जो सारी क़ौमकी जानको अपनी जान मान लेगा।

अमेरिकामें पहला तयज्जुब१ का माजरा यह देखा गया कि एक जगह ख़ाविन्द तो प्रोटिस्टेन्ट२ था और औरत रोमन केथोलिक३। दिलमें यह खियाल आया कि इस किस्मके इख़्तिलाफ़े४ मज़हबवाले लोग हमारे हिन्दमें (मिस्ल आर्य्यसमाजी और सनातन धर्मी) तो एक मुहल्लेमें मुश्किलसे काटते हैं, इन मियां-बीबीकी एक घरमें कैसे गुज़र होती होगी? दर्याफ़्तसे मालूम हुआ कि बड़े प्यारसे रहते सहते हैं। इतवारके रोज ख़ाविन्द पहले औरतको उसके रोमन केथोलिक गिरजामें साथ जाकर छोड़ आता है, ज़ांबाद५ ख़ुद अपने दूसरे गिरजामें जाता है। ख़ाविन्दसे बातचीत हुई तो यह कहने लगा कि जी! मेरी बीबीके मज़हबका सवाल तो इसके और ख़ुदाके दरमियान है। मैं कौन हूं दख़लदरमाक़ूलात६ देनेवाला। मेरे साथ इसका हिसाब बिलकुल पाक है, ख़ुदाके साथ अपने सौदेकी वह जाने क्या ख़ूब!

अमेरिकामें इत्तहाद७ मुल्कीके सामने इख़्तिलाफ़ मज़हबीकी कुछ हक़ीक़त नहीं। हिन्दुस्तानका आर्य समाजी हो, सिक्ख हो, मुसलमान हो, ईसाई हो, अमेरिकामें हिन्दू ही कहलाता है। उनके दिलोंमें मुल्की वहदत८ इस क़दर समा रही है कि वह हमारे यहांके इतने भारी मज़हबी तफ़रक़ों९ को नज़र अन्दाज़ करते ज़रा देर नहीं लगाते।

१-आश्चर्य २-३-मतोंका नाम है ४-विरुद्ध ५-उसके बाद ६-हर बातमें दख़ल देना ७-मेल ८-ऐक्य ९-जुदाई।

हिन्दुस्तानके बाज़ फ़िक़ोंके लोग अगर यह जानते कि अंजामकार और मुहज़्ज़ब[1] मुल्कोंमें हमको हिन्दू ही कहलाना है तो लफ़्ज़ 'हिन्दू' पर इतने झगड़े न करते और इस नामसे इस क़दर आर[2] न मानते।

एक बाइस उस मुल्कके ज़बरदस्त होनेका यह भी है कि वहां ब्रह्मचर्य है। ताक़तका इन्सानोंको ज़ाइल[3] नहीं होने देते। उमूमन २० वर्षतक तो लड़के लड़कीको ख़ियाल भी नहीं आता कि ब्याह क्या चीज़ है? इसका एक सबब बग़ौर देखनेसे यह मालूम हुआ कि लड़के-लड़कियां बचपनसे इकट्ठे खेलते-कूदते, एक छतके नीचे लिखते-पढ़ते और साथ साथ रहते सहते हैं और फिर पहलू बपहलू कालिजोंमें तालीम पाते हैं। बदींवजह आपसमें भाई-बहिनकासा रिस्ता बना रहता है और दिल इफ़्फ़त[4] और पाकीज़गी[5] से भरे रहते हैं। वहां लड़कियां बलिहाज़ जिस्म लड़कोंके बराबर मज़बूत होती हैं, इसलिये उनकी औलाद भी ताक़तवर होती है। मर्द गर मज़बूत है और औरत कमज़ोर तो इसका असर निस्फ़ानिस्फ़[6] औलादपर होगा। एक मर्तबा झील लेकजिनिवा[7] के किनारे राम रहता था। एक तेरह सालकी लड़की तैरते तैरते तीन मीलतक चली गई। किश्ती पीछे पीछे थी, मबादा[8] डूबने लगे तो मदद की जावे, मगर कहीं मददकी ज़रूरत न पड़ी। जब लड़कियोंका यह हाल है तो बाइसमें उनकी औलाद क्यों क़वी[9] न होगी और जब बदनमें सेहत है तो दिलमें क्यों सेहत (पाकीज़गी) न होगी? और इनके ब्रह्मचर्यकी यह भी एक वजह

१-सभ्य २-शर्म ३-नष्ट ४-परहेज़गारी ५-पवित्रता ६-आधों आध ७-एक झीलका नाम ८-खुदा न करे, ऐसा न हो ९-बलवान।

है। कमज़ोरीसे पाप होता है। बदहज़मीसे नापाकी होती है। मेदा सेहतमें न हो तो ख्वाहमख्वाह चिन्ता और फ़िक्र दामनगीर होती हैं। जब सेहत दुरुस्त नहीं है तो बात बातमें क्रोध आता है। वेदमें लिखा है कि कमज़ोर इस आत्माको नहीं जान सकता। "नायमात्मा बल-हीनेन लभ्यः"। कमज़ोरकी दाल ईश्वरके घरमें भी नहीं गलती। जिसके अन्दर रूहानी और जिस्मानी बल नहीं है वह ब्रह्मचर्यको कब क़ायम रख सकता है? और यह भी ज़ाहिर है कि ब्रह्मचर्यसे आरी१ जिस्मानी और रूहानी ताक़तसे आरी हो जाता है।

वहां कालिजोंमें क्या कैफ़ियत है। बी० ए०, एम०, ए० और डाक्टर आफ़ फ़िलासफ़ीकी डिगरीतक जिस्मानी तालीम साथ साथ दी जाती है। जङ्गी तालीम, ज़राअत२ और लोहार, बढ़ई मेमार३ का काम बराबर सिखलाया जाता है। आदमीके अन्दर तीन बड़े मुहकमे हैं, एक कर्म-इन्द्रिय, दूसरा ज्ञान-इन्द्रिय और तीसरा अन्तःकरण। इनको अंग्रेज़ीमें "ह" वाले४ तीन लफ्ज़ोंसे ताबीर५ कर सकते हैं। हैंड, हेड और हार्ट। ज्ञान-इन्द्रियों (हवासे खम्सः) से बाहरका इल्म अन्दर जाता है और बाहरकी अशियाई६ अन्दर असर करती हैं। कर्म-इन्द्रियों (मिस्ल हाथ पैर) से अन्दरकी ताक़त बाहर असर करती है। कर्म-इन्द्रियां और ज्ञान-इन्द्रियां अगर तना-सुब७ नश्वनमा८ और तरक्क़ी पावें तो बिहतर है। अगर बाहरके इल्मको ठूंसते जावें और अन्दरके इल्म व ताक़तको बाहर न निका-

---

१-रहित २-खेती ३-राजगीरी ४-हकार ५ बयान ६-चीजें ७-मुनासिब तौरपर ८ उगना।

लते रहें तो हालत वैसी ही हो जाती है कि आदमी खाता तो रहे लेकिन उसके बदनसे कुछ इख़राज़१ न हो सके। इसका नतीजा होगा अक़्ली बदहज़मी और रूहानी क़ब्ज़। यह तालीम नहीं है, बीमारी है। अमेरिकामें उमूमन यूनीवर्सिटीकी तालीमका यह मक़सद और ग़रज़ है कि मुल्ककी चीजें काममें लायी जावें यानी ज़मीन, मअदनियात२ नबातात३ और अजनास४ वग़ैरःका इस्तेमाल और ज़्यादह कीमती बनाना मालूम हो जावे। जितने फ़ुनून सिखलाये जाते हैं बराहे रास्त कारआमद और मुफ़ीद मतलब। कोई लड़का बेफ़ायदा केमिस्ट्री५ नहीं पढ़ेगा अगर वह इल्म कीमियाको इस्तेमालमें लानेका हुनर मिस्ल केमिकल इञ्जीनियरिंग वग़ैरः भी साथ न सीखता हो।

एक मज़हबी कालेजमें रामका लेक्चर हुआ। लेक्चरके बाद कालेजके लोगोंने अपनी जङ्गी क़वायद दिखलायी और कालेजके जंगी नारों६ वग़ैरःसे लेक्चरर७ की सलामी की। रामने पूछा, यह क्या? मज़हबी तो कालेज और जंगी तालीम? प्रिन्सपल साहबने जवाब दिया, मज़हबके मानी हैं जिस्म व जिस्मानियतको ईसाकी तरह सलीब८ पर चढ़ा देना, ख़ुदाको मिटा देना, जानको मुल्ककी ख़ातिर हथेलीपर उठाये फिरना। और यह जांनिसारी और सच्ची बहादुरीकी रूह जंगी तालीमसे आती है। अब नर्मदिली और सफ़ाक़ल्बी९ की तालीमकी कैफ़ियत देखिये।

एक यूनीवर्सिटीमें राम गया जो तालिबेइल्मों और उस्तादोंकी

१-बाहर निकलना २-खानकी चीजें ३-बनस्पति ४-जिन्सों ५-रसायन विद्या ६-ललकारों ७-व्याख्यान ८-शूली ९-शुद्ध हृदय।

कमाईसे चल रही थी। तालिबेइल्म वहां फ़ीस वग़ैरः कुछ नहीं देते। अलावा और तालीमके प्रोफ़ेसरोंके ज़ेरे इहतमाम१ कालिजकी ज़मी-नपर या मशीनों (कलों) पर काम करते हैं, प्रोफ़ेसर ईजाद२ व इख़तराअ३ करते हैं और करना सिखाते हैं। ज़मीनके अनोखे ढंगकी और निराली पैदावार और नई कारीगरीकी आमदनीसे सब इख़राजा-त४ अदा होते हैं। रामकी मौजूदगामें एक कमरेमें तालिबेइल्मोंकी आपसमें तकरार हो पड़ी। प्रेसीडेण्ट५ के पास मुक़द्दमा गया। प्रेसी डेण्टने इस कमरेमें सब काम बन्द करा दिया और प्यानो बाजा बजाना शुरू करा दिया। १५ मिनटमें मुक़द्दमा फ़ैसल हो गया। यानी ख़ुदबख़ुद सुलह हो गयी। वाह। जिनके अन्दर शान्तिरस भरा है बाहरकी मूसीक़ी६ इनके अन्दरकी सुलह और अम्नको उकसानेके लिये काफ़ी बहाना हो जाती है। और कैसा इन्तज़ाम है, हवामें सतोगुण भर दिया, दिलोंकी खटपट आप ही रफ़ा हो गयी।

शिकागो यूनीवर्सिटीके एक अन्डर ग्रेजुएट७ ने रामके चन्द (फ़िलासफ़ीपर) लेक्चरोंके नोट लिए और थोड़े दिनोंमें अपनी तरफ़-से इफ़रात८ और तफ़रीत९ के बाद उनकी एक किताब बनाकर यूनी-वर्सिटीमें पेश की। इस तालिबेइल्मको एक जमाअत१० की तरक़्क़ी फ़िलफ़ौर११ दी गयी। यह नहीं देखा कि आया इसने मिल और हेमि-ल्टनकी किताबोंसे अपने दिमाग़को लेटरबेग१२ बनाया है कि नहीं।

१-प्रबन्धमें २-३ नई नई चीजोंको निकालना ४-खर्च ५-सभापति। ६-गान ७-बी० ए० से नीचे दर्जेवाला ८-बढ़ाने ९-घटाने १०-श्रेणी ११-तुरन्त १२-लिफाफोंका थैला।

बेशक असली तालीमका मियार१ यह है कि हम अन्दरसे किस क़दर इल्म बाहर निकाल सकते हैं, यह नहीं कि बाहरसे अन्दर किस क़दर डाल चुके हैं।

राम एक दफ़ा वहां कोहिस्तान शास्ताके जङ्गलोंमें रहता था। कुछ आदमी मिलने आये, उनके साथ एक बारह वर्षकी लड़की भी थी। सब रामके उपदेशको बग़ौर सुनते रहे, लेकिन थोड़ी देरके लिये लड़की अलग जाकर बैठ गई, जब वापिस आयी तो एक कागज पेश किया। यह क्या था? रामका कुल उपदेश जिसे वह अंग्रेज़ी नज़्ममें पिरो लायी। बादमें यह पोइट्री२ वहांके अख़बारोंमें छप भी गई। बच्चोंकी यह ज़हानत३ और लियाक़त उनको आज़ाद रखनेका नतीजा है। इन्सान ख़्वाह बच्चा हो ख़्वाह बुज़ुर्ग, हैवाने नातिक़४ कहलाता है। इन दो अजज़ा५ में नुत्क़६ तो सवार है और हैवानियत गोया सवारीका घोड़ा। जब हम बच्चोंके नुत्क़को प्रेमसे समझाकर उनसे काम नहीं लेते बल्कि जब्र७ व तौबीख़८ झिड़की मलामतसे उनपर हुकूमत करते हैं तो यह गोया हैवानियतके घोड़ेको लाठीके ज़ोर सवार (नुत्क़) की रानों तलेसे निकाल ले जाना है, ऐसी हालतमें बच्चेके अन्दरवालेको ग़ुस्सा क्यों न आय। बच्चोंको डांटना सिर्फ़ हैवानियतसे काम लेना है और उनमें उस जुज़की हतक करना है जिसकी बदौलत इन्सान अशरफ़९ कहलाता है। जब्र१० या मलामत करना उनके अन्दर बैठे बुज़ुर्गकी तौहीन११ है। बिला समझाये या

१ कसौटी २- छन्द ३ तीव्रबुद्धि ४ बातचीत करनेवाला जानवर ५ हिस्सा ६ वाक्य शक्ति ७-घुड़की ८ झिड़की ९ श्रेष्ठ १० सख़्ती ११ प्रतिष्ठाभंग।

वजह बतलाये बच्चे पर हुक्मोनिही* नाफ़िज़१ करना कि ऐसा मत करो, वैसा मत करो, उसे वह काम करनेकी तहरीक२ बिलवास्ता करना है। जिस वक्त खुदाने हज़रत आदमसे फ़रमाया कि फुलां दरख़्तका फल मत खाना तो उसी रोकके बाइस हज़रत आदमके दिलमें यह खयाले बद पैदा हुआ। उस बाग़े-जन्नतमें हज़ारों दरख़्त थे लेकिन जब क़ैद लगायी गई कि यह न खाना तो ख़्वाहमख़्वाह उसके खानेकी ख़्वाहिश हुई। बहुत ही ज़रूरी इश्तहारोंका अख़बारोंमें यह उनवान३ होता है "इसको मत पढ़ना"! किसी शख़्सने एक फ़क़ीर-से मन्त्र चाहा। महात्माने मन्त्र बतलाकर कहा कि तीन माला जपने-से मन्त्र सिद्ध हो जायगा, मगर शर्त यह है कि खबरदार, माला जपते कहीं बन्दरका ख़ियाल न आने पाये। थोड़े तजरुबेके बाद वह बिचारा फ़क़ीरसे आकर कहने लगा, पीरो मुरशद! बन्दर मेरे तो कहीं ख़्वाबमें भी न था लेकिन आपके खबरदार करनेसे अब तो बूज़ना४ मुझे छोड़ता ही नहीं। यह असरे मअकूस५ वाली उस्तादी-का ढङ्ग अमेरिकामें नहीं। बच्चोंकी तालीम वहां किंडर गार्टन६ (गुलिस्ताने नौनिहाल७) के तरीक़पर होती है। उस्ताद बच्चोंके साथ खेलते कूदते, गाते नाचते पढ़ाते चले जाते हैं और बच्चे दिल्लगीके तौरपर कमाल हासिल करते हैं। मसलन् लड़कोंको जहाजका सबक़ देना है। एक एक लकड़ीका जहाज बना हुआ हर लड़केकी कुरसी-के आगे रक्खा हुआ है और बांसकी फांकें वग़ैरः पास धरी हैं जिनसे

* विधि और निषेध। १ जारी करना २ सूचना, प्रस्ताव ३ हेडिङ्ग, शीर्षक ४ बन्दर ५ उलटा ६-७ नये खूबसूरत पेड़ोंके बाग़।

नया जहाज बन सके। बच्चोंके साथ मिले हुए उस्ताद या उस्तानियां कहते हैं, "हम तो जहाज बनायेंगे, हम तो जहाज बनायेंगे"। बच्चे भी देखा-देखी कहने लगते हैं, "हम भी जहाज बनायेंगे"। ए लो सब बैठ गये। एक लड़केने जहाज बना दिया, दूसरा भी कामयाब हो गया, फिर तीसरेने बना लिया। जिसको ज़रा देर लगी और बच्चोंने या उस्तानीने मदद दे दी। फिर बच्चोंने बड़े शौक़से उस्तानीसे खुद सवाल करने शुरू किये, "इस हिस्सेका क्या नाम है? वह हिस्सा क्या कहलाता है? यह क्या है? वह क्या है?" उस्तानी मस्तूल वग़ैरः सबका नाम बतलाती जाती है और बच्चे जहाजके मुतअल्लिक़ सब बातें गोया खुद ही सीख गये। हमारे यहां लड़के पढ़ते हैं "कील (keel) कील मानी जहाजकी पेंदी"। सरमें कील ठुक गयी मगर लड़केको खबर भी न हुई कि कील क्या चीज़ है और जहाज कैसा होता है? वहां शय (पदार्थ) से वाक़फ़ियत१ पहले करायी जाती है, नाम (पद) पीछे बतलाया जाता है। यहां (पद) नाम पहले याद कराते हैं, पदार्थ (शय) का ख्वाह सारी उम्र पता न लगे। वहां बच्चे सवाल करते रहते हैं (जैसा कि बच्चोंका सब जगह दस्तूर है) और उस्तादका काम है इनको पूरे पूरे जवाब देते जाना, यहां इतने बड़े उस्तादोंको शर्म नहीं आती, नन्हे नन्हे बच्चोंको सवाल पूछ पूछकर हैरान करते हैं। पढ़ना वह क्या है जिसमें लज्ज़त रूहानी न हो। यहां उस्तादको देखकर बच्चोंको मारे दहशत२ के जान जाती है वहां बच्चोंकी मुहब्बत जो उस्तादोंसे है मां बापसे नहीं, जो खुशी स्कूलोंमें

१-जानकारी २-डर।

है घरमें नहीं। स्कूलोंमें फ़ीस वहां नहीं ली जाती और किताबें सबको मुफ़्त दी जाती हैं।

अब दूकानोंकी हालत मुलाहिज़ा हो। दूकानोंकी वहां क्या हालत है? शिकागो१ में राम एक दूकानपर मदऊ२ हुआ, जिसके फ़र्शका रक़्बा३ एक तिहाई ग़ाज़ीपुरसे कम न होगा और दूकानके नीचे ऊपर पचीस मंजिलें थीं, जिस मंजिलपर जाना चाहो बालाकश (Elevator)झट ले जायंगे। हर मंजिलमें नयी क़िस्मका माल भरा हुआ था। करोड़ोंके ग्राहक रोज आते हैं लेकिन दूकानवालोंका सुलूक सबके साथ यकसां है, चाहे लाखका खरीददार हो चाहे पांच पैसेका। क़ीमत एक ही होगी, जो हर चीजके ऊपर लिखी है, इससे कौड़ी कम नहीं, कौड़ी ज्यादा नहीं और खन्दा पेशानी४ सबके साथ यहांतक कि जो कुछ न खरीदे और दस चीजोंकी क़ीमत पूछ पूछकर चला जाय उसे भी दर्वाजेतक छोड़ने आते हैं और हस्ब दस्तूर सलाम करते हैं। इस बड़ी दूकानहीपर नहीं, मामूली दुकानोंपर भी यही सुलूक है।

अमेरिका, जापान, इंगलेंड, जर्मनीमें पुलिस अज़हद शायस्ता५ और रिआयाकी खिदमतगार है। प्रजारक्षक है, प्रजा भक्षक नहीं। बाज़ हाज़िरीन शायद दिलमें कह रहे होंगे कि बस, बन्द करो, अमेरिकन लोगोंकी बहुत सनाख्वानी६ हो ली। उनके गीत कहांतक गाते जाओगे? हमें अमेरिकन बनाना चाहते हो? इस वहमवालोंसे राम कहता है कि हिन्दुस्तानी अमेरिकन बनें! हर! हर! हर! दूर हो

---

१ (chicago) उत्तरीय अमेरिकाका एक प्रसिद्ध शहर २ निमन्त्रित ३ क्षेत्रफल ४ हँसमुख ५ सभ्य ६ तारीफ।

यह ख़ियाल जिसके दिलमें भी आया हो ! दफ़ा हो यह उम्मेद जिसने कभी की हो। रामका ऐसा ख़ियाल हरगिज़ नहीं हुआ, न होगा। अलबत्ता बाज़ बातें उन मुल्कोंसे लेना हम लोगोंके लिये ज़रूरी है। अगर हम नेस्ती१ के चंगुलसे बचना चाहते हैं, अगर हमें हिन्दू बने रहना मंज़ूर है तो हमें उनके उलूम व फ़ुनून लेने होंगे, ख़्वाह किसी क़ीमतपर मिलें। जब राम अमेरिकामें रहा तो सरपर पगड़ी हिन्दुस्तानी थी, लेकिन बाज़ारोंमें बर्फ होनेके बाइसर पांवमें जूता उसी मुल्कका था। लोगोंने कहा कि क्यों, जूता भी हिन्दुस्तानी नहीं रखते ? रामने जवाब दिया कि सर तो हिन्दुस्तानी रखूंगा लेकिन पांव तुम्हारे ले लूंगा। रामकी नीयत तो यह है कि आप हिन्दुस्तानी बने रहकर अमेरिकावालोंसे बढ़ जाओ और यह उन कौमोंसे गुरेज़३ करते हुए नहीं हो सकता। आज बर्क़४ और दुख़ां५ रेल तार वग़ैरः ज़मां६ मकां७ (फ़ासला और वक़्त) को गोया हड़प कर गये हैं। दुनियां एक छोटासा टापू बन गयी, समन्दर सद्देराह८ होनेके बजाय शाहराह९ हो गया है। जिनको कभी अलहदा मुल्क कहते थे वे शहर हो गये हैं और अगले शहर गोया गलियां हो रहे हैं। आज अगर हम अपने तईं अलग अलग रखना चाहें और दीगर क़ौमोंसे जुदा मानकर अपनी ही ढाई चावलकी खिचड़ी पकाएं, आज बीसवीं सदीमें अगर हम बीसवीं सदी क़ब्ल १० अज़ ११ मसीहके रस्म व रिवाज़ बर्तें; आज अगर हम मग़रबी१२ फ़ुनूनका मुक़ाबिला करना न सीखें, आज

---

१ क्षय, विनाश २ कारण ३ भागते ४ बिजली ५ धूआं ६ काल ७ देश ८ रोक ९ आम सड़क १०-११ पेश्तर—मसीहसे पहले १२ पश्चिमी।

अगर हम उधार धर्मों की लड़ाई-झगड़े छोड़कर नक़्द धर्मको न बर्तें तो हम इस तरहसे उड़ जायंगे जैसे बर्क़ और दुखाँसे फ़ासला और वक्त। अपनी हालतको पहचानो।

दो०—कञ्चन होवे कीचमें, विषमें अमृत होय।
विद्या नारी नीचमें, तीनों लीजे सोय॥

जब हिन्दुस्तानमें इक़बाल था तो अपनेको इन तालाबका मेंडक नहीं बना रक्खा था।

जब पुष्करमें यज्ञ हुआ तो हबशी, चीनो और ईरानी क़ौमोंके लोगोंको दावत दी गई। राजसूय यज्ञके पहले भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव दूर दूरके ग़ैर मुल्कोंमें गये, खुद रामचन्द्र मर्यादा पुरुषोत्तम अवतारने समन्दर पार जानेकी मर्यादा बांधी।

दोश[1] अज़ मसाजिद सूए मैख़ाना आमद पीरेमा।
चीस्त याराने तरीक़त बादऽज़ीं तदबीरमा॥

उन दिनों तो हिन्दुस्तान किसी ग़ैर मुल्कका मुहताज भी न था लेकिन आज और मुल्कोंके फ़ुनून सीखनेकी वह ज़रूरत है कि इनके बग़ैर जान जाती है। पस आज हिन्दुस्तान अगर जीना चाहे तो अमेरिका, यूरुप, जापान वग़ैर: बाहरकी दुनियांसे अपने तईं खुद छेंक न दे (खारिज न कर दे)। बाहरकी हवा लगनेसे जानमें जान आयगी, हिन्दू बाहर जायंगे तो सच्चे हिन्दू बन जायंगे। बाहर

१-कल हमारे गुरुजी मसजिदसे शराबखानेमें आ पहुंचे। कहिये बन्धुओ! अब हमारा कर्त्तव्य क्या है?

जानेसे अपने शास्त्रकी क़द्र मालूम होगी और बहुत अच्छी तरह मालूम होगी, और शास्त्र अमलमें आने लगेगा।

पुराणोंमें सुना करते थे और पढ़ा करते थे कि फ़ुलां ऋषिके वर या शापसे फ़ुलां कस१ की हालत बदल गई। योगवाशिष्ठमें शिला (पत्थर) में सृष्टि (दुनियां) दिखानेका ज़िक्र आता है, लेकिन अमेरिकामें इस क़िस्मके मुआमले आंखोंके सामने मुशाहदे२ से गुज़रे। यूनिवर्सिटीके मकानों और हस्पतालोंमें इस क़िस्मके तजुर्बे किये जाते हैं, हज़ारों बीमार सिर्फ़ कुव्वत्त खयालसे राज़ी किये जाते हैं। प्रोफेसरकी तहरीकसे मेज़का घोड़ी नज़र आना या जेम्स साहबका डाक्टर पाल हो जाना (शख़्सियतका बदल जाना) पुराने जेम्सपनका उड़ जाना अपनी आंखों देखा। संस्कृतमें वेदान्त तौहीद के अज़हद मस्ताना नुस्खे हैं—दत्तात्रेयके चरित्र, भगवद्गीता, अष्टावक्र शंकराचार्यके स्तोत्र, बाज़, हिस्से योगवाशिष्ठके। फ़ारसीमें सबसे बढ़कर तौहीदका कलाम शम्स तबरेज़का है। उससे उतरकर मसनवी शरीफ़, शेख अत्तार, मग़रबी वग़ैरः। लेकिन अमेरिकामें वाल्ट ह्विटमेनके औराक़ गियाह वही तौहीदकी मस्ती और आज़ादी लाते हैं जो अवधूतगीता, अष्टावक्र तरानाहाय शङ्कर३, शम्स तबरेज़ और बुल्लाशाहका कलाम, बल्कि इनसे भी कहीं बढ़कर।

डटकर खड़ा हूं, खौफसे खाली, जहानमें।
तसकीन दिल भरी है मेरे दिलमें जानमें॥

१-शख्स २-नज़रों ३-भजन।

सूंघे जुमां मकां१ में मेरे पैर मिस्ल सग२ ।
मैं कैसे आ सकूं हूं कैदेबयानमें ॥

हबशी गुलामोंको आज़ादी देनेके लिए अमेरिकाकी खाना जङ्गीके दिनों यह ह्विटमेन हर लड़ाईमें सबसे आगे मौजूद था। दोनों तर्फ़के ज़खमियोंको३ मरहम४ पट्टी करना, प्यासोंको पानी पिलाना, सिसकती जानोंको अपने तबस्सुम५ से जानमें जान लाना और इसी मौक़े- की अपनी ताज़ा तसनीफ़६ (नग़मय औराक़ गियाह) को रातदिन गाते फिरना उसका दिल्लगीका काम था। इस हङ्गामः७ शोर व शेवन८में मअरकः९के कारजार१०में,वलाके जङ्ग व जदल११में ह्विटमेन ऐसा बश्शास१२ और जमाख़ातिर फिरता था जैसे शिवशंकर भूत प्रेतके घमसानमें या जैसे कृष्ण भगवान कुरुक्षेत्रके मैदानमें मुबारक थे। इन लगातार लड़ाइयोंके नीम बिसमिल१३ जो ऐसे मस्तोहाके दर्शन करते जान बहक़१४ हुए।

शब१५ हो हवा हो धूप हो तूफ़ां हो छेड़छाड़ ।
जङ्गलके पेड़ कब इन्हें लाते हैं ध्यानमें ॥
गर्दिश१६ से रोज़गार१७ के हिल जाय जिसका दिल ।
इन्सान होके कम है दरख्तोंसे शानमें ॥

इस दर्जेका ब्रह्मनिष्ठ (आरिफे बाअमल) अमेरिकामें हेनरी थोरो भी हुआ है। सच्चे ब्रह्मचारी या संन्यासीकी ज़िन्दगी जंगलोंमें

१-वक़्त और जगह २ कुत्ता ३ घायलों ४ लेप ५ मुस्कुराहट ६ रचना ७ भीड़ ८ रोना पीटना ९ मैदानजंग १० लड़ाई ११ लड़ाई झगड़े १२ प्रफुल्लित १३ अधमरे १४ मर गये १५ रात्रि १६-१७ कालचक्रसे ।

बसर करता था। अलबत्ता सुस्तीपरस्त साधू न था। अमेरिकाका सबसे बड़ा मुसन्निफ एमर्सन इस थोरोके बारेमें लिखता है कि शहदकी भिड़ें उसकी चारपाईपर सोती हैं। लेकिन इस निडर प्रेमके पुतलेको नहीं डसतीं। जंगलके सांप उसके हाथों और टांगोंको चिमट जाते हैं लेकिन वह कंगन और पाजेबकी तरह उनकी परवा नहीं करता। क्या दयालुभूषण है! एमर्सनने रास्ता चलते चलते पूछा कि यहांके पुराने लोगोंके तीर कहां मिलते हैं? तो हस्ब दस्तूर झट जवाब दिया "जहां चाहो" और इतनेमें झुककर उसी जगहसे मतलूबा१ तीर उठाकर दे दिया। दृष्टि-सृष्टि-वाद (मसलए दीद परदीद) की क्या अमली मश्क़ है!

खुद एमर्सन जिसकी तसनीफातने नई दुनियामें नई रूह फूंक दी भगवद्गीता और उपनिषदोंका न सिर्फ आलिम बल्कि बहुत बड़ा आमिल था। इसने अपने मज़ामीनमें उपनिषद और गीताके अक्सर जगह हवाले दिये हैं और उसके निजके दोस्तोंकी ज़बानी मालूम हुआ कि उसके ख़यालातपर बिल२ ख़सूस३ गीता और उपनिषदोंका असर था। महात्मा थोरो अपने वाल्डनमें लिखता है—"अलस्सुबाह मैं अपने दिल व दिमाग़को भगवद्गीताके पवित्र गङ्गाजलमें स्नान कराता हूं। यह वह मुअज़्ज़म४ और आलमगीर५ फ़िलासफ़ः६ है कि इसको तहरीरमें आये देवताओंके सालोंके साल बीत गये लेकिन इसके बराबरकी तसनीफ नहीं निकली, इसके मुक़ाबलेमें हमारी मौजूदः दुनियां मय अपने इल्म अदबके हक़ीर और नाचीज़ मालूम होती है, इसकी

१ मांगा हुआ २ अमल करनेवाला ३ ख़ासकर ४-महान् ५ विश्वव्यापी ६ तत्वविद्या।

बुज़ुर्गी हमारे क़यास व गुमानसे इस कदर बरतर[१] है कि मुझे कई दफ़ा ख़याल आता है कि शायद यह फ़िलासफ़ः किसी और ही युगमें लिखा गया होगा।" एक और मौक़ेपर मिश्रके आलीशान मीनारोंका ज़िक्र करते थोरो लिखता है कि पिछली दुनियांके तमाम यादगारोंमें भगवद्गीतासे अजीब तरीं[२] कुछ नहीं। यही भगवद्गीता और उपनिषदोंकी तालीम अमलमें आई हुई असली वेदान्त या नक़दधर्म हो जाती है। इसीको रगों पट्ठोंमें लाकर वह लोग तरक्की पा रहे हैं। आपके यहां यह क़ीमती नोट (हुंडी) मौजूद है, पर काग़ज़के नोटसे ख़्वाह कितना ही क़ीमती हो भूख नहीं जाती, प्यास नहीं बुझती, बदनका जाड़ा दूर नहीं होता। इस हुंडीको भुनाकर नक़दधर्ममें बदलना पड़ेगा। आज वह लोग इस नोटकी क़ीमत दे सकेंगे। आज वहांपर यह हुंडी खरी हो सकती है। जाओ उनके पास।

जब सीताजी अयोध्यासे बनवासको सिधारीं तो उनके पीछे रौनक़ दूर हो गई, मातम[३] फैल गया। रैयत बेचैन हो गई। राजाका शरीर छूट गया। रानियोंका रोना-पीटना पड़ गया। तख़्त चौदह वर्षतक गोया ख़ाली रहा। और जब सीताजीको समन्दर पारसे लानेके लिये रामचन्द्र खड़े हो गये, तो परन्दे (गरुड़ और जटायु) भी मददको तयार हो गये, जङ्गलके हैवान (बन्दर रीछ वग़ैरः) लड़ने मरनेके लिए खिदमतमें हाज़िर हो गये। कहते हैं अपनी छोटी हैसियतके मुताबिक़ गिलहरियां भी मुंहमें रेतके दाने भर भरकर पुल बांधनेके लिये समन्दरमें डालने लगीं। हवा और पानी भी मुवाफ़िक़ बन

१ बढ़कर २ सबसे ज्यादा ३ रोना पीटना।

गये। पत्थर भी जब समुद्रमें डाले तो सीताकी खातिर अपनी आदत-को भूल गये और बजाय डूबनेके तैरने लगे।

कुनम[1] सदसर फ़िदाए पाय सीता।
च यकता सर च दहतान सर च सीता॥

सीताके मुराद अध्यात्म रामायणमें है ब्रह्मविद्या। हम कहेंगे, अमली ब्रह्मविद्या, (नवव्रह्मधर्म) को अलविदा[2] कहनेसे हिन्दुस्तानमें सब तरहकी तबाही वारिद[3] हुई। क्या क्या मुसीबत नहीं आई। किस किस दुःख और बीमारीने हमें तख्तए[4] मश्क नहीं बनाया। हाय! सीता समुद्र पार चली गई! अमली ब्रह्म विद्याको समुद्र पारसे लानेके लिये आज खड़े तो हो जाओ और देखो तमाम कायनात[5] की ताक़तें आपसमें शर्तें बांध बांधकर तुम्हारी खिदमत बजा लानेको दस्तबस्ता[6] हाज़िर खड़ी हैं, सबके सब देवता और मलायक[7] सरे तसलीम खम[8] किये पड़े हैं। कुदरतके क़ानून, कसमें खा खाकर तुम्हारी मददको कमरह[9] बस्ता तैयार खड़े हैं।

अपनी खुदाईमें जागो तो सही, फिर देखो होता है कि नहीं।
सारे जहांसे अच्छा हिन्दूस्तां हमारा।
हम बुलबुलें हैं उसकी वह गुल सितां[10] हमारा॥

ओ३म्! ओ३म्!! ओ३म्!!!

---

१ मैं सौ सिर सीताजीके परोंपर भेंट कर दूंगा, चाहे एक सिरका सिर हो चाहे दसका, चाहे तीसका २ रुख्सत, विदा ३ उतरी ४ अभ्यास करनेकी पट्टी जिसपर बच्चे अक्षर सीखते हैं ५ दुनियां ६ हाथ जोड़कर ७ फरिश्ते ८ स्वीकार करते हुए सिर झुकाये ९ कटिबद्ध १० फुलवाड़ी।

फ़र्ज़ उल्फ़त

या

आत्मकृपा

श्रुति (वेद) का कलाम[1] है "श्रेय और है प्रेय और है" फ़र्ज़ कुछ कहता है लेकिन ग़र्ज़ और तरफ़ खींचती है। श्रेय—फ़र्ज़ या ड्यूटी तो कहते हैं—"दे दो, त्याग!" लेकिन प्रेय (ग़र्ज़) तरग़ीबर[2] देती है "लो, ले लो! यह हमारा हक़ है, अधिकार है, दुनियांमें अपने हक़, अधिकारपर ज़ोर देना तो आम है और आसान है लेकिन अपने धर्म या फ़र्ज़के अदा[3] करनेमें ज़ोर देना मुश्किल और बेमजा मालूम होता है। हक़ीक़तपर ग़ौर करें तो फ़र्ज़ और ग़र्ज़ (यानी हक़्क़) में वही रिश्ता[4] है जो दरख़्तके बीजको उसके फलके साथ होता है। बड़े ताज्जुबकी[5] बात है, फल तो सब लोग खाना चाहते हैं, लेकिन बीजको बोने और उसकी परवरिश[6] करनेकी मिहनतसे गुरेज़[7] करते हैं। बात यों है कि जब हम लोग अपनी ड्यूटी बजा लानेपर ज़ोर देते चले जायें तो हमारे हक़्क़ हमारे पास ख़ुदबख़ुद आयेंगे। जब हम लोग सिर्फ़ अपने हक़्क़पर ज़ोर देंगे, अपने राइट फड़कायेंगे तो हम

---

१ वाक्य २ ख्वाहिश दिलाती ३ पूरा ४ सम्बन्ध ५ आश्चर्य ६ पोषण ७ भागते हैं।

बेवहरा१ मुंह तकते ही रह जायेंगे। हुक़ भी बातिल२ हो जायेंगे। कुदरतका ३ क़ानून ऐसा ही है।

कहा जाता है कि ड्यूटी४ चार तरहकी है—एक ड्यूटी परमेश्वरकी तरफ, दूसरी ड्यूटी नोअ५ इन्सानकी६ जानिब७, तीसरी मुल्ककी सेवामें, चौथी ड्यूटी अपनी तरफ़। सब ड्यूटियां अञ्जामकार८ एक ही ड्यूटीमें समा जायेंगी। वह क्या है जो आपकी ड्यूटी अपने आपकी तरफ़ हैं। जो लोग अपना ऋण (क़र्ज़) अपने आपको पूरी तरहसे अदा करते हैं उनके बाक़ी तीनों ऋण (क़र्ज़) खुद-बखुद९ अदा हो जाते हैं। कहा जाता है कि कृपा (नवाजिश) तीन तरहकी है—ईश्वरकृपा, गुरुकृपा और आत्मकृपा (यानी फ़ज़्ल इलाही, तवज्जुह मुरशद और हिम्मत ज़ाती)। ईश्वरकृपा उसपर होती है जिसपर गुरुकृपा होती है। गुरुकृपा उसपर होती है जिसपर आत्मकृपा होती है। देखिये, एक लड़का जो स्कूलमें पढ़ता है अगर अपनी ज़ाती१० ड्यूटीको अच्छी तरहसे पूरा न करे, अगर आत्मकृपा न करे तो गुरुकृपा उसपर न होगी। और जब वह अच्छी तरहसे ... करे तो गुरुकृपा उसपर ख्वाहमख्वाह११ होगी और गुरुकृपा ... ईश्वरकृपा हो ही जाती है।

मुल्ककी सेवा वह आदमी नहीं कर सकता जिसने पहले अपनी सेवा नहीं की। जो अपना भी हक़्क़ अदा नहीं कर सका वह मुल्ककी खिदमत१२ क्या खाक करेगा? जिस किसीने कोई इल्म हासिल

१ बेनसीब २ झूठे ३ ईश्वरीय नियम ४ धर्म, फ़र्ज़ ५ जाति ६ मनुष्यमात्र ७ तरफ़ ८ आख़िरकार ९ आप ही आप १० निज ११ अपने आप १२ सेवा।

नहीं किया, कोई हुनर१ नहीं सीखा, किसी बातमें कमाल२ हासिल नहीं किया; किसी सनअत३ या हिर्फ़तमें४ दस्तरस५ पैदा नहीं की और दम भरने लगे६ मुरब्बीय७ मुल्क होनेका, तो भला बोलो उससे क्या बन पड़ेगा? अलबत्ता यह ज़रूर है कि जिसके दिलमें सदाक़त८ भर जाये वह बेकमाल भी कुछ न कुछ मुल्ककी सेवा कर सकता है। मुल्ककी खिदमत कोयला भी जलकर लकड़ी भी कटकर नाव बनकर कर सकते हैं। जब लकड़ी या कोयला भी कट या जलकर मुल्ककी खिदमत कर सकते हैं तो वह शख्श भी जिसने कोई इल्म या हुनर नहीं पढ़ा मुल्ककी खिदमत खदाक़तके ज़ोरसे कुछ न कुछ क्यों नहीं कर सकता? मगर उसकी खिदमतको सिर्फ़ कोयला और लकड़ीकी खिदमतसे निसबत९ दी जा सकती है। नीज़१० सदाक़तवाला इन्सान बेकमाल कैसे कहला सकता है? सदाक़त सचाई तो बज़ात खुद११ कमाल है। वह शख्स जिसने अपनी ड्यूटी अपनी तरफ किसी क़दर अदा कर दी और अपने तईं रूहानी१२ या अक़ली बचपनकी हालतसे आगे बढ़ा दिया, मसलन् कुछ नहीं तो एम० ए० या शास्त्री वग़ैरः दर्जोंकीसी लियाक़त हासिल कर ली। यह शख्स जिस हदतक रूहानी या अक़ली ज़ोर पैदा कर चुका है उसी अन्दाजेसे क़ौमकी१३ गाड़ीको तरक्क़ीकी सड़कपर आगे खींच सकता है। ऐसा शख्स मुल्ककी रिफार्मरी१४ (मुसलहपन) का दम अगर न भी भरे और ज़ाहिरमें

१-कला २ पूर्णता ३ कारीगरी ४ पेशा ५ योग्यता, पहुँच ६ शेखी मारने ७ सरपरस्त, परवरिश करनेवाला ८ सचाई ९ सम्बन्ध १० भी, और ११ स्वयं १२ आत्मिक १३ जाति १४ सुधारकपन।

पूरी ख़िद्मत भी मुल्ककी न करे ताहम१ उसको देखकर और याद करके बहुतसे आदमी जोशमें२ आ जायंगे कि हम भी एम० ए० पास करें, हम भी लियाक़त पैदा करें। यह शख़्स अपने आमालसे३ लोगोंको उपदेश कर रहा है और मुल्कके ज़ोरको बढ़ा रहा है—

*दामनालूदा अगर ख़ुद हमः हिकमत गोयद।
अज़ सुख़न गुफ़्तने- ज़ेबाश बदां बिह न शवन्द॥
वांकि पाकीज़ा दिलस्त अर बिनशीनद ख़ामोश।
हमः अज़ सीरते—साफ़ैश नसीहते शुनवन्द॥

सर ऐज़क न्यूटन४ जिसको ख़याल भी न था कि दुनियांकी ख़िद्मत करेगा इस तरहसे इल्मके पीछे दौड़ रहा था कि जिस तरह शमअकी५ लौपर पतंगे दौड़ते हैं। सर ऐज़क न्यूटन अपनी तरफ़ ड्यूटी है उसको अदा करता हुआ, आत्मकृपा करता हुआ, मुह्सिने६ दुनियां साबित हुआ। अगर एक शख़्स मैदानमें खड़ा होकर निगाह फैलावे तो थोड़ी दूरतक देख सकता है, और चन्द७ आदमियोंको अपनी आवाज़ पहुंचा सकता है, लेकिन जब वह ऊंचे मीनार८ या पहाड़की चोटीपर पहुंच जाता है तो अपनी आवाज़ चारों तरफ़ बहुत दूरतक पहुंचा सकता है। रामके साथ एक मरतबा थोड़ेसे आदमी

१ तिसपर भी २परम उत्साह ३ कामों ४ Sir Isac Newton यूरपके एक बड़े विद्वान्का नाम है ५ दीपक ६ दुनियांके साथ नेकी और अहसान करनेवाला ७-थोड़े ८-शिखर

*दुष्कर्मी अगर स्पष्ट बुद्धिमानोंकी बातें कहे तो भी उसके अच्छी अच्छी बात कहनेसे बुरे लोग अच्छे न होंगे और जो पवित्र हृदयवाला चुप भी बैठे तो सब लोग उसके उत्तम स्वभावसे उपदेश लेंगे।

गंगोत्रीके पहाड़पर जा रहे थे, रास्ता भूल गये, झाड़ियों और कांटों-से बदन छिल गये। साथियोंमेंसे अगर कोई पुकारता तो उसकी आवाज़ दूसरोंतक नहीं पहुंच सकती थी, मुश्किलके साथ आख़िर चोटीपर पहुंचकर जब रामने आवाज़ दी तब सब आ गये। इसी तरह से जबतक हम खुद नीचे गिरे हुए हैं, पड़े आवाजें दें, सुनाई नहीं देगी और जब चोटीपर चढ़कर आवाज़ दें तो सबके सब सुनेंगे। इस चौकीको जो रामके सामने है, अगर हिलाना चाहें और परली तरफ या बीचमें हाथ डालें और जोर मारें तो नहीं हिलेगी, लेकिन नज़दीकसे नज़दीक मुक़ामसे हाथ डालकर हम सारी चौकीको खींच सकते हैं। दुनियांके साथ इन्सानका ताअल्लुक़[१] भी ऐसा ही है।

**बनी आदम आज़ाय यक दीगरन्द।*
कि दर आफ़रीनश ज़ यक जौहरन्द॥

तमाम दुनियांको अगर तुम हिलाना चाहते हो तो दुनियांका वह हिस्सा जो नज़दीक तरीं[२] है यानी अपना आप उसको हिलाओ। अगर अपने आपको हिला दोगे तो तमाम दुनियां हिल जायगी। न हिले तो हम जिम्मेदार। जिस क़द्र अपने आपको हिला सकते हो उसी कदर दुनियांको हिला सकते हो। बाज[३] लोग तो इसलाह[४] (Reform) के काममें हजार यत्न करते हैं, रात दिन लगे रहते हैं और कुछ नहीं हो सकता, और बाज़ ऐसे हैं कि उनके जीते जी या मर

१-सम्बन्ध २-सबसे ज्यादह ३ कोई कोई ४ सुधार।

*आदमीकी औलाद (आदमी) एक दूसरेके अवयव हैं, क्योंकि पैदाइश में एक ही मूल कारण है।

जानेके बाद उनकी यादगारमें उनके नामपर लोग खुद बखुद कालेज बनाते हैं, सुसाइटियां१ क़ायम करते हैं और सैकड़ों इसलाहैं रायज२ करते हैं जैसे बुद्ध, शङ्कर, नानक, स्वामी दयानन्द। वजह३ क्या है? बस यही कि यह माबादुज्ज़िक्र४ महात्मा अपने मुसलह५ (रिफा-र्मर) खुद बने।

यूनानमें एक बड़ा रियाज़ीदां६ गुज़रा है आर्कमिडीज७। इसका क़ौल है कि "मैं थोड़ीसी ताक़तसे तमाम दुनियांको हिला सकता हूं बशर्ते कि मुझे एक कायम निसाब (मुस्तक़िल मुक़ाम) लीवर (बेरम) सहारेको मिल जाय।" मगर ग़रीबको कोई क़ायम निसाब न मिला। प्यारे, वह क़ायम नुक़ता जिसपर खड़े होकर दुनियांको हिला सकते हो वह क़ायम नुक़ता आपका अपना ही आत्मा है। वहां जमकर अपने स्वरूपमें स्थित होकर जो जुंबिश और हरकत सरज़द८ होगी यह तमाम दुनियांको हिला सकती है

जब एक जगहकी हवा सूर्यकी गर्मी जज़्ब९ करते करते लतीफ१० होकर ऊपर उड़ जाती है तो उसकी जगह घेरनेको खुद बखुद चारों तरफसे हवा चल पड़ती है (और बाज़ दफा आंधी भी आ जाती है) इसी तरह जो शख्स खुद हिम्मत (हरारत११ इलाही) जज़्ब करता करता ऊपर बढ़ गया वह ख्वाहमख्वाह मुल्कमें चारों तरफके फिरकों-को१२ कई क़दम आगे बढ़ानेका बाइस१३ हो जाता है। तिलिस्मातका१४ रिफ़ार्मर१५ है।

---

१ सभाएं २ जारी ३ सबब ४ जो पीछे ज़िक्र किये हैं ५ सुधारक ६ गणित विद्याजाननेवाला ७ Archimedes ८ पैदा ९-खींचते १०-बारीक, सूक्ष्म ११-ईश्वरीय गर्मी १२-जातियों १३-सबब १४-जादू १५-सुधार करनेवाला।

अब यह दिखलाया जायगा कि क्योंकर अपनी ड्यूटी अपने आपकी तरफ़ भी निबाहते हुए हमारी ड्यूटी (फ़र्ज़) खुदाकी तरफ़ भी पूरी हो जाती है। मुसलमानोंके यहां एक रिवायत१ है, एक शख़्स तालिबे२ हक़ था। तलाश परमेश्वरमें प्रेमका मारा चारों तरफ़ दौड़ता था कि काश३ कोई ऐसा आरिफ़४ कामिल मिल जाय कि जिसकी ज़ियारतसे५ जिगरकी६ आग बुझे, दिलको ठंढक पड़े। यों ही तलाश करता हुआ नाउम्मेद होकर जङ्गलमें जा पड़ा कि अब न कुछ खायेंगे न पीयेंगे, जान दे देंगे।

बैठे हैं तेरे दर पे तो कुछ करके उठेंगे।
या वस्लही८ हो जायगा या मरके उठेंगे॥

उस ज़मानेके आरिफ़ कामिल हज़रत जुनैद९ थे, और उस दिन हज़रत जुनैद दिजलामें१० घोड़ेको पानी पिलाने जा रहे थे। घोड़ा अड़ता था। दिजलाकी तरफ़ नहीं जाता था। घोड़ेको अड़ता हुआ और सरकश११ सा देखकर जुनैदने जाना कि इसमें भी कोई हिकमत होगी। आखिर घोड़े के साथ ज़िद छोड़ दी और कहा "चल जहां चलता है, चारों तरफ़ मेरे ही खुदाका मुल्क तो है, सब मेरे ही वलायत है।" घोड़ा दौड़ता हुआ उस जंगलमें खास उसी मुक़ामपर आ पहुंचा जहां वह बेचारा तालिबे१२सादिक१३ प्रेमका मतवाला इश्कका जला हुआ परमेश्वरका भूखा प्यासा पड़ा था। जुनैद घोड़ेसे उतरकर उस

१-कथा २-ईश्वरका ढूंढनेवाला ३-खुदा करे ४-ज्ञानी ५-दर्शन ६-कलेजा ७-दरवाजा ८-मुलाकात ९-बगदादके एक नामी फ़क़ीर १० बगदादकी एक नदीका नाम ११ बिगड़ा १२ ढूंढनेवाला १३ सच्चा।

शख़्सके पास आकर हाल पूछने लगे और थोड़ी ही सुहबतसे[१] वह ख़ालिवेसादिक़ मालामाल हो गया। जब जुनेद जाने लगे तो उस शख़्ससे कहा अगर फिर कभी कब्ज़वारिद[२] हो जाय और तुझे मुर्शद[३] कामिलकी ज़रूरत हो तो बग़दादमें आ जाना। मेरा नाम जुनैद है किसीसे पूछ लेना। इस मस्तने जवाब दिया कि क्या अब मैं हज़ूरके पास गया था? मुझे अब भेद मालूम हो गया। अब मैं आने जानेका कहीं नहीं। अगर आइन्दा ज़रूरत होगी तो अबकी तरह फिर भी ख्वाह हूज़ूर खुद ख्वाह[४] और कोई गरदनसे पकड़ा हुआ घसीटा आयेगा।

असर है जज़्बे उल्फ़त[५] में तो खिंचकर आ ही जाएंगे।
हमे परवाह नहीं हमसे अगर वह तनके बैठे हैं॥

गाहरी कशिश रूहानी कीमयाई[६]!

बहूद:[७] चरा दरपये ऊ मी गरदी।
बिनशीं अगर ऊ ख़ुदास्त ख़ुद भी आयद॥
इश्क़[८] अव्वल दर दिले माशूक़ पैदा मीशवद।
तानसोज़द शमअ कै पर्वान: शैदा मीशवद॥
गिर्देख़ुदगर्द[९] ग़नी चन्द कुनी तौफ़े हरम।
रहबरे नेस्त दरीं राह बे: अज क़िब्लानुमा॥

---

१ सत्संग २ कब्ज पैदा ३ गुरु ४ चाहे ५ मुहब्बतकी कशिश ६ रसायन ७ तू उसके पीछे बेफ़ायदा क्यों फिरता है। बैठ, अगर वह खुदा है खुद आयेगा ८ इश्क पहिले माशूकके दिलमें पैदा होता है। जबतक बत्ती नहीं जलती उसपर पतंगे कब आशिक होते हैं ९—ऐ ग़नी (कविका तख़ल्लुस है)

यह है आत्मकृपाका बल (ताक़त) "यह हमारी क़िस्मतमें नहीं।" "ख़ुदाकी मर्ज़ी" "आज कल मुरशद नहीं मिल सकता" "मुहब्बत नेक नहीं" "दुनिया बड़ी ख़राब है" वग़ैरः ऐसे ऐसे कलमें सब हमारे दिलकी हरामज़दगी पर दाल१ हैं।

कैसे गिले२ रक़ीबके क्या ताने३ अक़्वा४।
तेराही दिल न चाहे तो बातें हज़ार हैं॥

आपने बीसियों कथाएं सुनी होंगी कि किस किस तरहसे ध्रुव, प्रह्लाद और अभिमन्यु वग़ैरः छोटे छोटे लड़कोंने परमेश्वरको बुलाया, प्रगट कर लिया। एक ज़रासा लड़का नामदेव अपने नानाको ठाकुर-पूजन करते हुए देखा करता था। उसके मनमें भी आने लगा कि मैं भी पूजा करूंगा। चुपके चुपके "ठाकुरजी ठाकुरजी" जपा करता था। उसकी निगाहमें शालिग्रामकी प्रतिमा सच्चे ठाकुरजी थे। जब उसका दांव लगता शालिग्रामकी मूर्तिके पास आकर बड़े तपाकसे५ कहा करता, "ठाकुरजी! स्नान!" मगर उसे ठाकुरजीको नहलाने और पूजा करनेकी उसका नाना इजाज़त नहीं देता था। एक दिन उसके नानाको कहीं बाहर जाना था और बिल्लीके भागों छींका टूटा। बच्चेने नानासे कहा, अब तुम तो जाते ही हो, तुम्हारे पीछे मैं ही ठाकुर-पूजन करूंगा। उसने कहा, अच्छा तू ही सही। लेकिन तू तो सुबहको बग़ैर हाथ मुंह धोये रोटी मांगता है। तेरा ऐसा

कबतक तू काबेकी परिक्रमा करेगा, अपने गिर्द फिर, क्योंकि इस राहमें इस क़िबलानुमा (ध्रुवदर्शक यंत्र) से अच्छा कोई राह बतानेवाला नहीं है

१ दलील करनेवाले २ शिकायतें ३ ताने तिश्ने ४ रिश्तेदारों ५ गर्मजोशी।

नादान पूजन क्या करेगा ? अगर पूजन किया चाहता है तो पहले ठाकुरजीको खिलाना और फिर खुद खाना। खैर, नानाजी तो चले गये, रातको मारे प्रेमके लड़केको नींद न आई। बच्चा उठ उठकर अपनी मातासे कहता था, सुबह कब होगी ? ठाकुरजीका पूजन कब करूंगा ? सुबह होते ही बच्चा गङ्गाजीपर स्नानके लिये गया और स्नानके बाद उसकी मांने ठाकुरजीके सिंहासनको उतारकर नीचे रख दिया और बच्चेने मूर्तिको निकालकर गंगाजलके लोटेमें झट डुबो दिया और फिर सिंहासनमें बिठाकर मांसे दूध मांगने लगा, जल्दी दूध ला, जल्दी दूध ला, ठाकुरजी नहा बैठे हैं, उनको भूख लगी है। उसकी मां दूधका कटोरा लाई। लड़केने ठाकुरजीके आगे रख दिया और कहने लगा कि महराज, पीजिये ! दूध पीजिये। उस परमात्माने दूध नहीं पिया। लड़का आंखें बन्द करके आहिस्ता आहिस्ता होंठ हिलाने लगा और मुंहसे राम राम या ठाकुर ठाकुरका नाम बड़बड़ाने लगा, इस खयालसे कि मेरी इस भक्तिसे प्रसन्न होकर तो जरूर दूध पी लेंगे। लेकिन बीच बीचमें आंखें खोलकर देखता भी जाता था कि ठाकुरजी दूध पीने लगे या नहीं। बहुतेरा मन्त्र पढ़कर मुंह हिलाया, राम राम, ठाकुरजी ठाकुरजी कहा, मगर दूध ठाकुरजीने न पिया। आखिर दिक़ होकर बेचारा बालक नामदेव मारे भूख प्यास, रातकी थकावट और मायूसीके रोने लगा। ठंडी लम्बी सांस आने लगी; रोम खड़े हो गये; गला रुकने लगा। हिचकियोंका तार बन्ध गया। होंठ खुश्क हो गये। हाय ! अरे ठाकुर ! आज तेरा दिल पत्थरका क्यों हो रहा है ? क्यों इस नन्हेंसे बच्चेकी खातिर दूध नहीं

पीता ? ऐसे भोले भाले मासूमसे१ भी कोई ज़िद करता है।

सीमींबरी तो जानां लेकिन दिले तो संगस्त ।

दरसीम संग पिनहा दीदम न दीदः बूदम२ ॥

हाय ! चांदीके बदनमें दिल पत्थरका कहांसे आ गया ! बेचारा बच्चा रोता हुआ निढाल३ हो रहा है। आंखोंसे नदियां बह रही हैं। रोते रोते ग़श ४ कर गया। लोगोंने गुलाब छिड़का। जब होश आया, लोगोंने समझाना चाहा कि बस ! अब तुम पी लो। ठाकुरजी नहीं पिया करते, वह सिर्फ़ वासनाके भूखे हैं। बच्चेमें अभी यह अक़्ल नहीं आयी थी कि परमेश्वरको भी झुठला ले। ठाकुरजीको धोखा देना नहीं सीखा था। वह नहीं जानता था कि झूठमूठ भोग लगाया जाता है। बच्चा तो सच्चा था। सदाक़तका पुतला था। मचलकर चिल्लाया कि अगर ठाकुरजी दूध नहीं पीते तो खाने पीने या जीनेकी परवा हमको भी नहीं।

आत्मा कमज़ोर दिलको कभी प्राप्त नहीं होता। हाय ! नन्हेसे नामदेव ! तुझमें किस क़द्र ज़ोर है। कैसा आत्मबल है! इस नन्हेसे बच्चेने वह ज़िद जो बांधी तो एक लम्बासा छुरा निकाल लाया (हिन्दुस्तानमें उन दिनों हथियार रखनेकी इजाज़त थीं।) और अपने गलेपर रख लिया। फिर बोला, "ठाकुरजी पियो ! नहीं तो मैं नहीं"। छुरा चल रहा था, गला कटनेको था, इतनेमें क्या देखते हैं कि ठाकुरजी एकदम मूर्त्तिमान होकर (प्रत्यक्ष होकर) दूध पीने लगे।

१-बेगुनाह २-प्यारे ! तू चांदीके बदनवाला है लेकिन तेरा दिल पत्थर है, मैंने चांदीमें कभी पत्थर छिपा हुआ न देखा था अब देखा, ३-बेक़रार ४-मूर्छा।

आप लोग कहेंगे कि गप्प है। राम कहता है कि आप लोगोंका विश्वास (यक़ीन) कहाँ गया? राम अमेरिकामें रहकर कालिजोंमें, अस्पतालोंमें अपनी आंखसे ऐसे नज़ारे[१] देख आया है कि विश्वास (यक़ीन) की तहरीकर से इस चौकीको जो आपके सामने है, घोड़ा दिखा सकते हैं। इल्म साइकालोजी[३] के तजरबे एलानिया[४] इस क़िस्मके मुआमलातको रास्त[५] साबित कर दिखा रहे हैं तो क्या सच्चे मासूम[६] पूरे भक्त बेचारे नामदेवके यक़ीनका बल (ज़ोर) ठाकुरजी-को मूर्त्तिमान नहीं कर सकता था? परमेश्वर तो सर्वव्यापी (सब जगह हाज़िर व नाज़िर) है, लेकिन आत्मकृपा यक़ीन कामिल वह शै[७] है कि इसकी बदौलत परमेश्वर सातवें नहीं चौदहवें आस्मानसे, बिहिश्तसे हज़ारवें स्वर्गसे, वैकुण्ठसे, गोलोकसे, इससे भी परेसे, जहां भी हों वहांसे खिचकर आ सकता है।

थामे हुए कलेजेको आओगे आपसे।
मानोगे ज़बादिलमें[८] भला क्यों असर न॥
यह कौनसा उक़दा[९] है जो वा[१०] हो नहीं सकता।
हिम्मत करे इन्सान तो क्या हो नहीं सकता।
कीड़ा ज़रासा और वह पत्थरमें घर करे।
इन्सा वह क्या न जो दिले दिलबरमें घर करे॥

ऐ हज़रत इन्सान, आपके अन्दर वह दौलते अज़ीम[११] और

---

१ दृश्य २ ज़ोर ३ आत्म तत्त्वविद्या ४ खुल्लमखुल्ला ५ सच्चा ६ बेगुनाह निष्पाप ७ चीज़ ८ मनकी आकर्षणाशक्ति ९ गांठ, दिक्कत १० खुल ११ बड़ी।

ताक़ते लाइन्तिहा१ है कि इसका बाक़ायदा इज़हार२ ही मुल्क दुनियां और ख़ुदातकको ख़ुश करता है। ऐ गुले नौबहार३ ! तू अपनी ज़ातमें खन्दां४ हो। इस निजके फ़र्ज़ अदा करनेमें तेरे बाक़ी सब फ़र्ज़ अदा हो जायंगे। परन्दे५ इन्सान और हवातक सब ख़ुश हो जायंगे।

** तो ख़ुशी तो ख़ूबिओ काने ख़ुशी।*

तो चिरा ख़ुद मिन्नते बादाकशी॥

निजका फ़र्ज़ अदा करनेके लवाज़िमात६।

एक लड़का स्काटलैंडके एक यतीमख़ानेमें७ पलता था। उमूमन८ बच्चोंके दस्तूरके मुवाफ़िक़ यह लड़का खिलाड़ी था और शरीर९ भी था। एक दिन उस ग़रीबख़ानेसे भाग निकला। और रास्तेके देहातमें रोटियां मांग मांगकर गुज़ारा करते हुए लन्दनमें आ पहुंचा। वहां-के सबसे ज़ियादा मालदार लार्डमेयरके बागमें घूमने लगा। (लार्ड-मेयर उमूमन वह दौलतमन्द होते हैं जिनसे अमीर लोग, राजा लोग और बादशाह लोग भी ज़रूरतके वक्त क़र्ज़ लिया करते हैं) यह ग़रीब लड़का बाग़में टहल रहा था। एक बिल्लीको दौड़ते पाया। उसके साथ खेलने लगा और वाहो तबाही बातें करने लगा, उसकी पीठपर हाथ फेरता था और दुम खींचता था और लड़कपनकी तरङ्गमें बिल्लीसे छेड़खानी करता था। पड़ोसमें गिर्जेका घड़ियाल बज रहा था। लड़का बिल्लीसे पूछता था-"यह पागल घड़ियाल क्या बकता है ? कहो"

---

१ बेहद अनन्त शक्ति २ प्रगट करना ३ शुरू वसन्तका फूल ४ हंस तो सही ५ पक्षी ६ सामान ७ अनाथालय ८ प्रायः ९ दंगली।

* तू खुश है, तू खूब है, तू खुशीकी खानि है। शराबका अहसान अपने ऊपर क्यों लादता है।

(पागल इसलिये कि घड़ियाल उमूमन कोई चार बजाकर बन्द हो जाता है, कोई आठ, हद बारह बजाकर तो अक्सर घड़ियाल रुक जाते हैं, लेकिन गिर्जेका घड़ियाल बजता ही चला जाता है, पागलकी तरह बन्द होता नज़र ही नहीं आता) बिल्ली बेचारी तो घड़ियालकी आवा-ज़को क्या समझती ? लड़का बिल्लीकी तरफ़से खुद ही जवाब देता था "टन, टन, टन, टन, विटंगटन, विटंगटन, "(विटंगटन उस लड़केका नाव था।) घड़ियाल कहता है। टन, टन, टन, टन विटंगटन, विटंगटन लार्डमेयर आफ़१ लंडन" ज़रा खयाल कीजियेगा, यतीमखानेसे भागकर आया हुआ तो ज़रासा लड़का और अपने ख्वाब कहांतक दौड़ा रहा है। घड़ियालकी आवाज़में भी अपने लार्डमेयर होनेके गीत सुन रहा है वाह ! टन, टन, टन, टन, विटंगटन विटंगटन, लार्डमेयर आफ़ लंडन।

इतनेमें लार्डमेयर साहब भी अपने बाग़में हवाखोरी करते वहां आ निकले। लड़केसे पूछा, अरे तु कौन है और क्या बकता है ? लड़का मस्ती और आनन्दभरा जवाब देता है, "लार्डमेयर आफ़ लंडन, लार्डमेयर आफ़ लंडन" बच्चेपर ग़ुस्सा तो क्या आता ? उलटी आज़ादाना२ हालत लड़केकी लार्डमेयरके दिलमें खुब गयी। और आज़ादी भला किस दिलको प्यारी नहीं लगती ? लार्डमेयरने पूछा, स्कूलमें दाखिल होना चाहता है ? लड़केने जवाब दिया, अगर उस्ताद मारा न करें तो। वह लड़का स्कूलमें दाखिल कराया गया। स्कूलमें तरक़्क़ी करते करते फिर रफ़्ता रफ़्ता३ कालेजकी सब जमाअतें४ पास

१-लण्डनका लार्डमेयर २-स्वतन्त्रता की ३-होते होते ४ श्रेणियां।

करके बाइज़्ज़त मेजुएट१ हो गया। इतनेमें लार्डमेयरके मरनेका दिन आ गया। उसके कोई औलाद न थी। लार्डमेयर निहायत ज़ियादा हिस्सा अपनी जायदादका२ इस लड़केको दे गया। यह लड़का इस जायदादको बढ़ाते बढ़ाते एक दिन खुद लार्ड मेयर आफ़ लंडन हो हो गया। आप लार्डमेयरोंकी फ़ेहरिस्तमें इसका नाम पायेंगे।

यह दुनियां और इसका आपके साथ सुलूक आपकी हिम्मत और मनके भावका जवाब है। विटंगटनकी बचपनमें हिम्मत बलन्द३ थी। दिलके भाव ऊँचे और सच्चे थे। इसको वैसा ही फल क्यों न मिलता? नियतपर मुराद मिलती है। जैसा दिलमें भरोगे, वैसा पाओगे। जेसा ज़मीने-खियालमें बोओगे वैसा बाहर काटोगे।

चीनमें एक तालिबेइल्म४ बहुत ही नादार५ था। रातको पढ़नेके वास्ते उसे तेल भी मयस्सर न होता था, जुगुनुओंको इकट्ठा करके एक पतले मलमलके कपड़ेमें बांधकर किताबके ऊपर रख लिया करता और उसकी चमकमें पढ़ा करता था। किसीने कहा कि इतनी मेहनत क्यों करते हो, क्या चीनके वज़ीर हो जाओगे? उसने जवाब दिया कि अगर ताक़ते खियालके मुतअल्लिक़ खुदाके क़ानून सच्चे हैं तो एक रोज़ मैं ज़रूर वज़ीर हो जाऊंगा। चीनकी तवारीख़में देखिये कि एक दिन आया कि यही लड़का वज़ीर बन गया।

तज़किरा आबहयात*में प्रोफेसर आज़ादने एक अजीब वारदात लिखी है। एक दिन लखनऊमें एक शाइर नव्वाब साहब और तमाम

---

१ कालिज की डिगरी (पद) हासिल की।

२ मिलकियत ३ ऊंची ४ विद्यार्थी ५ ग़रीब। * एक किताबका नाम।

दीवान व मुसाहिबोंको१ अपने अशआरसे२ खुश कर रहा था। महलमें नव्वाब साहब देरसे पहुंचे। बेगमोंने पूछा कि देर क्यों हुई। नव्वाब साहबने फ़रमाया कि अजीब३ व ग़रीब चुटकले और शेर व सखुन सुनते रहे। बेगमातने सिफारिश की कि हमको भी सुनवाइयेगा। दूसरे दिन परदा किया गया और शाइर बुलवाया गया। बेगमात बहुत ही महज़ूज़४ हुईं और फ़रमाइश५ की कि महलमें एक कमरा इसको रहनेके लिये दिया जाय। शाइर भांप गया कि अगर मैं महलातमें रहूंगा तो इस ख्यालसे कि मैं मसतूरातको६ देख सकूंगा नव्वाब साहबको नागवार७ गुज़रेगा। नव्वाब साहबको तअम्मुलमें८ देखकर खुद शाइरने गिला९ शुरू किया कि और तो मैं सब बातोंमें अच्छा हूं लेकिन सिर्फ़ एक ही बातकी कसर है, मुझको दिखलाई मुतलक़१० नहीं देता। आंखोंसे माज़ूर११ हूं। शाइरकी यह शिकायत तीर बहदफ़१२ हुई। हीला ठीक उतरा और नव्वाब साहबके दिलमें जो खटका था वह दूर होगया और इजाज़त दे दी कि महलमें एक कमरा इसे रहनेको दिया जाय। लेकिन नापाक शाइर यह धोखा दे रहा था कि मैं अन्धा हूं। दिलमें यह बुरी नियत भरी थी कि इस बहानेसे बेखटके औरतोंको पड़ा झांकूं। पर धोखा तो अञ्जामकार१३ सिवाय अपने आपके और किसीको भी देना मुमकिन१४ नहीं और बुराईमें कामयाबी१५ तो गोया१६ ज़हर मिली शराब है।

---

१ साथियों २ कविता ३ अद्भुत ४ खुश ५ आज्ञा दी ६ स्त्रियों ७ असह्य ८ सोच ९ शिकायत १० बिलकुल ११-बेकार १२-निशाने पर तीरकी तरह लगा १३-आखिरकार १४-सम्भव १५-सफलता १६-मानो

एक रोज़ वक़्त हाजतके[1] लिये बाहर जाना चाहता था। लौंडीसे लोटा पानीका मांगा। लौंडीने कहा, कमरेमें लोटा नहीं है, कहां से लाऊं (जानता है कि ख़ादिम[2] लोग ऐसे मेहमानोंसे दिक़ आ जाते हैं) बाहरको जल्दी लगी थी। रहा न गया। बेइख़्तियार बोल उठा "देखती नहीं है? वह क्या लोटा पड़ा हुआ है।" सब भला कहांतक छिपे। यह सुनते ही लौंडी भागी और बेगम साहबाके पास पहुंचकर कहा कि यह सुआ तो देखता है। अन्धा नहीं है। अपने तईं झूटमूठ अन्धा बनाता है। उसी रोज़ वह महलसे निकाल दिया गया। लेकिन कहते हैं कि दूसरे ही रोज़ वह सच-मुच अन्धा हो गया। कैसा इबरतनाक[3] मुआमला है। जैसा तुम करोगे और ख़याल करोगे वैसा ही होना पड़ेगा।

गर दर दिले तो गुल गुज़रद गुल बाशी।
वर बुलबुले बेक़रार बुलबुल बाशी[4]॥
सौदाय बला रञ्ज बला मी आरद।
अन्देशयेकुल पेशा कुनी कुल बाशी[5]॥

लड़कपनमें अक्सर देखा होगा कि बाज़ लड़के आंखें बन्द करके अन्धे बनकर उलटे चला करते थे। उनकी मायें यह देखकर उनको

१-शौच २-नौकर ३-शिक्षायुक्त।

४-अगर तेरे दिलमें फूल गुज़रेगा तू ख़ुश रहेगा और अगर बेक़रार बुलबुल गुज़रेगी तो बेक़रार रहेगा।

५ बलाका ख़्याल बलाका रंज लाता है। अगर सबकी फ़िक्र इख़्तियार करे तू तो वैसा ही सब होगा तू।

मारती थीं और मना करती थीं कि शुभ शुभ मुरादें मांगो। अन्धोंके स्वांग भरते हो, कहीं अन्धे ही न हो जाओ। सच कहा है—

कृष्ण कृष्ण करती थी मैं ही कृष्ण हो गई।

आपने देख लिया अन्धा कहनेसे अन्धा, वज़ीरके ध्यानसे वज़ीर, लार्डमेयरके खियालसे लार्डमेयर बन जाते हैं। पस अपनी मदद आप करनेके लिये अपनी तरफ़ अपना फ़र्ज़ अदा करनेके लिये सबसे अव्वल ज़रूरी अम्र आप लोगोंके लिये है खियालातकी पाकीज़गी१, बलन्द हिम्मती२, शुभ संस्कार, पवित्रभाव, और "मैं सब कुछ कर सकता हूं" ऐसा खियाल फ़राख३ हौसलगी और इस्तक़लाल४।

गर बफर्क़े मा निहद सदकोहे मेहनत रोज़गार
चीने पेशानी नबीनद गोशये अबूय मा५॥
अगरचे कुतब६ जगहसे टले तो टल जाये।
हिमाला बाद७ की ठोकरसे गो फिसल जाये॥
अगरचे बहर८ भी जुगनूकी दुमसे जल जाये।
और आफ़ताब९ भी क़बले ग़रूब१० ढल जाये॥
कभी न साहबे हिम्मतका हौसला टूटे।
कभी न भूलसे अपनी जबीं११ पे बल आये॥

---

१ पवित्रता २ ऊंची ३ वसीअ, फला हुआ ४ धैर्य ५ अगर ज़माना हमारे सरपर रंजके सैकड़ों पहाड़ रक्खें तो भी हमारे माथेपर बल (चीनें) नहीं पड़ सकते हैं—ध्रुव ७ हवा ८ समुद्र ९ सूर्य १० डूबने हिले ११ मांथा।

आली१ हिम्मती और ख़्यालातकी बलन्दीके यह मानी न समझ लें कि अपने तईं तो तीसमारखां ठान लें और औरोंको हक़ीर२ मानने लगें। हरगिज़ नहीं। बल्कि अपने तईं नेक और बुज़ुर्ग३ बनानेके लिये औरोंकी महज़४ नेकी और बुज़ुर्गीहीको दिलमें जगह देना लाज़िम५ है। बुद्ध भगवान कहा करते थे—"जैसा कोई ख़ियाल करेगा, हो जायगा।" उनके पास दो शख़्स आये। एकने पूछा कि महाराज यह जो मेरा साथी है, दूसरे जन्ममें इसका क्या हाल होगा। यह तो कुत्तेके ख़ियाल रखता है, कुत्तेसे कर्म करता है, क्या अगले जन्ममें कुत्ता न बनेगा? दूसरा पहिलेकी बाबत कहता है कि "यह मेरे साथका हर बातमें बिल्ला है, क्या अगले जन्ममें यह बिल्ला न होगा?" महात्मा बोले कि भाई जैसे तुम्हारे संस्कार (ख़ियाल) होंगे वैसे ही तुमको फल मिलेंगे। लेकिन तुम लोग इस उसूलको६ ग़लतीसे लगा रहे हो। वह तुमको बिल्ला कह रहा है, तुम उसको कुत्ता। अब ग़ौर करना, वह शख़्स जो अपने साथीको कुत्ता देखता है उसका अपना दिल कुत्तेकी सूरत क़बूल कर रहा है। वह ख़ुद ऐसे ख़ियालसे कुत्तेके संस्कार धारण करता जाता है। पस जब ऐसा शख़्स मरेगा तो चूंकि उसके अन्तःकरणमें कुत्ता समा रहा है, लिहाज़ा ख़ुद कुत्ता बनेगा। और इसी तरह अपने पड़ोसीको बिल्ला समझनेवाला ख़ुद बिल्ला बनेगा। इस उसूलको ग़ौरसे देखना। वह नुक़्स जो हम औरोंमें लगाते हैं वह हममें ज़रूर दाख़िल होंगे। राम कहता है कि अपनी मदद आप करनेके लिये आत्मकृपा इस बातकी मुक़्तज़ी७ है

१ बड़ी बलन्द २ तुच्छ ३ बड़ा ४ निरी ५ अवश्य ६ सिद्धान्त ७ चाहनेवाली।

कि हम लोग औरों की नुक़्ताचीनीको[1] छोड़ दें और अपने मुतअल्लिक़[2] भी अरसः[3] ख़ियालमें सिवाय नेकी और खूबीके और कुछ न आने दें। जैसे गुम्बदमेंसे हमारी ही आवाज़ लौटकर आती हुई गूंज बन जाती है, वैसे इस गुम्बद नीलोफ़री (आस्मान) के नीचे हमारे ही ख़ियालात लौटकर असर करते हुए क़िस्मत कहलाते हैं।

बद[4] न बोले ज़ेरे[5] गरदूं[6] गर कोई मेरी सुने।
है यह गुम्बदकी सदा[7] जैसी कहे वैसी सुने॥

अपने ही ख़ियालातको दुरुस्त रक्खो। नाहक फ़लकको[8] नाहन्जार[9] और चर्खको[10] कज[11] रफ़्तार[12] कहना बच्चोंकी तरह गुम्बदको इल्ज़ाम[13] लगाना है। अगर सब कुछ कहें बाहरकी क़िस्मतहीसे है तो शास्त्रविधि निषेध (अम्र व निही) के क़लमातको[14] जगह न देता। जब शास्त्र यह जानता था कि तुम्हारे इख़्तियारमें कुछ नहीं है, सब कुछ क़िस्मत हीहै तो शास्त्रने क्यों कहा कि "यों करो और यों न करो" और तुमपर जवाबदिही किस मन्तक़से[15] आयद[16] की गई।

दरमियाने क़अरे दर्या तख़्तः बन्दम कर दई।
बाज़ मी गोई कि दामन तर मकुन हुशियार बाश[17]॥

---

१ ऐब जोई दोष निकालना २ सम्बन्धमें ३ मैदान ४ बुरा ५ नीचे ६ आसमान ७ गूंज ८ आस्मान ९ कुढंगा १० आस्मान ११ टेढ़ा १२ चलने वाला १३ दोष १४ वाक्यों १५ न्यायशास्त्र, दलील १६ लगाई १७ मुझे तख़्तेसे बांधकर मंझधारमें डाल दिया है, उसपर कहता है कि खबरदार दामन न भिगोना।

तुम्हारे अन्दर वह ताक़त है, कि जो चाहो कर सकते हो। और सच पूछते हो तो राम कहता है।

मैंने माना दहरको हक़ने किया पैदा वले।
मैं वह ख़ालिक़ हूं मेरे "कुन" से ख़ुदा पैदा हुआ १॥
पौरुषाद्दृश्यते सिद्धिः पौरुषाद्धीमतांक्रमः।
दैवमाश्वासनामात्रं दुःख पेलव बुद्धिषु॥

(श्लोकका अर्थ) हिम्मतहीसे कामयाबी होती है और हिम्मतहीसे आक़िलोंके कारोबार चलते हैं। क़िस्मतका लफ़्ज़ तो मुसीबतमें नाज़ुक२ दिलोंके आंसू पोंछनेके लिये है।

परमेश्वर उनकी सहायता करनेको हाज़िर खड़ा है। जो अपनी मदद आप करनेके लिये तैयार हों। यह एक क़ानून क़ुदरत है। यह अटल क़ानून क़ुदरत है कि जब आदमी पूरा अधिकारी (मुस्तहक़) होगा तो जो उसका अधिकार (हक़) है ख़ुदबख़ुद उसको ढूंढ़ लेगा। यहां आग जल रही है, आक्सीजन३ खिंचकर उसके पास आ जायगी। अंग्रेज़ीमें एक मक़ला४ है "पहले तुम लायक़ बनो फिर तुम ख़्वाहिश करो"। राम कहता है कि जब तुम लायक़ होगे तो ख़्वाहिश किये बग़ैर ही मुराद आ मिलेगी।

बांधे हुए हाथोंको व उम्मेद इजाबत ५।
रहते हैं खड़े सैकड़ों मज़मूं६ मेरे आगे॥

---

१ मैंने माना कि ईश्वरने संसारको पैदा किया, लेकिन मैं वह पैदा करने वाला हूं कि मेरे "कुन" ("हो जा" कह देने) से ख़ुदा हुआ।

२ कोमल ३ हवाका एक अवयव जो आगसे जल जाता है ४ कहावत ५ क़बूलियत, स्वीकृति ६ मतलब।

जो पत्थर दीवारमें लगनेके लायक़ है वह बाज़ारमें ;कब रहने पायेगा। जब आप पूरे अधिकारी होंगे तो आपके लायक़ मंसब१ है और आप हैं। मंसबको तलाशमें वक्त मत ज़ाया करो। अपने तईं मनासिब२ बनानेकी फ़िक्र करो।

ना खुने ख़ार आके खुद उक़दा तेरा कर देगा वा।
पहिले पाए शौक़में पैदा कोई छाला तो हो ३॥

जब सूर्यकी तर्फ़ मुंह करके चलते हो तो साया पीछे भागता फिरता है, जब सायेको पकड़ने दौड़ोगे तो साया आगे हटता चला जायगा।

भागती फिरती थी दुनिया जब तलब ४ करते थे हम।
अब जो नफ़रत५ हमने की वह बेक़रार आनेको है॥
गुज़श्तम् अज़सरे मतलब तमाम शुद मतलब।
नक़ाब चिहरये मक़सूद बूद मतलबहा६॥

भिखमंगोंको हर कोई दूर दूर करता है। ग़नी ७ दिलके पास मुरादें खुद सलामीको आती हैं।

सौ बार ग़रज़ होवे तो धो धो पियें क़दम।
क्यों चर्खा८ मेहरो९ माह१० पै मायल११ हुआ है तू॥

---

१ ख़वा आहदेके लायक। २ मनसबके योग्य ३-कांटेका नाख़ून अपने आप तेरी गांठ खोल देगा पहिले शौकके पैरमें कोई छाला तो हो ४-चाह ५-घृणा ६-मैंने ख्वाहिशोंको त्याग दिया, बस मतलब पूरा हो गया। कामनाएं ही असल अभिप्रायके चिहरेका घूंघट बनी हुई थीं। ख्वाहिशें शान्त हो गईं, बहुतसी ख्वाहिशोंमें असली मक़सदका चिहरा ढका हुआ था ७-बेपरवा, सन्तोषी ८-आसमान ९-सूर्य १० चन्द्र ११झुका।

जापानमें तीन तीन सौ चार चार सौ सालके चीढ़ और देवदारके दरख्त देखे जो सिर्फ़ एक एक बालिश्तके बराबर या कुछ जियादः ऊंचे थे। आप खयाल करें कि देवदारके दरख्त कितने बड़े होते हैं। मगर कौन इन दरख्तोंको सदियों[१] तक बढ़नेसे रोक देता है। जब हमने दर्याफ्त किया तो लोगोंने कहा कि हम इन दरख्तोंके पत्तों और टहनियोंको बिलकुल नहीं छेड़ते, बल्कि जड़ काटते रहते हैं, नीचे बढ़ने नहीं देते और क़ायदा है कि जड़ नीचे नहीं जायगी तो दरख्त ऊपर नहीं बढ़ेगा। ऊपर और नीचे (अन्दर और बाहर) दोनोंमें इस क़िस्मका तनासुब[२] है कि जो लोग ऊपर बढ़ना चाहते हैं, दुनियांमें फलना फूलना चाहते हैं उन्हें नीचे अपने अन्दर बातिन (आत्मा) में जड़ें बढ़ानी चाहिये। अन्दर अगर जड़ें न बढ़ेंगी तो दरख्त ऊपर भी न फलेगा।

नफ़स व[३] नय चो फ़रो शुद बुलन्द मी गरदद।
मंसूरसे पूछी किसीने कूचये[४] दिलवर की राह।
चुभ साफ़ दिलमें राह बतलाती जबानेदार[५] है॥
सर हमचु तारे-सबह ब सद दुर कशीदा एम।
आखिर रसीदा एम बखुद आरमीदाएम[६]॥

आत्मकृपा (नवाज़िश ज़ाति) जो राम कहता रहा है इसके मानी

---

१ सैकड़ों वर्ष २ सम्बन्ध ३ सांस जब बांसरीके नीचे गई तो ऊंची होती है ४ गली ५ सूलीकी नोक ६ मालाके डोरेकी तरह हमने अपना सर सौ दानोंके अन्दर खींचा है। आखिर अपनेमें पहुंच गये, वहीं शांति मिली।

किसी तरहकी खुदी१ खुदपसन्दी२ या खुदग़र्ज़ी३ नहीं है। इसके मानी हैं तबियत४ रूहानी५ और अत्मकृपाका जुज़वे६ अज़ीम७ है तौसीए८ दिल। यानी सफ़ाय क़ल्ब९ पैदा करना इस हदतक कि हमारा ज़मीर१० मुल्कभरके ज़मीरका नक़शा हो जाय। शीशा जहांनुमाका११ काम देने लग पड़े। मुल्कभरकी हाजतोंको१२ हम अपने निजकी हाजतमें महसूस१३ करने लग पड़ें। और जब लोगोंकी निगाहमें हम सारे हिन्दुस्तान या दुनियांभरके भलेका काम कर रहे हों हमें वह काम सिर्फ़ निजका काम मालूम दे। पस अपने दिलको ऐसा वसीय१४ और फ़राख१५ करते जाना कि यह दिल सारी क़ौमका दिल हो जाय। आत्म-उन्नति तरक्की ज़ाती है। ज़ाती तरक्की मेअराज१६ है सबके साथ यह हमदर्दी१७ कि

> खूंरगे मजनूंसे निकला फ़स्द लैलीकी जो ली।
> इश्कमें तासीर है पर जज़्बे कामिल चाहिये॥
> पत्तीको फूलको लगा सदमा नसीमका१८।
> शबनमके१९ क़तरे आंखमें तेरी नज़र पड़े॥

जो रामने कहा है आत्मबल वह और लफ़्ज़ोंमें ईश्वरबल ही है। आपकी जो ज़ात हक़ीक़ी२० है वह सबकी ज़ात है और वही अस्लमें खुदाकी ज़ात है।

१-अहंकार २ आत्मश्लाघा ३ स्वार्थ ४ शिक्षा ५ आत्मिक ६ हिस्सा। ७ बड़ा ८ उदारता ९ चित्तकी शुद्धि १० आत्मा ११ दुनियांका दिखलानेवाला १२ जरूरतों १३ जानने लगें १४ बड़ा १५ खुला हुआ १६ सीढ़ी १७ सहवेदना १८ ठंडी हवा १९ ओस २० सच्ची।

* मा नूरे—खुदायेम दरीं दैर फ़ितादा ।
मा आबेहयातेम दरीं जूय रवानेम ॥

यह जिस्म व इस्म१ उस ज़ात हक़ीक़ीके नापायदार२ साय:की तरह हैं। अपने तईं जिस्म व इस्म ठानकर जो काम किया जाता है वह खुदी और खुदग़र्ज़ीका उकसाया हुआ होता है और उसका नतीजा दु:ख और धोखा होता है। लेकिन जो काम मस्ती वहदतमें३ होता है यानी जो काम बहैसियत ज़ात जहानके किया जाता है वह खुदीसे नहीं बल्कि खुदाईसे निकलता है और उसका नतीजा हमेशा राहत४ और कामयाबी होगा। सारे लेक्चरकी ग़रज़ यह है कि बजाय खुदीके खुदाईकी आंखसे सब तअल्लुक़ात५ को देखो और बजाय जिस्म व इस्ममें लंगर डाल बैठनेके ज़ात हक़ीक़ीमें६ घर करो।

बहुत मज़बूत घर है आक़बतका७ दार८ दुनियासे ।
उठा लेना यहांसे अपनी दौलत और वहां रखना ॥

जो शख्स जिस्म व इस्म (जिस्मानियत व नफ़सानियत) की बुनियादपर कारोबारका सिलसिला चला रहा है वह हवाकी नींवपर किला क़ायम करना चाहता है। जीता वही है जो दुनियांकी तरक्क़ी व इक़बाल ज़िल्लत व ज़वाल वग़ैर:को दर्याके झागकी तरह और

* हम खुदाके नूर हैं जो इस संसारमें गिर पड़े हैं या अमृत हैं जो भव-सागरमें बहते हैं।

१ नाम २ बेबुनियाद ३ एकत्वभाव ४ आराम ५ सम्बन्ध, लगाव ६ ईश्वर ७ परलोक ८ घर।

बादलके साय:की तरह गैरहक़ीक़ी१ मानता है और इनका भरोसा नहीं करता।

साय: गर सायए कोहस्त, सुबुक मीबाशद२।

आंखोंवाला सिर्फ वही है जिसकी निगाह नमूद३ दुनियांको छोड़कर अशियाके इक़रार व इन्कारको४ नज़र अन्दाज़५ करके लोगों-की धमकी और तारीफको फाटकर एक हक़ीक़त६ पर जमी रहती है। "नहीं है कुछ भी सिवाय अल्लाहके।" "ब्रह्म ही सत्य है जगत् मिथ्या है।" होशोहवासवाला सिर्फ वही है जो हर वक्त ऐन ख़ूबी कमाल हुस्न यानी ज़ात हक़ीक़ीको देखता हुआ हैरतका७ पुतला हो रहा है सरापा८ तवज्जह बन रहा है।

काश देखो मुझे मुझे देखो।
हर सरे मूसे९ चश्मे१० हैरत११ हो॥
खुप१२ गया जिसके दिलमें हुस्न१३ मेरा।
दंग सकतेका एक आलम१४ था॥

ख्वाबमें किसीको खज़ाना मिला। इस दौलतके भरोसे जो अमीर बने वह अहमक़ है। इसी तरह इस ख्वाब दुनियांकी अशियाके१५ एतबारपर जो जीता है, वह जीता ही मर गया। फ़र्जऊला१६ और आत्मकृपाका कमाल यही है कि—

---

१ कल्पित २ अगर्चे छाया पहाड़की भी हो तो भी हल्की होती है। ३ दिखावा ४ रहने न रहनेको ५ अलहदा ६ असलियत ७ आश्चर्य ८ सरसे पाँवतक ९ रोम रोमसे १० आंख ११ भौंचका १२ समा गया १३ छवि १४ सकते (एक बीमारीका नाम) की तरह अचम्भित हो गया। १५ पदार्थों १६ उत्कृष्ट कर्तव्य।

"तू" को इतना मिटा कि तू न रहे।
और तुझमें दुईकी बू न रहे॥

यह महदूद[1] मावमनो[2] इसका नामतक मिट जाय निशानतक न रहने पाये।

तो मवाश असला कमालईनस्तो वस[3]।
तो खुद हिजाबे खुदी, ऐ दिल! अज़ मियां बरखेज़[4]॥
न दारे आखरत नै दारे दुनिया; दर नज़र दारम।
जि इश्क़तकार चूं मन्सूर बादारे दिगर दारम[5]॥

अनानियतको[6] क़ायम रखकर जो बड़े बनते हैं फिरऔन व नमरूद हैं। अनानियतको मिटानेवाला ख़ुद ख़ुदा अनलहक़ है।

रस्सीमें किसीको सांपका वहम हो गया। अब अगर उसके लिये रस्सी है तो सांप नहीं और सांप है तो रस्सी नहीं। एक ही रहेगा। ख़ुदी है वो ख़ुदाई नहीं, ख़ुदाई है तो ख़ुदी नहीं।

तीरे निगाह चूं नशश्त मसकने खुद जा गुज़ाश्त।
ताक़ते मेहमां नदाश्त, खाना ब मेहमां गुज़ाश्त[7]॥
ता शाना सिफ़त सर तहे आरा न निही।
हरगिज़ ब सरे ज़ुल्फ़े निगारे न रसी[7]॥

---

१ घिरी हुई २ खुदी, अहङ्कार ३ तू न रहे बस यह कमाल है ४ ऐ दिल तू अपना परदा आप है बीचसे उठ जा ५ मेरी नजरमें लोक परलोक कुछ नहीं। तेरे इश्कमें मंसूरकी तरह मैं और ही सूलीसे काम रखता हूं। ६ अहंकार ७ निगाहका तीर बैठते ही जानने अपना घर छोड़ दिया। मिहमानकी ताक़त न रखती थी। मिहमानके लिए घर छोड़ दिया।

जबतक कंघेकी तरह सर आरेके नीचे न रक्खोगे यारकी ज़ुल्फ़तक नहीं पहुंच सकते।

ता सुर्मा सिफ़त सूदह न गर्दी तहे संग।
हरगिज़ ब सफ़ा चश्म निगारे न रसी॥

जबतक सुर्मेकी तरह पत्थर तले पिस न लोगे, यार हक़ीक़ीकी आंखोंतक नहीं पहुंच सकते। अगर कहो कि आंखें नहीं तो यारके कानोंतक ही किसी तरह रसाई हासिल कर लें तो भी जबतक खुद-ग़र्ज़ी दूर न होगी, जबतक यह अहंकार मर न लेगा, जबतक खुदी गुम न होगी, यारके कानोंतक नहीं पहुंच सकते। क्योंकि कानमें रहता है मोती ज़रा उसकी कैफ़ियत देख लो।

ता हमचो दुरे सुफ़्ता न गरदी बातार।
हरगिज़ ब विना गोशे निगारे न रसी॥

जबतक मोतीकी तरहसे तारसे न छिदोगे, यारके कानतक भी हरगिज़ नहीं पहुंच सकते।

ता ख़ाके तुरा कूज़: न साज़न्द कलाल।
हरगिज़ बलबे लाले निगारे न रसी[१]।
पसज़ मुर्दन बनाये जायंगे साग़िर मेरी गिलके।
लबे जानांके चोसे खूब लेंगे ख़ाकमें मिलके[२]॥

---

१ जबतक तेरी मिट्टीके आबख़ोरे कुम्हार न बनावेंगे तबतक यारके लाल होंटतक नहीं पहुंच सकता २ मरनेके बाद मेरी मिट्टीके प्याले बनाये जायंगे तब हम मिट्टीमें मिलकर यारके होंठके खूब बोसे लेंगे।

इन अशआरमें आंख कान लब वग़ैरःसे यह इशारा नहीं है कि परमेश्वरके आंख कान नाक हैं। इसका मतलब यह है, जैसे एक ही दिलदारको खुश करनेके लिये उसके कानको राग सुना सकते हैं या उसकी आंखको सुन्दर रूप दिखा सकते हैं या नाकको फूल सुंघा सकते हैं वग़ैरः। कोई किसी ज़रियःसे इस महबूबको खुश कर सकता है, कोई किसी और ज़रियःसे। लेकिन कोई तरीक़ा ऐसा नहीं कि जिसमें बेरूनी१ खुदीकी मौतके बग़ैर काम निकल सके। बेशक, कोई वैष्णव बनकर परमेश्वरको पूज सकता है, कोई शैव रहकर भक्ति कर सकता है। कोई मुसलमानकी हैसियतमें परस्तिशर करे, कोई ईसाईकी हालतमें बन्दगी करे; लेकिन वैष्णव, शैव, मुसलमान, ईसाई वग़ैरः कोई हो, कामयाबो दीदारे३ हक़्क़ वस्लेख़ुदा४ तभी होगा जब नफ़सानी५ ज़िन्दगीकी मौत हो लेगी।

अगर कहो कि ज़ुल्फ आंख कान और लबतक नहीं तो काशयारके हाथतक ही हम पहुंचते।

तो हमचो क़लम सर न निही दरतहे कार्द।
हरगिज़ ब सर अंगुश्ते निगारे न रसी॥

जबतक मानिन्द क़लमके सर छुरीके नीचे क़लम६ न करवा लो हरगिज़ सरे अंगुश्त७ यारतक नहीं पहुंच सकते। अगर कहो कि हमें सबसे नीचे रहना मंज़ूर है, यारके पावोंतक ही किसी तरह रसाई हो जाय तो—

---

१ बाहरी २ पूजन ३ ईश्वरका दर्शन ४ मुलाकात ५ खुदगर्ज़ीकी ६ कटवा न लो ७ उंगलियोंके पोर।

ता हमचो हिना सूदह न गरदी तहे संग।
हरगिज़ बकफ़े पाये निगारे न रसी ॥

जबतक मिस्ल मेंहदीके पत्थरके नीचे घिस न जाओ हरगिज़ कफ़े पाय[1] यारतक नहीं पहुंच सकते। अत्वाःज।

तागुलशुदा बेबुरीदा न गरदी अज़शाख़।
हरगिज बगुले हुस्न निगारे न रसी ॥

जबतक फूलकी तरह शाख़ (ताल्लुक़ात) से काटे न जाओ, यारतक किसी सूरतसे पहुंच नहीं सकते।

बांसुरीसे पूछा, अरी बांसुरी, क्या बात है कि वह कृष्ण, वह प्यारा मुरलीमनोहर जिसके अबरूके[2] इशारेसे शाहनशाह कांपते[3] हैं भीष्म अर्जुन दुर्योधन ऐसे महाराजाधिराज जिसके चरणोंके छूनेके भूखे प्यासे हैं, जिसकी ख़ाक पा (ब्रजरज) को अभीतक राजा महाराजा लोग जाकर मस्तकपर धारण करते हैं और माहजबीनाने[4] सीमीं साक़[5] जिसके मृदुमुसकान (तबस्सुमेशीरी) को देखनेके लिये तरसते हैं, वह कृष्ण तुझको चाह और प्यारसे ख़ुद बारम्बार चूमता है। एक ज़रासी बांसकी लकड़ी, तूने ऐसे बड़े भगवान कृष्णपर क्या जादू डाला? तुझमें यह क़रामात कहांसे आ गई? बांसुरीने जवाब दिया कि मैं सरसे पांवतक (ख़ुदी और अहंकारको दूर करके) बीचसे ख़ाली हो गई। नतीजा यह कि वह कृष्ण ख़ुद आनकर मुझे बोसे देता है। जिसके चरणोंके चूमनेको लोग तरसते हैं, वह शौक़से

1 पांवके तलुए 2 भौं 3 डरते 4 5 चांदी जैसी पिंडलियोंवाले चन्द्रमुख।

रामबादशाहके छः हुक्मनामे

स्वामी रामतीर्थ (१९०५)

वणिक् प्रेस, कलकत्ता।

मुझको चूमता है। मुझसे दिलकश१ नग़मे२ क्यों न निकलें। मुझमें रामका दम है, मेरी सुरीली अवाज़ उसके स्वर हैं।

तेही ज़ेख़ेश चो नय शो ज़े पाय तासरे खुद।
वगरन वोसे लबे लाले यार आमां नेस्त ३॥

इस दुनियांसे मुंह मोड़कर आरिफ़४ लोग हयात५ अवदीको पाते हैं।

धीराः प्रेत्यास्माल्लोका दमृता भवन्ति ६।

ओ३म्! ओ३म्!! ओ३म्!!!

ब्रह्मचर्य

जो नर राम नाम ले नाहीं।
सो नर खर७ कूकर शूकर सम वृथा जिये जगमाहीं।

ओ३म्! ओ३म्!! ओ३म्!!!

तुझे देखें तो फिर औरोंको किन आंखोंसे हम देखें।
यह आंखें फूट जाएं गर्चे इन आंखोंसे हम देखें॥

---

१ दिल खींचनेवाले २गीत ३ बांसुरीकी तरह सरसे पांवतक अपनेसे खाली हो जा, अन्यथा यारके लाल होंठका चूमना सहज नहीं है। ४ महात्मा ५ अमरत्व मोक्ष ६ धीर पुरुष इस लोकके बाद मोक्ष पाते हैं ७ गधा।

जिन अर्गन१ होते चाह चली खर-कूकन की—धिक्कार उसे।
जिन खायके अमृत वान्छा रही लिद पशुवनकी—धिक्कार उसे॥
जिन पायके राजको इच्छा रही चक्की चाटनको—धिक्कार उसे।
जिन पायके ज्ञानको इच्छा रही जग विषयनकी—धिक्कार उसे॥

ओ, हो, हो, हो!

जीता तो वही है, जो सत्में, नारायणमें, राममें रहता, सहता, चलता, फिरता और सांस लेता है। ज़िन्दगी तो यही है। आप कहोगे कि तुम बस आनन्द ही आनन्द बोलते हो। दुनियांके कामकाज कैसे होंगे और दुःख दर्द कैसे मिटेंगे। लेकिन—

हरजा२ कि सुल्तां ख़ीमः ज़द गौग़ा नमानद आमरा।

जहांपर सत्, प्रेम, नारायणका निवास है, जिस हृदयमें हरि नाम ब्रह्म बस जावे तो वहां शोक, मोह, दुःख, दर्द वग़ैरःका क्या काम? क्या बादशाहके ख़ीमे३के सामने लुंडी बुच्ची कोई फटक सकती है? सूर्य जिस वक्त उदय हो जाता है तो कोई भी सोया नहीं रहता। पशुओंकी भी आंखें खुल जाती हैं, दर्या जो बर्फ़ोंकी चादरें ओढ़े पड़े थे उन चादरोंको फेंककर चल पड़ते हैं, उसी तरह सूर्योंका सूर्य आत्मदेव जब आपके हृदयमें निवास करता है तो वहां कैसे शोक, मोह और दुःख ठहर सकते हैं—हरगिज़ नहीं! हरगिज़ नहीं!! दीपक जल पड़नेसे पतंगे आप ही आप उसके इर्द-गिर्द आना शुरू हो जाते हैं। चश्मा४ जहां वह निकलता है, प्यास बुझानेवाले ख़ुदबख़ुद जाने

१ एक सुहावना बाजा २ जहाँ बादशाह डेरा डाल दे, वहां आम लोगोंका शोर नहीं रहता ३ डेरे ४झरना।

लग पड़ते हैं। फूल जहां खुद खिल पड़ा, भौंरे आप ही आप उधर खिंचकर चले आते हैं। उसी तरह जिस मुल्कमें धर्म-ईश्वरका नाम रोशन हो जाता है तो दुनियांकी न्यामतें१ संसारका इक़बाल२ आप ही खिंचा हुआ उस मुल्कमें चला आता है। यही क़ुदरतका क़ानून है—यही प्रकृतिका नियम है। ओ३म, ओ३म, ओ३म्! बेशक, राम*को सिवाय आनन्दके और बात नहीं आती। बादशाहका खीमा लग जानेपर चोरचकार नहीं आने पाते, उसी तरह आनन्दका डेरा जम जानेसे शोक और दुःख ठहर ही नहीं सकते। पस, आनन्दके सिवाय रामसे और क्या निकले। ओ३म् आनन्द! आनन्द!! आनन्द!!! लेकिन आनन्दका डेरा डालनेसे पहले ज़मीनका साफ़ कर लेना भी ज़रूरी है। लिहाज़ा३ आज राम, जिसके यहां आनन्दकी बादशाहतके सिवाय कुछ और है ही नहीं, झाड़ू लेकर झाड़ने-बुहारनेका काम कर रहा है। जिस तरह दूध या किसी और अच्छी चीज़को रखनेके लिए बरतनका साफ़ कर लेना ज़रूरी है इसी तरह आनन्दको हृदयमें रखनेके लिए हृदयका साफ़ कर लेना भी ज़रूरी है, सो आज राम इस सफ़ाईका यत्न बतलायेगा। लोग कहते हैं कि घीके खानेसे ताक़त आती है मगर जबतक तप दूर न हो ले घी मुज़िर४ ही मुज़िर है, कड़वी कुनैन या चिरायता या गिलोय५ खाये बग़ैर बुख़ार दूर न होगा; यानी जबतक कि मन पवित्र और शुद्ध न होगा, ज्ञानका रंग हरगिज़ न चढ़ेगा।

---

१ उत्तम पदार्थ २ ऋद्धि सिद्धि ३ इसलिये ४ नुकसान करनेवाला ५ गुरुच, गुडूची एक लता औषधि * स्वामीजी अपना नाम (राम) इतना ही लेते थे।

*ओरां बचश्म पाक तवांदीद चूं हिलाल ।
हरदीदा जल्वगाहे आं माह पारा नेस्त ॥

जब राम पहाड़ोंपर था तो उसने एक दिन एक शख़्सको देखा कि गुलाबका एक ख़ूबसूरत फूल नाकतक ले गया और चिल्ला उठा। क्या था? इस सुन्दर फूलमें एक शहदकी मक्खी बैठी थी, जिसने उस शख़्सकी नाककी नोंकमें एक डङ्क मारा, इसी वजहसे वह चिल्ला उठा और मारे दर्दके बेताब१ होगया और फूल हाथसे गिर पड़ा। इसी तरह तमाम ख़ाहिशात नफ़सानी और जज़बात हैवानी२ देखनेमें उस गुलाबके फूलकी तरह ख़ूबसूरत और दिलफ़रेब३ मालूम होते हैं मगर उनके बीचमें दरहक़ीक़त एक ज़हरीली भिड़ बैठी है जो बग़ैर डङ्क मारे न रहेगी। आप समझते हैं कि हम सुन्दर सुन्दर फूलों और ऐशोंको भोग रहे हैं मगर दरहक़ीक़त वह ज़हर जो उनके अन्दर है आपको भोगे बग़ैर न रहेगा। दुनियांदार जिसको मज़ा या स्वाद कहते हैं वह अपना ज़हरीला असर पैदा किये बग़ैर भला कब रह सकता है? हाय! आज भीष्मके देशमें ब्रह्मचर्यपर दो बातें कहनी पड़ती हैं! उस भीष्मको ब्रह्मचर्यके तोड़नेके लिए ऋषि मुनि और सौतेली मां उपदेश करती है जिसकी ख़ातिर उसने ब्रह्मचर्यकी प्रतिज्ञा ली, यानी अहद किया था। वज़ीर, अमीर, ऋषि, मुनि, सब इसरार४ करते हैं कि तुम ब्रह्मचर्यको तोड़ दो। तुम्हारी शादी

* साफ आंखें मिस्ल द्वितीयाके चांद देख सकती हैं, हर आंखें उस दिव्य स्वरूपको नहीं देख सकतीं १ बेचैन २ विषय-वासनायें ३ भुलानेवाले ४ हठ।

करनेसे खान्दानकी नस्ल क़ायम रहेगी, राज बना रहेगा, वग़ैरः वग़ैरः। मगर नौजवान भीष्म उनफ़वाने१ शावाब२में जब कि शाज़३ नादिर ही कोई जवान होगा कि जिसका दिल ज़ाहरी आब-ताव४ और दिलफ़रेब खत्तो५ खालके दामे६ तज़वीरमें न फंसता हो। जवांमर्द भीष्म—शूरवीर भीष्म यों जवाब देता है, दोनों जहान७को तर्क करना, बिहिश्त८की हुक्मरानी९ छोड़ देना, बल्कि उनसे भी कुछ बढ़कर हो तो उसे न लेना मंजूर है, लेकिन सत्‌से जुदा होना गवारा न करूंगा। ख्वाह१० ज़मीन अपनी खासियत११ (बू) को, पानी अपनी खासियत (ज़ायक़ा) को, रोशनी अपनी खासियत (इज़हार अलवान१२) को, हवा अपने गुण (लामसा१३) को, आफ़ताव१४ अपने जलाल१५ को, आग अपनी हरारत१६ को, चांद अपनी ठंडकको, आकाश अपने धर्म (आवाज़) को, इन्द्र अपनी हशमत १७को, यमराज अदूल१८ को छोड़ दें, लेकिन मैं सचाईको हरगिज़ १९ नहीं छोड़ूंगा। तीनों लोकोंको करूं त्याग और वैकुंठका राज छोड़ दूं, पर नहीं मैं छोड़ता सत्‌का मेअराज२०। पंचतत्व, चांद, सूर्य, इन्द्र और यम दें छोड़ खासियत अपनी मगर सत्‌ मेरा सरताज२१।

हनुमानका नाम लेने और ध्यान करनेसे लोगोंमें बहादुरी और

---

१ शुरू, नई २ जवानी ३ बहुत कम, शायद ही ४ चमकदमक ५ खूबसूरती ६ मकड़ेका जाल ७ लोकों ८ वैकुंठ ९ राज्य १० चाहे ११ स्वभाव १२ रंगोंको जाहिर करना १३ छूना १४ सूर्य १५ तेज १६ गर्मी १७ विभव १८ इन्साफ १९ कभी भी २० ऊंचाई २१ शिरोमणि।

वीरता आ जाती है। हनुमानको महावीर किसने बनाया? इसी ब्रह्मचर्यने। मेघनादको मारनेकी किसीमें ताव१ न थी, मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान रामचन्दने यह मर्यादा दिखलाई कि गो मैं खुद राम हूं मगर मैं भी मेघनादको नहीं मार सकता। उसको वही मार सकेगा कि १२ वर्षतक जिसके दिलमें किसी क़िस्मका अपवित्र विचार यानी नापाक खयाल न गुज़रा हो। और वह लक्ष्मणजी थे। जिन जिन लोगोंने पवित्रता यानी इफ्फ़तको छोड़ा उनकी हालत बदतर२ होने लगी। जय (फ़तह) उस शख्सकी कभी नहीं हो सकती जिसका दिल पवित्र नहीं है। पृथ्वीराज३ जब उस मैदानेजंगको चला जिसमें यह सदियों४ तकके लिए हिन्दुओंकी गुलामी शुरू हो गई, लिखा है कि चलतेवक्त, अपनी कमर महारानीसे कसवाके आया था। नैपोलियन५ जैसा मर्देमैदान६ जब अपने मेअराज७के बाला तरीं८ ज़ीनेसे९ गिरा, अड़ड़ड़ धम! मज़कूर१० है कि मअरके११को जानेसे पहले ही वह अपना खून आप कर चुका था। खून क्या लाल ही होता है, नहीं नहीं, सफ़ेद भी होता है। पानी उस मैदान जंगसे पहली शामको एक चाह१२में अपने तईं पहले ही गिरा चुका था। अभिमन्यु कुमार जैसा महजमाल१३ और मिहरज-लाल१४ बेमिस्ल१५ नौजवान जब उस कुरुक्षेत्र भूमिमें कुर्बान१६ हुआ और उस

---

१ ताक़त २ ज्यादह खराब ३ हिन्दुओंका आख़ीर राजा ४ सैकड़ों वर्ष ५ फ्रांसका बड़ा शूरवीर राजा जो पराक्रममें अपने समयमें एक ही था ६ बहादुर रणवीर ७ सीढ़ी ८ सबसे ऊंचे ९ दर्जा १० कहा गया ११ लड़ाईका मैदान १२ कुंआँ १३ चन्द्रमासा खूबसूरत १४ सूर्यसा तेजस्वी १५ अद्वितीय १६ भेंट।

लड़ाईमें काम आया कि जहांसे भारतके क्षत्रिय शूरवीरोंका बीज उड़ गया तो लड़ाईसे पहले अभिमन्यु क्षत्रिय नस्लका बीज डालकर आ रहा था। राम जब प्रोफ़ेसर था तब उसने पास और ग़ैरपास शुदा लड़कोंकी एक फ़िहरिस्त बनाई थी और उनके अन्दरूनी१ हालात और चालचलनसे यह नतीजा निकाला था कि जो लड़के इम्तिहानके दिनों या उसके कुछ दिनों पहले विषयोंमें फंस जाते थे वह इम्तिहानमें अक्सर फ़ेल यानी नाकामयाब होते थे। ख़्वाह वह सालभर दर्जे (जमाअत) में अच्छे क्यों न रहे हों। और वे लड़के जिनका दिल इम्तिहानके दिनों यकसूर और पाक रहा करता था, वे ही पास और कामयाब होते थे। बाइबल३में हिम्मत और बहादुरीमें ज़रबुलमसल४ साम्सन हुआ है। मगर जब उसने औरतकी आंखोंकी शराब ज़हरआलूद५को चक्खा तो उसकी कुल बहादुरी और शहज़ोरीको उड़ते ज़रा देर न लगी। एक यती सूरमा कहता है—

"My strength is the strength of ton, because my heart is pure. I never felt the kiss of love, nor maiden's hand is mine."६

यानी—दस जवानोंकी मुझमें है हिम्मत। क्योंकि दिलमें है इफ्फ़त व असमत७।

---

१ भीतरी २ एक तरफ ३ ईसाइयोंकी धर्मपुस्तक ४-कहावतकी तौरपर ५ जहर मिली हुई ६ मेरा बल दसके बलके बराबर है क्योंकि मेरा हृदय पवित्र है, न मैंने कभी कामवश अधरपान ही किया और न तरुणीके हाथका स्पर्श ही ७ पाकीज़गी।

जैसे तेल बत्तीके ऊपर चढ़ता हुआ रोशनीमें बदल जाता है वैसे ही वह ताक़त जिसका नीचेकी तरफ़ रुजहान१ है अगर ऊपरकी तरफ़ जाने लग पड़े यानी ऊर्द्ध रेतस् बन जाय तो जज़बात२ वाली ताक़त नूरकुल३ और सुरूरमुतलक़में४ बदल जाती है। पोलीटि-कल इकानोमी५ (इल्मरयासत मदन) में अक्सर असहाबने६ पढ़ा होगा, नेचरल फ़िलासफ़ी७ वालोंकी तहक़ीक़ातसे जो बदी ही८ नतीजा बरामद९ होता है तौज़ीह१० के साथ पेश किया गया है जिसमें यह दिखलाया है कि किसी मुल्कमें आबादीका बढ़ जाना और बहबूदीका क़ायम रहना एक ही वक्त में ग़ैर मुमकिन है, एक दूसरेके लिये मुतज़ाद११ है। अगर बागीचा छोड़ा न जाय और दरख्तों-की काट-छांट न की जाय तो थोड़े ही दिनोंमें बाग़ बन हो जायगा, सब रास्ता बन्द। इसी तरह क़ौमी अमन१२ और रौनक़को क़ायम रखनेके लिये तरीक़ा अखलाकी१३ (Ethical Process) जिसको हक्सले* ने तरीक़ा गुलिस्तानी१४ (Horticultural Process)से निसबत दी है इस्तअमाल१५ में लाना पड़ता है यानी आबादीको एक अन्दाज़से ज़्यादह न बढ़ने देना लाज़िम१६ आता है—ख्वाह तारकुल-वतनी१७ (Emigration) से हासिल हो, ख्वाह औलाद कम पैदा करनेसे। जब सीधी तरहसे कोई बात समझमें नहीं आती तो डंडेके

१ बहाव २ आकर्षण ३ पूर्ण तेज ४ परम आनन्द ५ राजनीतिज्ञता ६ साहबों ७ पदार्थ विज्ञान ८ प्रत्यक्ष ९ निकलता है १० साफ तौरपर। ११ विरुद्ध १२ चैनचान। शांति १३ नीतिविषय १४-उद्यानविद्या-पुष्पवाटिका विषय १५ बर्ताव काम १६ जरूरी १७ दूसरे देशको जाना, स्वदेशत्याग।

* विलायतके एक बड़े विज्ञानवेत्ताका नाम है।

ज़ोरसे सिखलाई जाती है। वहशियोंमें पहले जानवरोंकी तरह मां बहनका इम्तियाज़१ न था मगर रफ़्ता-रफ़्तार२ वह इस क़ानूनको समझने लगे और मां बहन वग़ैरः क़रीबी रिश्तेदारोंमें शादी विवाहका रिवाज बन्द कर दिया। बाज़ हरकात३ व खयालको हैवानी४ नाम देकर हक़ीर५ क़रार दिया जाता है। मगर इन्साफ़की निगाहसे देखा जाय तो इन्सानकी बनिस्बत हैवान ज़्यादह पाक और पवित्र हैं। लेकिन वह जज़बात हैवानोंको बदनाम करनेके लायक़ भी हैं। वजह यह है कि गो इन्सानोंकी निस्बत तो हैवान ब्रह्मचर्यको ज्यादह बर्तावमें रखते हैं-लेकिन नस्ल धड़ाधड़ बढ़ाते चले जाते हैं। जिसका नतीजा (Struggle for Life) जंग व जलदद६ और जहद७ व जिहद बराय८ ज़िन्दगी होता है, हैवानोंकी औलाद सिर्फ़ लड़ने मरने और कमज़ोरोंके नाबूद९ होने और बाज़ ताक़तवरोंके बच निकलनेकी बदौलत क़ायम रहती है। हैफ़१० है उन इन्सानोंपर कि जो न सिर्फ़ हैवानोंकी तरह औलादको पैदा करते जानेमें बेतमोज़ हैं बल्कि हैवानोंसे बढ़कर वक़्त बेवक़्त अपना सफ़ेद खून लज्ज़तके वास्ते बहानेको कमरबस्ता हैं। जिस वक़्त हमलोग यानी आर्यन लोग इस देशमें आए उस वक़्त हमको ज़रूरत थी कि हमारी औलाद और तादाद ज़्यादह हो, इस वास्ते विवाहके समय इस क़िस्मकी प्रार्थना की जाती थी कि इस पुत्रीके दस पुत्र हों, मगर इन दिनों दस पुत्रोंकी ख्वाहिश ठीक नहीं है। तुम कहते हो कि मरनेके बाद

---

१ तमीज, फ़रक २ होते होते ३ चालें ४ पशुवत् ५ तुच्छ ६-लड़ाई-भिड़ाई ७ कोशिश ८ वास्ते ९ लोप १० अफसोस।

तुम्हें स्वर्गमें पुत्र पहुंचायेंगे, मगर अब तो जीते जी यह लड़के, जिन्हें तुम पेटभर रोटी नहीं दे सकते, तुम्हारे अज़ाब यानी नरकका बाइस हो रहे हैं। यारो, उधारके पीछे नक़दको क्यों छोड़ते हो। इस क़िस्मका प्रश्न अर्जुनने भगवान कृष्णसे गीतामें किया था कि पिण्ड कौन देगा? और पितृ किस तरह स्वर्गमें पहुंचेंगे? कृष्णने जो जवाब दिया है उसको भगवद्गीताके दूसरे अध्यायमें ४२ से लेकर ४६ श्लोकतक अपने अपने घरोंमें जाकर देख लो। भगवन्! स्वर्ग कोई मुक्ति तो नहीं है; स्वर्गके बाद तो फिर यहां आना पड़ता है। स्वर्ग या जन्नतके बारेमें क्या ख़ूब कहा है:—

[1]जन्नत परस्त शेख़ है कब हक़ परस्त है।
हूरों पै मर रहा है यह शहवत परस्त है॥

प्यारो! अगर तुम आबादीके कम करनेमें आप कोशिश न करोगे तो क़ुदरत अपने जङ्गली तरीक़े (Wild Process) को काममें लायेगी, यानी तराश[2] ख़राश करना शुरू कर देगी-जैसा कि महर्षि वशिष्ठजीने फ़रमाया है (१) वबा[3] (२) क़हत[4] (३) ज़लज़ला[5] (४) जङ्ग[6] के ज़रीये काट-छांट शुरू हो जायगी। अगर ख़ाना जंगियां अकाल और प्लेग वग़ैरः नामंजूर हैं तो इफ़्फ़त[7] अस-मत[8] पाकीज़ा[9] दिली और पाक किरदार[10] को अमलमें लाओ। मुल्कोंमें इत्तफ़ाक[11] और क़ौमी इत्तहाद[12] हरगिज़ क़ायम नहीं

---

१ जो वैकुंठका अभिलाषी है, वह ब्रह्मका उपासक कैसा? वह तो अप्सरा-ओंकी इच्छा रखता है—कामातुर है, २-काट-छांट ३-मरी ४-दुर्भिक्ष, अकाल ५-भूकम्प ६-लड़ाई ७-पवित्रता ८-ब्रह्मचर्य ९-पवित्र १०-कर्म ११-मेल १२-एका।

रह सकता, जबतक कि आबादीकी पैदायश और ज़मीनकी अमली पैदावारमें दुरुस्त मुनासिबत न रहे। दुनियांमें कोई मुल्क ऐसा नहीं है जो इफ़लास१ में हिन्दुस्तानसे कम हो और आबादीमें इससे ज़्यादह। ऐसी हालतमें इनाद२ फ़साद और ख़ुदग़र्ज़ी३ भला क्योंकर दूर हो सकती हैं? और इत्तफ़ाक़ और इत्तहाद क्योंकर क़ायम रह सकता है? दो कुत्तोंके बीचमें एक रोटीका टुकड़ा डाल-कर कहते हो कि मत लड़ो। भला, यह कैसे मुमकिन है? इस सूरत-में इत्तफ़ाक़ और इत्तहादका उपदेश करना लेक्चरबाज़ीका मज़हका४ उड़ाना और उपदेशका मख़ौल५ करना है। एक गोशालामें दश गायें हों और चारा सिर्फ़ एकके लिये हो तो गायें ऐसी हलीम६ सुलहप-सन्द७ व बेज़ुबान जानवर भी आपसमें लड़ने-मरने बग़ैर नहीं रह सकतीं। भला, भूखे मरते बाशन्दगाने८ हिन्द९ कैसे सुलह और सफ़ाई क़ायम रख सकते हैं? इल्मे तबीआत१० में यह अम्र तहक़ीक शुदा११ है कि किसी जिस्मके (Equilibrium१२) इन्तज़ाम व क़यामके लिये ज़रूरी है कि एक एक ज़र्रा१३ या जुज़की१४ गरदिश जुम्बिश१५ अन्दरूनी१६ के लिये इस क़दर जगह हो कि दूसरे ज़र्रोंके गर्दिश व जुम्बिशमें फ़र्क़ न पड़ने पावे। अब भला बताओ कि जिस मुल्कमें एक आदमीके पेटभर खानेसे बाक़ी दश आदमी नीम१७ सेर या भूखे

१-ग़रीबी २-झगड़े-बखेड़े ३ स्वार्थपरता, अपना मतलब ४ ठठ्ठा ५ हंसी ६ नम्र, सीधी ७ मिलनसार ८ रहनेवाले, निवासी ९ हिन्दुस्तान १० विज्ञान-विद्या ११ किया गया। १२ तुल्यता, समता १३ परमाणु, अवयव १४ भाग, हिस्सा, अंश १५ चलना फिरना १६ भीतरी १७ आधे पेट।

रह जायं, उस मुल्कके अजज़ा एक दूसरेके मुज़ाहिम१ क्यों न हों ? और ऐसे मुल्कका सुकून२ (Equilibrium) इन्तज़ाम व क़याम कैसे क़ायम रह सकता है ? क्या तुम हिन्दुस्तानको कलकत्तेकी काल-कोठरी (Black Hole) बनाए बग़ैर बाज़ न आओगे३ ? जो चीज़ निकम्मी हो जाती है, वह मिस्ल उस लेम्पके नीचे उतार दी जाती है, जो अभी उतार दिया गया है (जो लेम्प मेज़पर रखा हुआ था उसकी चिमनी सियाह हो गई थी, इस वजहसे वह लेम्प मेज़से नीचे उसी वक्त, उतारा गया था)—आख़िर कब समझोगे ? ताक़त इन्सानीको इस तरह ज़ायल४ मत करो कि जिससे तुम्हारा भी नुक़सान हो और मुल्ककी भी बरबादी हो। इस ताक़तको सुरूर५ यज़दानी६ और ताक़त रूहानीमें७ बदल दो। दुनियांका सबसे बड़ा रियाजीदां८ "सर आइज़क न्यूटन" ८० सालसे ज़ायद उम्रतक जिया और वह ब्रह्मचर्य्यकी ज़िन्दगी बसर करता था। दुनियांका तक़रीबन९ सबसे बड़ा फ़िलासफ़र१० कैंट बहुत बड़ी उम्रतक जिया और वह ब्रह्मचारी था। हरबर्ट स्पेन्सर और स्वीडनबर्ग जैसे दुनियांके ख़यालोंको पलटा देनेवाले ब्रह्मचारी हुए। बाज़ अंग्रेज़ी अख़बारों वग़ैरःने यह ख़याल उड़ा रक्खा है कि ब्रह्मचर्यकी ज़िन्दगी उम्रको घटाती है। तहक़ीक़ातसे मालूम होगा कि यह नतीजा पेरिस११ और एडिनबरा१२में चन्द सालोंकी ख़ास मरदुमशुमारीकी रिपोर्टोंसे अख़ज़१३ किया

---

१ तकलीफदिह २ आराम ३-न मानोगे ४-कम ५-६-ब्रह्मानन्द ७-आत्मिक ८-इल्म हिसाब जाननेवाला ९-क़रीब क़रीब १०-तत्त्वज्ञानी ११-फ्रांसकी राजधानी १२-विलायतके एक शहरका नाम १३-निकाला।

गया था। अब जिसमें ज़रा भी तमीज़ है अगर ग़ौर करे तो देख सकता है कि पेरिस और एडिनबरामें उन्हीं लोगोंकी शादी नहीं होती जो बीमार हों या नादार हों, बेकार हों या दीगर१ तरीक़े पर ख्वारोज़ार२ हों, पस उन मुल्कोंमें अदमइज़दवाज३ या तन्हाईकी ज़िन्दगी (Life of celibacy) जल्दी मौतका बाइस४ नहीं है, बल्कि मौतकी आमद आमद अदमइज़दवाजका बाइस होती है। और यह ग़ैर-शादीशुदा५ लो, जो रूहानी६ और अक़ली शग़ल७से आरी८ हैं, ब्रह्मचारी नहीं कहला सकते। बस, ब्रह्मचर्यपर मरदुमशुमारीके रूपसे एतराज़९ करना बिल्कुल बेजा है। अब हम दो-एक अमेरिका देशके ब्रह्मचर्यकी ज़िन्दगी बसर करनेवालोंका हाल सुनाकर ख़त्म करेंगे। हमारे भारतकी विद्याको विदेशियोंने हासिल करके उससे लाभ उठाया और हम वैसे ही कोरेके कोरे रहे जाते हैं, यह कैसे अफ़सोसकी बात है। हमारे बापने कुँआं खुदवाया है, इसके कहनेसे हमारी प्यास नहीं जायगी। प्यास तो पानीहीके पीनेसे जायगी। इसी तरह शास्त्रोंपर अमल करनेसे आनन्द होगा। अमेरिकाके सबसे बड़े मुसन्निफ़१० एमर्सन (Emerson) का गुरु ब्रह्मचर्यका पालन करनेवाला थोरो (Thoro) भगवद्गीताके बारेमें इस तरह लिखता है कि हर रोज़ मैं गीताके पवित्र जलसे स्नान करता हूं। गो इस पुस्तकको लिखे हुए देवताओंको सालहासाल गुज़र गये, लेकिन इसके बराबरकी कोई किताब अभीतक नहीं निकली है। उसकी अज़मत११ व ख़ूबी हमारी

१—दूसरे २-ख़राब ख़स्ता ३-ग़ैर शादी ४-कारण, सबब-५-किये हुए ६-आत्मिक ७-काम ८-ख़ाली ९-खंडन १० ग्रन्थकार ११-बड़ाई।

आजकलकी तसनीफ़ातसे१ इस क़दर चढ़-बढ़कर है कि कई दफ़ा में यह खयाल करता हूं कि शायद इसके लिखे जानेका ज़माना२ बिल्कुल निराला ज़माना होगा। पाताल लोक यानी अमेरिकामें उपनिषद्, भगवद्गीता और विष्णुपुराणको सबसे पहले इसी शख्स "थोरो"ने (Introduce) रायज३ किया। सर टामस रो वग़ैरः जो यूरुपसे हिन्दुस्तानमें आये, वह उन मुतबर्रिक४ किताबोंके लाटीनी तर्जुमोंको यहांसे यूरुपमें ले गये। फ्रांससे यह शख्स थोरो उन तर्जुमोंको अमेरिकामें ले गया। इन किताबोंके तर्जुमोंको फ़रंगियोंने फ़ारसी, (फ़रासीसी) ज़ुबानसे लाटीनी ज़ुबानमें किया था, क्योंकि उस वक्त यूरुपकी इल्मी ज़ुबान लेटिन थी और अक्सर किताबें इसी ज़ुबानमें लिखी जाती थीं। अगर सच पूछो तो वेदान्तका झंडा पहलेपहल इसी शख्स "थोरो" ने अमेरिकामें गाड़ा। एक दिन जङ्गलमें सैर करते हुए इससे एमर्सनने पूछा कि इंडियन यानी अमेरिकाके असली बाशन्दोंके तीर कहां मिलते हैं? उसने हस्ब५ मामूल अपना हर वक्तका वही जवाब दिया, "जहां चाहो।" इतनेमें जरा झुका और एक तीर रास्तेसे उठाकर झट दे दिया और कहा, यह लो। एमर्सनने पूछा कि मुल्क कौनसा अच्छा है? तो जवाब दिया कि अगर पैरों-तलेकी ज़मीन तुमको बिहिश्त६ और रिज़वांसे७ बढ़कर नहीं मालूम होती तो इस ज़मीनपर रहनेके लायक़ नहीं। उसके दर्वाज़े हरवक्त खुले रहते थे और रोशनी और हवाको कभी रोक-टोक न थी। एमर्सन

१-रचनाओं, पुस्तकों २-समय ३-प्रचारित ४-पवित्र ५-मुआफ़िक़ ६-बैकुंठ ७-स्वर्गका दरबान।

फहता है, उसके मकानकी छतमें एक भिड़ोंका छत्ता लगा हुआ था और भिड़ों और शहदकी मक्खियोंको मैंने उसके साथ चारपाईपर बेखटके सोते देखा, मगर इस समदर्शीको कभी ईज़ा१ नहीं पहुंचाती थीं। सांप उसकी टांगोंसे लिपट जाते थे मगर उसे ज़रा परवा नहीं। काटते तो कैसे? क्योंकि उसके हृदयसे दया और प्रेमकी किरणें फूट रही थीं और वह तो दयालु भूषण बना हुआ था। और इस तरहका शंकरके मानिंद असली ज्ञान रखता था। जिस शख्सको दुनियांका नखरा-टखरा और नाज़ व इशवार नहीं हिला सकता, वही दुनियांको जरूर हिला देगा। अमेरिकाका एक और महा-पुरुष वाल्ट विटमेन (Walt Witman) नामी अभी हालमें गुज़रा है जो War of Independence की खाना जङ्गीके३ दिनोंमें आज़ा-दाना४ गीत गाता फिरा करता था। उसके चिहरेसे बशाशत५ टप-कती थी और हाथोंसे मिहनतका आदी६ था। उसका लड़ाईमें यही काम था कि मजरूहों७की मरहम८ पट्टी करे, प्यासोंको पानी और भूखोंको रोटी दे। और लोगोंके दिलोंमें हिम्मत और साहस-को पैदा कर दे और आनन्दसे गीत गाता फिरे। उसकी आंखोंसे आनन्द बरसता था। उसकी आवाज़से सुरूर९ झड़ता था—जिस तरह कुरुक्षेत्रके मैदानेजंगमें कृष्णभगवान और भूत-पिशाचोंके बीचमें शिवभगवान विचरते थे, उसी तरह यह महापुरुष अमेरिकाके उस मैदाने कारज़ार१०में लापरवाह११ घूमता-फिरता था। उसने एक किताब

१-तकलीफ, दुःख -२कटाक्ष ३-घरेलू लड़ाई ४ स्वतंत्रतासे ५ प्रसन्नता ६ स्वभाव रखनेवाला ७ घायलों ८ लेप ९ आनन्द १० लड़ाई ११ बेधड़क।

लिखी है, जिसका नाम औराक़गियाह१ (Leaves of the Grass) है, जिसके पढ़ते पढ़ते इन्सान आनन्दसे गद्गद हो जाता है—

ओ३म् । आनन्द, आनन्द, आनन्द ।

डटकर खड़ा हूं खौफ़से खाली२ जहानमें ।
तसकीने३ दिल भरी है मेरे दिलमें जानमें ॥
सूघें ज़मां मकां है मेरे पैर मिस्ल सग४ ।
किस तरह आ सकूं हूं मैं क़ैदे बयानमें ॥
गह बगह५ दुनियांकी छतपर हूं तमाशा देखता ।
गह बगह देता लगा हूं वाहिशियोंकासी सदा६ ।
बादशाह दुनियांके हैं मुहर मेरी शतरञ्जके ।
दिल्लगीकी चाल है सब रंग सुलहो जंगके ॥
रक़्से शादी७ से मेरे जब क़ांप उठती है ज़मीं ।
देखकर मैं खिलखिलाता क़हक़हाता हूं वहीं ॥
ओ३म् ओ३म् ओ३म्

१ तृण-पत्र २ बेख़ौफ़ ३ तसल्ली ४ कुत्ता ५ कभी कभी ६ आवाज़ ७ आनन्द नृत्य ।

मज़हबकी माहियत*

(१) मज़हबसे क्या मुराद और उससे क्या मुद्दआ १, ज़रूरत और फ़ायदा मक़सूद है ?

(२) मज़हबकी आलातरीं२ सूरत और उसका आलातरीं तरीक़े अमल क्या है ?

(३) इन्सानी हस्तीमें वह जुज़्वे३ ख़ास क्या है, जिससे वह अमलेमज़हब४ और उसका मुद्दआ ख़ास तअल्लुक़ रखते हैं और वह तअल्लुक़ किस हालतमें कैसा है ?

(४) मुद्दआए मज़हब५ को कामयाबीसे पूरा करनेके लिये (अमलके लिये) किस किस सामान मददकी ज़रूरत है ?

(५)(क) क्या ज़ात, ज़माना६ मुक़ाम, ख़ुराक और सोहबतका७ अमलेमज़हबपर कोई असर होता है, अगर होता है तो क्या ?

(ख) क्या सिर्फ़ अन्धाधुन्द, एतक़ाद८ (इस ज़िन्दगीके बाद कामियाबी हासिल होनेका फ़र्ज़ी ख़याल) और महज़ किताबी वाक़फ़ीयत और उनका बार बार पढ़ना और सुनना ही हुसूलेमुद्दआय-मज़हबके९ लिये काफ़ी होगा, या किसी ऐसे अमलकी १० (भी)

---

* मूल तत्व, वास्तविकता ।

१ प्रयोजन २ सर्वोत्तम ३ अंश ४ धार्मिक कर्म ५—धर्मोद्देश्य ६ काल ७—संग ८—विश्वास ९ धर्मोद्देश्यकी सफलता १०—कर्म ।

ज़रूरत है, जिससे ऐसे तसल्लीबख़्श१ आसार२ पैदा हों, कि उनसे नतीजये एमाल३ मज़हबकी मुद्दआये मज़हबसे मुताबिक़त जीते जी (मौजूद ज़िन्दगीमें) पायेसबूत४ को पहुंच सके, अगर किसी ऐसे अमलकी ज़रूरत है तो वह क्या है और क्या तसल्लीबख़्श आसार पैदा करता है ?

(ग) क्या मज़हबके मुद्दआको पूरा करनेका अमल किसी तज़-बेकार आमिलकी मददके बग़ैर किसी मामूली इन्सानके लिये पूरा पूरा फ़ायदेमंद हो सकता है ?

(घ) क्या इन्सानी हस्तीके तअल्लुक़में कोई क़ुदरती असबाब५ ऐसे हैं, जो मज़हबी अमलके नीचेकी तरक्क़ीपर असर रखते हों ? अगर हैं तो क्या, और क्या असर रखते हैं ?

(६) किसी मज़हबकी फ़ज़ीलत६, उसका एतक़ाद७, उसका अख़्तियार करना, तर्क८ करना किस किस नतीजए तहक़ीक़ात९ पर मुनहसर१० होना चाहिए और उसका असर आम तौरपर कब महसूस११ होने लगता है ?

(७) रचना (इज़हारेआलम) का असली बाइस१२ और मुद्दआ क्या है ?

(८) मज़हब और साइन्स—उनके एमाल और मुद्दआओंमें क्या फ़र्क़ और मुताबिक़त १३ है ?

---

१ सन्तोषदायक २ लक्षण ३-कर्मफल ४-प्रमाणित हो ५-कारण ६-बड़ाई ७-विश्वास ८-छोड़ना ९-छानबीन १०-निर्भर ११-मनोगत १२-कारण १३-समानता।

जवाबात[1]

(१) लफ़्जे 'मज़हब' से सब लोगोंकी एक ही "मुराद" नहीं होती। ज़माना मुल्क और लियाक़तके मुआफ़िक़ "मज़हब" का मफ़हूम[2] भी बदलता रहा है, राक़िम[3] तो मज़हबसे चित्त (क़ल्ब) की वह बढ़ी-चढ़ी अवस्था (हालत) 'मुराद' लेता है, जिसकी बदौलत शान्ति (सरूर रूहानी), सतोगुण (रास्ती बशाशत), उदारता (फ़ैयाज़ी), प्रेम (मुहब्ब आलमगीर), शक्ति (ताक़त) और ज्ञान (नूर मार्फ़त) हमारे लिये क़ुदरती और ज़ाती हो जायें, यानी ख़ुद बख़ुद हमसे प्रकट (ज़ाहिर) होने लगें। बअलफ़ाज़ेदीगर[4] हमारे हाल क़ाल[5] और ख़याल बहैसियत एक महदूद[6] जिस्म जिस्मानी बन्दःके न रहें; बल्कि रूह आलम और जान, जहानकी हैसियत हमारी हैसियत हो जाय या जाहिरी इस्मा[7] अश्काल[8] व अजसामकी[9] हक़ीक़त असली (ख़ुदा) ही बराहेरास्त[10] चारों तरफ़ जलवागर[11] नज़र आने लगे।

इन मानों[12] में मज़हबको लिया जाय तो तमाम दुनियांकी पैदाइश और मौजूदगीका फल (समर) मज़हब है, मज़हब बज़ाते ख़ुद[13] 'मुद्दआ' है। कुल आलमके मुद्दआओंका मुद्दआ है और अपने आप मुद्दआ, तमाम आलमका मक़सद और नतीज़ा है। वेदका अन्त (इन्तहा) ही वेदान्त है, इससे कुछ परे या ऊपर नहीं जो इसका मुद्दआ हो सके।

१-उत्तर २-भावार्थ ३-लेखक (मैं) ४-दूसरे शब्दोंमें ५-कर्म-वचन ६-ससीम ७—नाम ८-रूप ९-शरीरों १०-सीधे मार्गसे (बेरोक-टोक) ११-प्रकाशित १२-अर्थों में १३-स्वयं।

"ज़रूरते" मज़हब उसी क़िस्मकी है, जैसे दरियाओंको ज़रूरत है समंदरकी तरफ़ बहते रहनेकी, आगके शोलेको ऊपरको तरफ़ भड़कनेकी, पोदों और हैवानोंको गिज़ाकी, ज़िन्दा जानवरोंको हवाकी, आंखको ज़ियाकी१ बीमारोंको दवाकी।

"फ़ायदा"? दानिस्ता२ ख्वाह३ नादानिस्ता४ मज़हबके अमलमें आए बग़ैर किसी क़िस्मकी कामियाबी उरूज व तरक़्क़ी, आराम व राहत५, सेहत व ताक़त, इल्म व हुनर, फ़ज़्लो बरकत६ मयस्सर नहीं हो सकते।

(२) कोई भी इन्सान हो दानिस्ता या नादानिस्ता जिस दर्जेतक आमाल और खयालसे मज़हबकी एकाग्रता है (यकसूदिली) और समाधि (मुराक़बा) से गुज़रता है, उसी दर्जेतक उरूजो इक़बाल पाता है। और मज़हबकी 'आलातरीं७ सुरत' यह है कि इन्सानमें अमलन८ व इल्मन९ खुदी १० मिटकर खुदाईमें इस हदतक समाधि (मुराक़बा और यकसूदिली) आ जाय कि बजाय शख्सीफ़लाह११ व बहबूदीके१२ मुल्कका मुल्क, बल्कि मुल्कोंके मुल्क उसकी महवियत्के१३ फ़ैज़ानके१४ बहरःवर१५ पड़े हों। तमाम आलममें शक्ति और आनन्दके चश्मे १६ बह निकलें। सुलह और सरूरकी१७ नहरें जारी हो जायं। बशाशत१८ और ताक़तकी सुबह सादिक़ फैल जाय

१-रोशनी २-जानकर ३-या ४-बिना जाने ५-सुख ६-बढ़ोतरी अन्तयत्व ७-सर्वोत्तम ८-कर्मसे ९-ज्ञानसे १०-अहंकार ११-व्यक्तिगत भलाई १२ बहतरी १३-तल्लीनता १४-उदारता १५-लाभ उठानेवाले १६-स्रोत १७-आनन्द १८-प्रसन्नता।

"बेहतरीन१ तरीके अमल२।" (१) उपनिषद् और गीताका बार बार विचार (मुताला और उसपर अमल) (२) जिस ज्ञानी (आरिफ़) के पास बैठनेसे हैरत महदूद (आश्चर्य दशा) तारी३ हो, उनके दर्शन और सोहबत।

(३) दिनमें कम अज़कम पांच मर्तबा वक्त निकालकर अपनी ज़ातसे अज्ञान और पाप (ज़ुल्मत और जैहल) को नफ़ी४ करना, यानी अपनी तईं जिस्म व जिस्मानियतसे अलग देखना, अपना आशियाना५, वीराना तअल्लुक़ात व ख्वाहिशातसे उठाकर चमने हक़ीक़त और गुलिस्ताने६ ज़ात बारीमें लगाना और इस क़िस्मके महावाक्य (कलामे अज़ीम) में मह्व हो जाना :—

आफ़ताबम आफ़ताबम आफ़ताब,
ज़र्र:हा दारन्द अज़मन रंगोताब७।
मंबए गुफ़्तारे हक़ गुफ़्तारे मा,
चश्मए अनवारे हक़ दीदारे मा८॥

(४) इन्सानी हस्तीमें वह बात (हक़ीक़त) ज़रूर है "जिससे अमलेमज़हब९ और उसका मुद्दआ१० खास तअल्लुक़११ रखते हैं।" लेकिन वह खास हक़ीक़त इन्सानी हस्तीमें कोई 'जुज़्व'१२ नहीं,

---

१ उत्तम २-कर्मविधि ३-छाजाय ४-नष्ट ५-घोंसला ६-ब्रह्मोद्यान ७-मैं सूर्य हूं, मैं आफ़ताब हूं, आफ़ताब ज़र्रों परमाणुओंमें रंग और चमक मुझीसे है। ८-मेरा वचन ईश्वरीय वचनका स्रोत है। मेरा दर्शन ईश्वरीय ज्योतिराशि है अथवा प्रकाश-स्रोत है ९-धार्मिक कर्म १०-उद्देश्य ११-सम्बन्ध १२-अंश।

बल्कि इन्सानी हस्ती उसका जुज़्व कहला सकती है, और इतना भी सिर्फ़ नमूदी१।

यह हक़ीक़त ख़ास एक दरिया है ना पैदा कनार२, जिसमें शरीर, मन, (जिस्म व अक़्ल) वग़ैरः तरङ्गों, लहरोंकी मानिन्द ग़ल्तां३ पेचां४ हैं। उस हक़ीक़त ख़ासको हिन्दूशास्त्रमें आत्मा नाम दिया है।

तअल्लुक़ किस हालतमें कैसा ?

चित्त मन (ख़याल व गुमान) अपनी हक़ीक़त प्रच्छन्नता (महदूदपन) को तर्क कर, शक्ल व इस्म५ से दरगुज़र (आत्मा) में मिट जाना ऐन इल्म ऐन कूवत बन जाना।

मिसाल

जिसे एक लहर वा हुबाव६ अपने महदूद शक्ल व इस्मसे दरगुज़र अपनी हक़ीक़त यानी आबकी७ हैसियतसे सब लहरों और बुलबुलोंमें मौजज़न८ है, ख़ुश ज़ायक़ा९ है, शफ़्फ़ाफ़१० है वग़ैरः वग़ैरः। या जिसे खांडका बना हुआ कुत्ता या चूहा अपनी हदूद शक्ल व इस्मसे दरगुज़र अपनी हक़ीक़त यानी शकरकी हैसियतसे खांडके शेर, बादशाह, देवतमें मौजूद है। और लज़ीज़-ज़ायक़ा सफेद रंग है वग़ैरः वग़ैरः।

तफ़सील

मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार किसी दक़ीक़ मसले११ पर ग़ौर करते करते अगर यक्सूई (एकाग्रता) के इस दर्जे पर पहुंच जायं कि

१-दिखावेका २ अपार ३ लोटनेवाला ४ पेच खानेवाला ५ नाम ६ बुलबुला ७ पानीप लहरें मारनेवाला ९ स्वादिष्ट १० स्वच्छ ११ सूक्ष्म विषय।

एक लमहा१ भरके लिये इनका निरोध (मिट जाना) वक़ूअमें२ आ जाय तो इल्मो फ़ज़्लकी ज़ात बन निकलते हैं।

अगर मैदानेजंगमें तअल्लुक़ातको तिलांजलि देकर (अल्विदा कहकर) सरसे गुज़र कर किसीके बुद्धि, मन, चित्त, (अक़्लो, फ़िक्रो, खयाल) अपने महदूदपनसे ३ छूट जायं तो निर्भयता (बेखौफ़ी) बहादुरी ज़ोर व ताक़तका दरिया बह निकलता है।

और मन, बुद्धि, अहंकार जब किसी तरहके माशूक़ व मतलूबको पाकर बेखुदी महवियत४ एकगूना५ फ़नाको पाते हैं (जैसे एक लहर दूसरी लहरसे मिलकर मिट सकती है) तो सरूर ही सरूर बन जाते हैं।

पस मन-बुद्धि, चित्त, अहङ्कार (अक़्ल व खयाल, ज़मीर व खुदी) का आत्मा (ज़ाते हक़ीक़ी) में महव होना ही दरीचएदुरूनीका६ खुलना है। और मनका आत्माकार होना ही क्या इल्म, क्या लिया-क़त, क्या सरूर, इन सबका लश्कर नूरकी (प्रकाशकी) तरह बाहर फैलता है।

जबतक मन बुद्धि वग़ैरःका आत्माकार नहीं, यानी महदूदियत (जिस्म व इस्म, शक्ल व नाम) से वाबस्ता७ हैं, चादरे८ मौज गोया९ चेहरएआबको१० छिपा रही है। बुरक़ए११ हुबाबसे१२ दरिया महजूब १३ हो रहा है।

---

१ क्षण २ प्रकट ३ ससीमत्व ४ तल्लीनता ५ एक प्रकारसे ६ अन्दरकी खिड़की ७ चिपके हुए ८ तरंग-पट ९ मानो १० जलानन ११ घूंघट १२ बुल-बुलेका १३ लज्जित।

दरीचए दुख्नी बन्द है। और आदमी तारीकी, जहल, खौफ व कमज़ोरी, अज़ाब व रंजमें मुब्तिला है।

हवास-ज़ाहिरी १ और बातिनोमें २ भी जो ताक़त व कूवत है, वह सब आत्माहीकी है। इनका आत्मामें फ़ना ३ होना बक़ा ४ है। जैसे मौजका पानीमें मिटना दरिया होना है। बुलबुलेको पानीसे जुदा करो फूट जायगा। हर एक शख़्सके लिए सोना (आराम करना) इसी वास्ते मूजिबे ज़िन्दगी है कि ख़्वाबगरां ५ हवास बातिनी और ज़ाहिरी बवाइसे बेखुदी अपनी जाते हक़ीक़ी (आत्मा) में महू व मुस्तग़रक़ ६ हो जाते हैं।

(४) सामान और मदद।

(१) सिर्फ़ वह गिज़ा खानी और इतनी खानी कि जो जल्द पच सके और आसानीसे हज़्म हो सके।

(२) नींदभर सोना।

(३) सुबह व शाम बाक़ायदा जिस्मानी कसरत (वर्ज़िश) करना।

(४) हत्तलमक़दूर ऐसी सोहबतसे परहेज़ जो दिलमें (राग द्वेष) अदावत या जज़्बात ७ भर दे। अगर सोहबते आरफ़ीन ८ मिल सके तो वाहवा वर्ना तनहाई ९ सबसे अच्छी है।

(५) रास्तबाज़ी १०, रास्तगुफ़्तारी ११, रास्तकिर्दारी १२, बद-

१—कर्मेन्द्रिय २—ज्ञानेन्द्रिय ३—मरना ४—अमरत्व ५—गहरी नींद ६—डूबना ७—मनोविकार ८ सच्चे साधुओंका संग ९ एकान्त १० सत्यपरायणता ११ सत्यभाषण १२ सत्कर्म।

रता (दरियादिली, फ़ैयाज़ी,) क्षमा (उफ़ू) खल्क़ (पब्लिक) के भलेका कोई न कोई काम करते रहना, बहुत बड़े मुआविन१ हैं।

(५) (क) "ज़ात ज़माना, मुक़ाम, ख़ूराक और सोहबतका असर" ज़रूर होता है। उनके मुआफ़िक़ आदमीके चित्त (क़ल्ब) की हालत होती है। इसी वास्ते ज़माना, मुक़ाम, ख़ूराक और सोहबतके बदलनेसे चित्तकी हालत भी बदल सकती है, और इसी वास्ते तालिमका असर होना भी मुमकिन है। और इसी वास्ते हर एकके अमलके लिये अमल मज़हबमें पूरी कामियाबी होना भी मुमकिनातसे है।

"ज़ात" तो हर एककी आत्मा (ख़ुदा) है, अलबत्ता ज़ाति (हस्ब व नस्ब) अलहदा अलहदा हैं और उनके असर और नतीजे भी जुदा जुदा और जाति (हस्ब व नस्ब) के असरकी ताक़त दरख्तों और अदना हैवानमें "मुक़ाम, ज़माना, ख़ूराक और सोहबत" की ताक़तपर हमेशा ग़ालिब२ रहती है। लेकिन इन्सानके लिये सोहबत और तालीमकी ताक़त हर हालतमें जाति (हस्ब व नस्ब) की ताक़तपर ग़ालिब आ सकती हैं।

(ख) ऐसा तशफ्फ़ीबख़्श३ अमल भी है जो मौजूदा ज़िन्दगीमें जीवन-मुक्ति देसके, यानी ग़म व ग़ुस्सा और गुनाहसे पूरी नजात बख़्श सके, और वह खयाल व अफ़आल व हालसे जिस्म व जिस्मानियतकी हैसियतको भूलकर बहैसियत ख़ुदाई (सबका अपना आप होकर) रहना सहना है।

---

१ सहायक २ प्रबल ३ सन्तोषदायक।

इस "तसल्लीबख़्श आसार" को पूछ ख़्वाहमख़्वाह—

"दौलत गुलामे मन शुदा इक़बाल चाकरम्"१

हो जाता है। गुनाह व ग़मकी बेखकनीर२ हो जाती है।

(ज) "मामूली इन्सान" से मुराद अगर उस शख़्सकी है, जिसके अन्दर शौक़ रूहानी* इश्क़के दर्जेतक भड़का न हो तो उसको ख़्वाह कैसा ही "पहुंचा हुआ तजर्बेकार" आमिल क्यों न मिले, पूरी तरह मुद्आ कभी पूरा न होगा। हज़ारों ही राजे महाराजे कृष्ण भगवान्से बरबाब३ हुए, लेकिन गीता तो किसीने न सुनी और वह भी उस वक़्त, जब राज, इज्ज़त, जान, सर ख़ेश४ व आशना५, दीन व दुनियांको कृष्णके चरणोंपर निसार६ कर बिल्कुल वैराग स्वरूप (सरापा) शौक़ हो रहा था।

अगर शौक़ सादिक़७ है तो यह महज़ नामुमकिन८ है कि तज़-र्बेकार आमिल या और कोई मदद जो ज़रूरी है ख़ुद बख़ुद खिंच-कर न चली आय, कोयलेको आग लगी तो हवाई आक्सिजनको अपनी तरफ खींच लाती है। क्या हज़रत इन्सानके दिलकी आग ही इतनी बेबस है कि मुरशिद९ कामिलके वस्लसे१० महरूम११ रहे।

पस१२ यह फ़र्ज़१३ ही मोहाल१४ है कि तालिबे१५ सादिक़ हुआ और ज़रूरी मददसे महरूम रहे।

---

१ धन मेरा दास और सौभाग्य मेरा चाकर हो गया।

२ मूलच्छेदन ३ मिले ४ सगे ५ स्नेही ६ न्यौछावर ७ सच्चा ८ असम्भव ९ सद्गुरु १० मिलाप ११ वंचित १२ बस १३ कल्पना १४ कठिन १५ सच्चा चाहनेवाला * आत्मिक।

(द) इन्सानकी ज़िन्दगीमें जितनी ठोकरें लगती हैं और तक-लीफ़ें आती हैं बज़ाहिर उनका सबब ख़्वाह कैसा ही क्यों न हो, अगर ग़ौरसे देखा जाय और उन मुसीबतोंका सामना होनेसे पेश्तरकी अपनी अन्दरूनी हालतको बिला तअस्सुब१ धोकेसे आज़ाद२ होकर सच सच और ठीक ठीक याद किया जाय तो बिला नाग़ा बिला इम्कान-इस्तसना३ मालूम होगा कि आफ़तेबेरूनी४ तो पीछे आई ज़वाले-अन्दरूनी५ तो पहले आ चुका था। यानी दिल मामूलसे कहीं ज़्यादा आत्मा (ज़ात हक़ीक़ी) की हैसियत आलमगीर६ छोड़कर महदूद जिस्म व इस्मकी हैसियतसे हिक़ारत७ व मुहब्बत वग़ैरःमें मुब्तिला८ हो गया था। और दूसरे पहलूसे देखें तो यों कहो कि दिल अशियायआलमके९ असली स्वरूप (ज़ात हक़ीक़ी आत्मा-ब्रह्म) को नज़र अन्दाज़१० करके उनके ज़ाहिरी अस्मा व अशकालमें बुरी तरहसे उलझ गया था। मस्लन औरतकी मिथ्या (नमूदी) सूरत शक्लकी चाहमें डूब गया था या किसीको दुश्मन गर्दान११ कर उस (नाम रूप) फ़र्ज़ी-सायेको१२ सच्चा मानकर ज़हर उगल रहा था जो अपने ही आपको चढ़ा।

प्यारे यारका ख़त आया, वह ख़त भी प्यारा लगने लगा। मगर उसमें मुहब्बत दरहक़ीक़त उस परचए काग़ज़के साथ नहीं थी, यारके साथ थी। इसी तरह बेटा, औरत घरबार, इल्म दौलत-

१-पक्षपात रहित २-मुक्त ३-अपवादरहित ४-बाह्यकष्ट ५-आन्तरिकपतन ६-विश्वव्यापी ७-तुच्छता ८-फंसा हुआ ९-सांसारिक पदार्थोंके १०-दृष्टिवंचित ११-मान १२-कल्पित छाया।

को खतूत मिनजानिब१ यार हक़ीक़ी (आत्मा ब्रह्म) जानकर उस यार अज़ली२ वजहसे अगर हमारी मुहब्बत हो तो निभ सकती है। वरना जो हैं यह चिट्ठियां बजाय खुद अज़ोज बनी और चिट्ठीवालेको हमने छोड़ा (मज़हबके क़ानूनको तोड़ा) तो शामत आई।

इसपर वेदका इर्शाद३ है :—जो कोई ब्राह्मणको ब्राह्मणकी हैसियतसे देखेगा और आत्माकी हैसियतसे न देखेगा (यानी बरहमनके जिस्म व इस्मको महज़ टेलीफ़ोन न जानेगा, जिसके ज़रीयेसे आत्मा यानी खुदा खुद बातें कर रहा है) तो वह शख्स बरहमनसे धोका खायगा। जो कोई भी राजाको राजा (जिस्म व इस्म) की हैसियतसे देखेगा और आत्माकी हैसियतसे न देखेगा वह राजासे धोका खायगा। जो कोई दौलतमन्दोंको दौलतमन्दोंकी हैसियतसे देखेगा और आत्माकी हैसियतसे न देखेगा वह दौलतमन्दोंसे धोका खायगा। जो कोई देवताओंको देवताओंकी हैसियतसे न देखेगा वह देवताओंसे धोका खायगा। जो कोई अनासिरको४ अनासिरकी हैसियतसे न देखेगा वह अनासिरसे धोका खायगा। और जो कोई ख्वाह किसी शयको इस्म व शक्लकी हैसियतसे देखेगा और आत्माकी हैसियतसे न देखेगा, वह उस शयसे धोका खायगा (यजुर्वेद बृहदारण्यक उपनिषद्)।

यही क़ानून ज़िन्दगी है जिसकी चोटें खा खाकर बावजूद इस ख्वाहिशके५ शहादत६ मुखालिफ़७ होनेके हज़रत मुहम्मद वग़ैरःको ज़रूरत पड़ी कि मीनारोंपरसे पुकारकर सुनायें:—"लाइलाह इल्लि-

१-तरफ़से २-अनादि ३-आज्ञा ४-पंचतत्व ५-इच्छा ६-गवाही ७-विपरीत।

ल्लाह१" "और कुछ नहीं है सिवाय अल्लाहके" ईसाई मतमें मसलून २ होकर फिर जी उठने (अहयाय) से भी इसी तरहका ज़िन्दा यहक् होना मुराद है। जिन्दगीके कड़े तजर्बोंको बुनियादपर बुद्ध भगवान इसी क़ानून रूहानीको ज़माने-हाल३ और कालसे४ जङ्गलोंमें सुनाता फिरा कि, "जो कोई भी अशियाय-आलमको५ सच मानकर उनपर भरोसा करेगा धोका खायगा।"

पस यह क़ानून रूहानी, "वह क़ुदरती सबब है" जो मज़हबी अमलके नतीजेकी तरक़्क़ीपर गज़बका असर रखता है। अगर कोई फ़र्द-बशर६ इस हक़ीक़त ईज़दी७ (आत्मा) के साथ हमदम८ व हमसाज़९ होगा तो तमाम दुनियां उसकी हमदम व हमसाज़ है। अगर कोई क़ौम बमुक़ाबिले-दीगर-अक़वामके १० इस रास्ती ११ और सुलह-बातिनीको१२ अमलमें लायेगी तो वह क़ौम उरूज पायगी और बरख़िलाफ़ उसके जो कोई शख़्स भी इस हक़ीक़तको अमलन भूलेगा वह शख़्स तबाह होगा और जो क़ौम इस हक़ीक़तको हक़ीर१३ जानेगी वह हक़ीर हो जायगी। और जो लोग इस क़ानून मज़हबीको अमलन१४ जानते ही नहीं या अमल भूल बैठे हैं हर्फ़ ग़लतकी तरह सुफ़हए हस्तीसे मिट जायंगे या ज़ेरेख़ते बर्बादी१५ आ जायंगे।

(६) मज़हबकी जान (असलीयत) तो ऊपर मज़कूर हो चुकी है

१-अल्लाकी तरफ संकेत है २-सिलीब (क्रास) पर मरना ३-अवस्थारूपी जिह्वा ४-वचन ५-सांसारिक पदार्थों ६-मनुष्य ७-ईश्वरीय ८-मित्र ९-सहयोगी १०-अन्य जातियोंके सामने ११-सचाई १२-आन्तरिक सन्धि १३-तुच्छ १४-कार्यरूपमें १५-बरबादी।

वह तहलीले-क़ल्ब[1] है, ख़ुदीकी जगह ख़ुदाईका आ जाना है। और वह एक ही है। और वह न अदल-बदलके क़ाबिल ही है। अब रहे मज़हबके अजसाम[2] वह कई हैं और ज़रूरते ज़माना मुल्क और अवारिज़के* मुताबिक़ एख़्तलाफ़-पज़ीर[3] हैं अवामके[4] लिये तो मज़हबसे मुराद जिस्मे मज़हब ही होता है। इसमें मजलिस (सोसाइटी) रस्म व रिवाज़, खाना पीना, बुज़ुर्गानेदीन[5], क़ुतुबेदीनी[6] यकसूदिलीका ज़रिया ख़याालात-मुतअल्लिक़ा[7] एज़दी मौत, वसीलये निजात[8] और बहसमुबाहिसा[9] नुक्ताचीनी[10] वग़ैरः बहुत ज़्यादा हिस्सा लेते हैं बनिस्बत तहलीले क़ल्बके।

जो लोग हक़ीक़ी मजहबसे महज़ ना वल्द[11] हैं वह ज़ाहिरी मज़हबको बदलते फिरते हैं और किसी मज़हबकी फ़ज़ीलत[12] एकका अख़्तियार करना दूसरेका तर्क करना वग़ैरः "वह किस नतीजए तहक़ीक़ातपर मुनहसिर" रखते हैं उनकी वही जान हम इस बारेमें कुछ नहीं कह सकते।

(७) रचना (इज़हारे आलम) का बाइस और मुद्द्आ।

यह सवाल दूसरे लफ़्ज़ोंमें यों बयान किया जा सकता है:— दुनियां क्यों बनी? दुनियां कब बनी? दुनियां कहां बनी? दुनियां

---

* अवारिज, आरजेका बहुवचन "रोगों"। परन्तु यहां संस्कारसे अभिप्राय है।

१-मनका घुल मिल जाना २-शरीर ३-परिवर्तनीय ४ सर्वसाधारण ५-आत्मपुरुष ६-धार्मिक ग्रन्थ ७ ईश्वर सम्बन्धी विचार ८ मोक्षके साधन ९ शास्त्रार्थ १०-आलोचना ११-वाकिफ़ १२-बड़ाई।

किस तरीक़ेसे बनी ? वग़ैरः या ज़यादा तसरीह१ की जाय तो सवालकी सूरत यह होगी :—

दुनियां किस इल्लत२ सबबसे बनी ? किस ज़मानेमें बनी ? किस मुक़ामपर बनी ? किस ज़रियेसे बनी ? वग़ैरः।

जवाबः—ज़रा ग़ौर किया जाय तो दुनियां (आलम) के बड़े बड़े अरकान३ खुद सिलसिलये इल्लत व मालूल४ "ज़माना" "मकान५" "तअल्लुक़ात६" वग़ैरह ही साबित होंगे, इसलिये इस सवालके ज़िमनमें७ कि दुनियां किस इल्लतसे बनी ? यह सवाल शामिल है कि सिलसिलये इल्लत व मालूल किस इल्लतसे वक़ूअमें८ आया ? और यह सवाल नाजायज़ है। इसमें चक्रदोष (गर्दिशे-क़यास) है।

इस सवालके ज़िमनमें कि दुनियां किस ज़मानेमें बनी ? सवाल शामिल है कि "ज़माना", किस ज़मानेमें पैदा हुआ ? यह भी नाजायज़ है। और इस सवालके ज़िमनमें कि "दुनियां कहांपर बनी ?" "यह सवाल शामिल है कि "मकान किस मकानमें जाहिर हुआ ?" यह भी नाजायज़ है। पर आदमी बहैसियत आदमीके इस मसलेपर मग़ज़पची करता हुआ बेफ़ायदा तज़इअऔक़ात९ करता है—कि कसे नकुशूद व नकुशायद बहिक़मत ईं मुअम्मारा*। यही फ़र्माया है।

मज़हब और साइन्सः—

---

* यह पहेली न किसीसे बतायी गयी और न कोई बता सकता है।

१-व्याख्या २-कारण ३-अंग ४-कार्य ५-देश ६-सम्बन्ध ७-अन्तर्गत ८-प्रगट होने ९-समय नष्ट करना।

अमलः – (अ) साइन्सका इल्म तजरबा व मुशाहिदा१ क़यास२ व इस्तक़राय† पर मौक़ूफ है और उसमें तरीक़ा नफ़ी३ व अस्बात-से४ रिश्ता इल्लत५ व मालूल६ क़ायम किया जाता है। मजहब क़ानून रूहानी भी जो सवाल५ (द) के जवाबमें मुन्दर्ज७ हो चुका है। तजरबा और मुशाहिदा, क़यास और इस्तक़रासे साबित होता है और तरीक़ये नफ़ी वो अस्बातपर मुबनी८ है। कोई भी शख़्स अपने चित्त-की अवस्था (हालत दिल) का सही बयान बिला कमोकास्त९ लिखता जाय और जो सानहा १० या सदमा वक़ूअमें११ आता जाय, क़लमबन्द१२ करता जाय, इल्मेकीमिया१३ और इल्मुल अज-साम१४ वाले तरीक़े गा१५ बर्तावमें लाये तो मज़हबके क़ानून रूहा-नीकी सदाक़तका१६ मौतक़िद१७ ख्वाहमख्वाह होना पड़ेगा।

(ब)साइन्स और मज़हबके इल्मोंमें फ़र्क इतना होगा कि साइन्स बाहरकी चीजोंपर तजर्बा और मुशाहिदा बर्तेगा जो मुक़ाबिलतन१८ बहुत आसान है; और निजकी अन्दरूनी कैफियतोंपर तजर्बा१९ और मुशाहिदा२० काममें लायगा जो बहुत मुश्किल है।

मुद्आः—साइन्सका मुद्आ है इख़्तलाफ़में२१ इत्तहादको२२ दिखाना और दुनियांमें वहदतका२३ जाहिर करना। मसलन दरख्तसे

---

† पहले विस्तारपूर्वक अर्थ किसी स्थानमें लिखा है।

१-साक्षात् २-अनुमान ३-निषेध ४-विधि ५-कारण ६-कार्य ७-लिखा ८-निर्भर ९-न्यूनाधिक १०-घटना ११-बनावमें १२-लिखना १३ रसायन विद्या १४ शारीरिक विद्या १५ यदि १६ सत्यता १७ विश्वासी १८ अपेक्षासे १९ अनुभव २० साक्षात् करना २१ विरोध,२२ संयोग २३ एकता।

गिरते हुए सेबमें और ज़मीनके गिर्द फिरते हुए चांदमें एक ही क़ानून (कशिश सक़ल१) का दरियाफ़्त करना और मसलये इर्तक़ा (सऊद आलम) के ज़रिये अदनासे . अदना नबातीर बीजसे लेकर हज़रत इंसानतक रिश्ता व मौत और रसाई३ दिखलानी और मज़हबका मुद्दआ भी (बल्कि खुद मज़हब) है ज़ाहिरी एखतलाफ व मुख़ालिफ़में इत्तहाद५ व इत्तिफ़ाक़६ बल्कि सारी दुनियांमें वहदत७ वो तौहीदका८ देखना और बरतना।

फ़र्क इतना है कि साइन्स अक़्ली और इल्मी तौरपर वहदतका रंग दिखाता है। और मज़हब अमली और हाली तौरपर तौहीदमें ग़ोते दिलाता है।

इधर अर्नेस्ट हैकल, पालकेरस, रूमेनीज़ वग़ैरः साइन्सदानाने९ हाल१० बेरूनी दुनियांमें वहदत ही वहदत पुकारते हैं। इधर उपनिषद्११, नावो, इज़म, तस्सव्वुफ़ वग़ैरः मज़हब मुतक़द्दमीन तौहीद ही तौहीद हमारे रगो रेशेमें उतारते हैं।

साइन्स ज़्यादातर प्रत्यक्ष प्रमाण (सबूत नज़री) पर चलता है।

मज़हब भी साक्षात्कार (मुकाशिफ़ा हक़ुल्यक़ीन) पर मुबनी न हो तो मज़हब ही नहीं बल्कि सुनी सुनाई कहानी है या पक्षपात (तअस्सुब) है।

पर फ़र्क इतना है कि साइन्स चूंकि इस्माव अश्कालसे१२ ज़्यादा तअल्लुक़ रखता है, हवास-खमसाकी१३ मददका ज़्यादा मुहताज

---

१ आकर्षणशक्ति २ वृक्षादि ३ पहुंच ४ विरोध ५ मिलाप ६ मेल ७ एकता ८ एकहीको मानना ९ ज्ञाता १० वर्तमान ११ वेदान्त १२ प्राचीन ऋषि १३ इन्द्रिय

है और मज़हब चूंकि (वाहिद हयूल) आत्मसत्ताको बराहेरास्त अनुभव (ज़ोर) में लाता है इसीलिये उस दुरूनी[1] आंखको वर्तना है जो बेरूनी आंखकी आंख (नूर) है। आजकल साइकालोजी (इल्मुलरूह) की इस्तलाहमें[2] मज़हब क़ल्बे बातिनको रोशन करता है।

खुदमस्ती* तमस्सुके उरूज+

आज सदुपदेशके एक पर्चेको गोया हवा उड़ा लाई, उठाया, उसमें एक मज़मूं बर्दी-उनवान[3] था !—"राम बादशाहके नाम खत" वाह !

अय कबूतर ! मीपरी बर कूए बामे आं परी,

नाम बर गर्दनत बंदम तो आंजा बुगज़ुरी[4]।

अज़हद मस्ती आई—

अब आते हैं उन एतराज़ों[5] के जवाब :—

(१) भगवे कपड़ोंसे साधु (साहदु) होता है ?

कहीं रंगे कपड़ोंमें रंगा दिल भी पाया जाता है, मतवाला जोगी भी नज़र आ जाता है, रामका दीवाना मस्ताना भी जलवा

---

१ अन्दरकी २ परिभाषा ३ इस शीर्षकके साथ ४ अय कबूतर तू उस प्यारेके कोठेपर उड़ा करता है, मैं एक खत तेरी गरदनमें बांध देता हूं तू वहां ले जाना ५ शंकाओं।

* आत्मानन्द। + उन्नतिको पकड़ना।

दिखा जाता है। लेकिन हरकसो नाकसपर रोशन है कि रोशनज़मीरी१ लिबासे फ़क़ीरीमें असीर२ नहीं, वह हक़ीक़ी३ आज़ादी४ किसी तरहसे राह मिल्लत और ढंग फ़ैशनकी आदी५ नहीं है। जहां जाते हुए पांव थर्रा जायं और सर चकरा जाय, वहां भी यह बिजली चमक जाती है। यह आफताब ऊंचे हिमालियाके पवित्र बरफ़स्तानके अन्दर साफ शफ़्फ़ाफ़६ नीली झीलोंमें झांकता हुआ पाया, और गहरी खाईके गंदले पानीमें बाआन हमःशान दरख़्शां७ नज़र आया। क़ैदख़ानेमें वह आ जाता है, और फ़ौलादकी कड़ी जंजीरें पड़ी रह जाती हैं, बल्कि उनसे ज़्यादा संगीन हाथ, पैर, जिस्म व इस्मकी बेड़ियां धरी रह जाती हैं। अन्धेरी कोठरीमें बन्द क़ैदी पञ्जा दरपञ्जये ख़ुदा डाले शशजेहत आलममें आज़ाद टहलता है या आठवें अर्श८ पर इस अकेलेकी नीली घोड़ीके सुमकी टाप सुनाई देती है। नीचे बाज़ारमें लोग चल रहे हों और छतपर घरवाले काम-काजमें लग रहे हों, एक कोनेमें बैठा कोई पढ़ रहा हो। ए लो! पढ़ते पढ़ते वह हर्फ़ पढ़ा जो लिखनेमेंही नहीं आ सकता।

वह किताब इश्क़के ताक़में९ जो धरी थी यूं ही धरी रही।

ख़िलवत१० दर अंजुमन११ हो गई। मंगलहीमें जंगलका मज़ा आ गया।

सैरको निकले खुशक़िस्मतीसे कोई हमराह१२ न हुआ चांदनी

---

१ आत्म प्रकाश २ क़ैदबन्द ३ सच्ची, वास्तविक ४ स्वतन्त्रता ५ आदत वाली ६ स्वच्छ ७ चमकता ८ आस्मान ९ आला, ताख १० एकान्त ११ महफिल १२ साथ।

खिल रही थी या शफ़क़१ फैल रही थी। हवा सनसना रही थी। सड़कपर चलते चलते यक वयक यह कौन आ शरीक हुआ ? वही जो "वहदहूला शरीक़२" है। इधर शफ़क़की लाली आई, उधर निराली शराब रगो रेशेमें समाई।

आं मय कि ज़े दिल ख़ेज़ द बारूह दरामेज़द,

मख़्मूर कुनद जोशश मर चश्मे ख़ुदावीं रा ३।

रेलगाड़ीमें बैठे थे, पहियोंके घड़घड़ाहटका लगातार राग जारी था। बात करनेवाला कोई था नहीं, खिड़कीका पर्दा जो गिराया तो यकायक दिलो जानमें दुलहा उतर आया। रेलमें बैठे बैठे जिस्मो जाँ (जिस्म व जहान) जाने कहांका टिकट ले गये! रूहानी त्याग (तर्के दुनियां व माफ़ीहा) तारी हो गया। सच्ची फ़क़ीरी नज़र दिखा गई।

कह गिरधर कविराय चढ़ी जिन ख़ुदमस्ती,

तिन ज्ञान गंगमें दीनी बहाय फ़क़ीरी गृहस्ती॥

(२) क्या अग्निके रंगवाले भगवे कपड़ोंसे साधु (साहदु) हो जाता है? साधु वह है जिसके अन्दर ज्ञान-अग्नि ऐसी भड़क रही हो कि देह अभिमान या रेल तार वग़ैरःसे नफ़रत या पुराने ढंगसे मुहब्बत मुतलक़न४ जल जाय, सारी दुनियांको उसके नूरे५ मारफ़तके शोलेसे६

---

१ सन्ध्या कालकी लाली २ एकमद्वितीयम्, अकेला जिसका कोई साथी न हो, ईश्वर ३ जो शराब मन (की भट्ठी)से पैदा हो और आत्माके साथ मिल जाय उसका जोश (नशा) मस्त कर देता है, परन्तु केवल उन्हींको जिनकी आंखें ईश्वरकी तरफ लगी हुई हैं ४ बिलकुल, निरन्तर ५ ब्रह्मज्ञान प्रकाश। ६ लपटें।

उजाला पड़ा हुआ और आगे चलनेका रास्ता नज़र पड़ा आये। अगर यह नहीं तो गीला ईंधन है जो धुआं ही धुआं कर रहा है, जिससे सब लोगोंका नाकमें दम हो रहा है। जबतक सूखेगा नहीं न आप रोशन होगा न किसीको उजाला करेगा। दिल नहीं रंगा तो कपड़े रंगनेसे अपना या पराया दुःख कहां दूर हो सकता है?

लोग कहते हैं ज्ञान-अग्नि (नूर मारफ़त) का शोला भड़कानेके लिये ईंधनको पहले धूपमें सुखा लो यानी कर्म उपासना (शरीयत व तरीक़त) के ज़रीये अधिकारी (क़ाबिल) बना लो। राम कहता है, जो लकड़ी कट चुकी (जो आदमी साधू हो चुका) उसके लिये इस आगके पास पड़े रहना ही बहुत जल्दी सुखाकर अधिकारी बना देगा। अलबत्ता जो अभी नन्हे पौदे हैं उनको उगने दो। उगेंगे नहीं तो लकड़ी ईंधनके लिये कहांसे आयेगी? बकरीकी ऊन उतरनेसे ही ऊनी कपड़े बनते हैं। पर ऊन बढ़ने तो दो। आयेहीगी नहीं तो पश्म कहांसे लाओगे?

इसी तरह जिन लोगोंके खयालात (अन्तःकरण) अभी कच्चे पौदोंकी मानिन्द हैं वह निहाले उम्मीद[१] तो न काटनेके लायक़ हैं, न जलनेके लायक़ हैं, जिनपर ऊन आई ही नहीं उतरेंगे क्या? वह मुड़ायेंगे क्या? ऐसे लोगोंके लिये कर्म-मार्ग (जादए आमाल) क़दीम[२] ज़मानेसे मुक़र्रर चला आता है कि वह उम्मीदोंके खट्टे मीठे फल थोड़ी मुद्दत ज़रा चखें, और कर्म (आमाल)की भूलभुलैयामें ठोकरें और टक्करें खा खाकर ज्ञान और त्यागके जादये[३] मुस्तक़ीमको[४] ख़ुदबख़ुद बोएं।

१ आशाके पौदे २ प्राचीन ३ बटिया, पगडंडी ४ सीधो।

ज़रा अब ग़ौर कीजिये, पौदा उसी सूरतपर बढ़ेगा जिस क़िस्मका बीज होगा। कृष्णने देखा कि अर्जुनके अन्दर बीज तो है इन्तक़ाम (बदला) लेनेका और ऊपरसे इस वक़्त बातें बना रहा है, दयालु ब्रह्मचारीकीसी। बीज तो बोया कांटेदार बबूल (कीकर) और पकाया चाहता है आम। लाचार उसे दया (रहम) जंकी तरफ़से हटाकर जंग१ व जदालर पर आमादः किया। प्यारे खा तो लिया जमालगोटा (जब्बू छोटा) और अब जङ्गल जानेमें आर३ मानते हो?

कर्मकाण्ड (जादए आमाल) के मुतअल्लिक यही कैफ़ियत ज़मानये हालके हिन्दुस्तान की है।

बीज यानी ख़्वाहिश तो सर-ज़मीने-दिलमें बोए बैठे हैं बीसवीं सदीवाली, और बातें बनाते हैं बीसवीं सदी क़ब्ले४ मसीहवाली मुतआल्लिका कर्मकाण्ड जैसी चाह (ख़्वाहिश) होगी, वैसा ही "चाहिये" (फ़र्ज़ सरपर सवार रहेगा)।

अगर राजसूय, असूय, अश्वमेध, वर्षपूर्णमास, अग्निष्टोम वग़ैरः यज्ञोंवाली चाह अब दिलोंमें नहीं तो इन यज्ञोंका "करना चाहिये' भी आज हमपर ग़ालिब५ नहीं होगा। आज चाह है यूरुप, अमरीका, जापान, आस्ट्रेलिया वग़ैरःके मुक़ाबिलेमें ज्यों त्यों करके जान बचानेकी। पस आज "चाहिये" हिन्दुस्तानको इस क़िस्मकी तालीम पाना और सनअतो६ हिरफ़तको अमलमें लाना जिससे रोज़अफ़ज़ूँ बेसरो-सामानीके७ अज़ाबसे८ बच सकें।

---

१ लड़ाई २ युद्ध ३ इंकार, कष्ट ४ पूर्व,पहले ५गालिब,प्रबल, ६कारीगरी, कला कौशल ७ रंकता ८ दुःख।

कर्मकाण्ड ज़माना और मुल्कके साथ हमेशा पीछे बदलता चला आया और आइन्दा बदलता रहेगा, पर आत्मा (हक़ीक़त) तबदीलीसे१ बरी२ है। और उसका ज्ञान (इल्म हक़ीक़त) हमेशा एक रहेगा। जो लोग अपने स्वधर्मको (यानी अपने मुतअल्लिक़के कर्म-काण्डको) अपनी मौजूदः ड्यूटी (फ़र्ज़) को निष्काम होकर (नतीजेके ख्यालको नज़र-अन्दाज़३ करके) पूरी हिम्मतसे, दिलोजानसे मिहनत और ध्यानसे निवाहते हैं, वही एक आत्मज्ञान (नूर मारफ़त) के जला-लसे४ दरख्शां५ होते हैं। (देखो भगवद्गीता)।

आत्मज्ञान विष्णु है, जो हिम्मत और शेरमर्दीके गरुड़ (शाहीन) पर बैठता है और सवारी करता है। यह आत्मज्ञान अपने गरुड़ (हमारे हिम्मत) पर सवार जब हिन्दुस्तानकी हवापर लहराता था तो खाविन्दे६ हक़ीक़ीकी निगाहे नाज़का७ शिकार होनेके लिये लक्ष्मी (दौलत) चारों तरफ़ नाचती थी, बल्कि कोहो-सेहरामें लोटती फिरती थी। ज़मीनने छिपे छिपाये खजाने और जवाहिरात क़दमोंमें पेश८ किये।

कोहेनूर उगल दिये। चरणोंपर निसार९ किये,
शिगुफ़्ते१० बहारने कफ़े पा (नंगे तलवों) के बोसे लिये।
दौलत गुलामें मन शुदो इक़बाल चाकरम्११।
जहां सर्वोशमशाद१२ होंगे क़ुमरी१३ आ बैठेगी। गुलोलाला

१ बदलना, परिवर्तन २ मुक्त, अलग ३ दृष्टिच्युत, छोड़ कर ४ तेज ५ चमकनेवाला ६ सच्चा स्वामी ७ प्रेमदृष्टि ८ अर्पण ९ न्योछावर १० खिली हुई ११ दौलत मेरी दासी और सौभाग्य दास हो गया १२ वृक्षविशेष सरू १३ पक्षीविशेष जो सरूका स्नेही प्रसिद्ध है।

होंगे बुलबुल आ चहचहायेगी। तुम हिन्दमें इल्मो[१] हरफ़तकी खुराक खिलाकर शाहीने हिम्मत (गरुड़) तो पा लो। वही असली ज्ञान (हक़ीक़ी मारफ़त) रूपी विष्णु फिर यहां मौजूद पाओगे।

ओ! ऐन उफ़ीं[२]! ज्ञान-स्वरूप! आनन्दरूप!

अगर हिन्दुस्तानके बावन लाख साधु-सन्तोंमें एक हजार भी ऐसे हों जिनके सीनोंमें आपकी ज्ञान-गंगाकी एक ज़रा जितनी नहर लहरें मार रही हो तो हिन्दुस्तान तो क्या तमाम दुनियां निहाल हो जायगी।

ये जग उड़धा जान्दा सन्तानू खबर करो
सन्त न होन्दे जगतमें जल मदी संसार

जिन लोगोंको इल्मे सियासत[३] मुदन(इल्मुल इक्तसाद, पोलिटिकल एकानोमी) के नामसे ब्रह्मनिष्ठ महात्माओंकी मौजूदगी गरां[४] गुज़रती है, वह अपना ही बुरा चाहते हैं।

सङ्गेज़नी बर आइना बरखुद हमीज़नी[५]

जो फ़क़ीर अपने रंगमें रंगा हुआ नशयेइर्फ़ांमें[६] मतवाला मस्ताना हो रहा है वह तो शाहोंका भी शाह है। किसकी मज़ाल है इस रंगीले सजीले शाहे हक़ीक़तके आगे चूं भी कर जाये माहेनौ[७] इसीके क़दमोंमें सिजदा करता हुआ दुनियांमें ईद लाता है। आफ़-

---

१ विद्या और हुनर २ हे महान् ३ राजनीति ४ भारी ५ जो आईनेपर पत्थर मारता है वह मानो अपने आपपर मारता है, भावार्थ यह है कि आईना टूटनेपर अपना बिम्ब भी खण्ड खण्ड दिखाई देगा ६ ईश्वरीय ज्ञान ७ दूजका चन्द्रमा।

ताब उसीकी निगाहे-नूर-अफ़्शाँ१ मनौवर२ होकर चमकता फिरता है। समुद्रका तूफ़ान इसीका एक अदना वलवला३ है। किसको मजाल है कि इस तूफ़ाने-जलालकी४ तरफ़ आंखभरके ताक जाय। महाराजा रंजीतसिंहके एक आंख नहीं थी। पर कहते हैं कि फ़क़ीरने वर दिया कि किसीका साहस न पड़ेगा कि तेरे चेहरेकी तरफ़ निगाह उठा सके, चः जाएके ऐबजोई५ करे। जब राजा रंजीतसिंहकी पेशानीके ऐबो सवाब कोई नहीं देख सकता तो महात्मा, साधु, सच्चे बादशाहकी तरफ़ निगाहे ऐबबीं६ तकते वक्त, क्या अन्धी न हो जायगी?

सहर खुरशीद लर्ज़ां बर दरे कूए तो मी आयद।
दिले आईनारा नाज़म कि बर रूए तो मी आयद७॥

सच्चे साधु, फ़क़ीर (ज्ञानी महात्मा) के बरखिलाफ़८ किसी-की ज़बान बोलने लगेगी तो गुङ्ग हो जायगी, हाथ चलने लगेगा तो सूख जायगा, दिमाग़ सोचने लगेगा तो जुनून हो जायगा। कोई शको शुबहवाली बात तो राम कहता ही नहीं। चश्मदीद हक़ीक़त बयान करता है। सच्चे साधुकी तौहीन९ हो और रामसे? हर हर हर! ख़्वाबमें१० भी मुमकिन नहीं। क्या कर्म-

---

१ प्रकाशप्रद दृष्टि २ प्रकाशित ३ जोश ४ तेज प्रवाह ५ ऐब ढूंढना, छिद्रान्वेषण ६ दोष देखनेवाली नजर।

७ प्रातःकाल सूर्य उदय होकर तेरी गलीमें डरता कांपता हुआ आता है (अर्थात् तेरे तेजको सह सकनेकी शक्ति उसमें नहीं है) परन्तु आईनेको धन्य है कि तेरे सामने हो जाता है ८ विरुद्ध ९ बेइज़्ज़ती, निन्दा १० स्वप्न।

काण्डके कैदी और क्या सचमुच आजाद साधु। सबको राम राम, प्रणाम, सलाम।

साधु फ़क़ीरको यह मशवरः१ देना कि तौहीदकार आवेइ-चात पीने पिलानेके बजाय रेल, तार, जहाज, बन्दूक वग़ैरः बनानेकी फ़िक्रमें डूब मरें, यह सलाह व मशवरः रामके दिलो जबानसे तो न निकला, न निकलता है, न निकलेगा। हां, जब साधु लोग अपने स्वरूपको भूलकर अपनी इक़्लीमी सल्तनत (असली राजगद्दी) से नीचे उतर आते हैं तो उनको कुत्ते भी फाड़ खाने दौड़ेंगे। इस हालतमें अपनी तौहीन वह खुद कराते हैं। बेहुरमती और दुःखको एक नूना ३ लाजन देकर बुलाते हैं।

इन्द्र जब ख्वाबमें सूकर (खोक)४ बन गया तो बाक़ी देवता अपने राजाकी यह गति (दशा) देखकर नादिम५ हुए। उसको जगानेकी फ़िक्रमें पड़े। लेहाज़ा इन्द्रको ख्वाब बदनें खुजली, भूक, मारपीट वग़ैरः तरह तरहके दर्दो रंजका शिकार होना पड़ा।

सूर्यग्रहणके मौक़ेपर सूरजकी शबीह६ अल्वान७ (इस्पेक्ट्रम) में काली धारियां देखी जायं तो सफ़ेद नज़र आती हैं।

जानते हो, यह धारियां क्या बताती हैं? उनसे यह पता लगता है कि सूरजमें कौन कौनसी धातु वग़ैरः अनासिर ८ हैं। सूरजकी जायदादका खोज मिलता है, ग्रहणके अन्दर जायदाद रोशन मालूम

१ परामर्श २ ईश्वरको एक मानना ३ एक प्रकारसे ४ सूअर, वराह ५ लज्जित ६ चेहरा, तस्वीर ७ रंगारंग ८ तत्व।

होती थी। साया उतरा तो वह तारीक खुसूफ़१ काला कलंक (सियाह इल्ज़ाम) नज़र आने लगा। यही हाल हर एक "मैं मेरी" (यानी क़ब्ज़ए तसर्रुफ़) का है। अज्ञानका तारीक खुसूफ़ बज़ाते खुद बुरेसे बुरा कलंक है। लगा रहे तो यह छोटे छोटे कलङ्क यानी हमारे दावे और तसर्रुफ़ात२) ख्वाह मालो दौलतके मुतअल्लिक़ हों, ख्वाह इल्मो अक्लके और ख्वाह संन्यास वग़ैरः आश्रमके) रोशन और प्यारेसे लगते हैं। लेकिन वह बड़ा ऐब (अज्ञान, जहल ज़ात) जब उड़ा, दावे क़ब्ज़े मीठे नहीं लग सकते।

सियाह धारियोंका दृष्टान्त तो ख्वाह ग़लत भी हो जावे, लेकिन यह अम्र ब हर हाल दायमो३ क़ायम है कि दिली तअल्लुक़ात व तसर्रुफ़ात अन्दरूनी दावे वो इम्साक४ सख्त ज़ुल्मतके ५ जुगनू हैं। शास्त्र और इरफ़ानकी बात तो दूर रही मामूली तजरबेकी रोशनीमें इनका दाग़ सियाही (कलङ्क) होना, बल्कि यासो हिरमां ६ होना साबित होता है।

तब्अ्जहः७—ज़ेलकी८ तहरीरको पढ़ते हुए यह ध्यान रहे कि दावा क़ब्ज़ये तसर्रुफ़ इम्साक वग़ैरःका हक़ीक़ी वास्ता सिर्फ़ दिल (क़ल्ब) से है, जिस्मसे नहीं। बेरूनी९ अफ़लास१० और चीज़ है और दिलकी फ़क़ीरी और चीज़। कपड़ा रंगना और बात है और हक़ीक़ी संन्यास और है।

दावा और सियाही

• जहां दावा (पकड़ जकड़) है वहीं सियाह-रुई है, तबाही है,

१ चन्द्रग्रहण २ क़ब्ज़े ३ हमेशा ४ कंजसी, रुकावट ५ अंधेरी ६ निराशा ७ सूचना ८ निम्न ९ बाहरका १० कंगाली।

यासोहिर्मां१ है, नाकामी२ है, नामुरादी है, खराबी है, बरबादी है, दिलकी अवस्था तग़य्युर पज़ीर३ है। और बाहरके सामान भी मुतग़य्यर४ हैं। इतना तो हर कोई जानता है। अब रही यह बात कि क्या बाहरकी तब्दीलियां और अन्दरूनी तग़य्युर आपसमें कुछ तअल्लुक़ भी रखते हैं कि नहीं। अगर रखते हैं तो क्या?

इतना तो हर कोई मान लेगा कि बेरूनी मौसिम,मकान सोहबत, ख़ूराकके बदलनेसे मन (बातिन) में तब्दीली वाक़े होती है। और बुरी या भली ख़बरसे दिल शाद५ या मग़मूम ६ हो जाता है। पर एक बात और भी है, जिसका पूरे तौरपर असली यक़ीन आना ही चश्मे-बातिनका७ वा८ होना है। जिसकी बेख़बरीसे "नानक दुखिया सब संसार" हो रहा है, वह बात क्या है?

अटल क़ानून रूहानी:—जबतक---

दिलमें पकड़ जकड़ है, बाहर रगड़ झगड़ है।
दिलसे छोड़ आस, मुरादें आयें पास॥

गुज़श्तम अज़ सरे मतलब तमाम शुद-मतलब९
मतलब—मतलब१०

गंगा करेंगे हम भी दुआ हिज्रे यार की।
आख़िर तो दुश्मनी है दुआको असरके साथ११॥

---

१ निराशा २ निष्फलता ३ परिवर्तनशील ४ बदले हुए ५ हर्षित ६ शोकित ७ अन्तर्दृष्टि ८ खुलना ९ मैंने आशाको छोड़ा कि तमाम आशाएं पूरी हो गईं १० पहले 'मतलब' का अर्थ है चाहना, लालसा इच्छा आदि, दूसरे मतलबमें "तलब" शब्दसे निषेधवाचक 'म' लगा हुआ है अर्थात् इच्छाकी इच्छा न कर, प्रयोजनके प्रयोजन न रख।

११ उलटा प्रयोग करेंगे तो अर्थसिद्धि होगी।

यह क़ानून अमल साइन्सवाले क़यास, इस्तक़रा१, तजरबा, मुशाहिदा२, और तरीक़ा नफ़ी३ इस्बातसे४ बिला इम्काने इस्तसना५ साबित होता है। इल्ज़ाम औरोंके सर जड़नेकी, जवाबदेही औरोंके मढ़नेकी आदतको छोड़कर अगर हम बे रु व रिआयत, अपनी ज़िन्दगीके रंजो राहतआमेज़६ तज़रबोंकी बेखों बुन७ पर ग़ौर करें तो मालूम होगा कि दिलका दुनियांको किसी शयमें उलझना (यानी उसे अमलन८ सत्य या हक़ीक़ी मानना) ज़रूरतमें पड़ना, कुदूरतमें उड़ना या किसी तरहके भी इस्मो शक्लसे दिलबस्तगीका नतीजा बिला नाग़ा सर गश्तगी और दिलखस्तगी होता है। और वहां जब भले-बुरे अवारिज़९ और हवादस१० इर्दगिर्दके११ हालत और अस्बाबे१२ शफ्फ़ाफ़की तरह निगाहे-हक़बींको१३ नहीं रोकते:—

दुनियाके सब बखेड़े झगड़े फ़साद झेड़े,
दिलमें नहीं रड़कते, न निगाहको बदल सकते।
गोया गुलाल हैं यह सुरमा मिसाल हैं यह॥

जब यह जलाले ज़ात सहाबे-हाजातको१४ उड़ाता है, जब मेहरो१५ माहमें१६ अपना ही नूर नज़र आता है। जब इस बातका हुसूल

---

१ तलाश, जुस्तजू, मन्तिक़ (न्याय) को परिभाषामें कुछ व्यक्तियोंपर किसी प्रकारका अनुभव करके उस जातिपर भी वही नियम लगा दें।

२ देखना ३ निषेध, बाधक ४ विधिसाधक ५ अपवादरहित ६ मिला हुआ ७ जड़, बुन्याद ८ कार्यरूपमें ९ आरजे विकार १० हादिसे, दुर्घटनाएं, ११ इधर उधर, चारों ओर १२ कारण (बहुबचनमें) १३ सचाईको देखनेवाली नज़र १४ कामनाओंकी बदली १५ सूर्य १६ चन्द्र।

यक़ीन१ आता है कि माज़ीर हाल३ और मुस्तक़ बिलके४ आरिफ़ानो ५ कामिलानमें मेरा ही परतोए६ ज़ात जगमगाता है। जब क़ल्ब इस मुआमिलेको हेच पाता है कि—

मुफ़ बहरे खुशीकी लहरोंपर दुनियांकी किश्ती रहती है।
अज़सेले सुरूर धड़कती है छाती और किश्ती बहती है॥

जब जिस्मो-इस्मकी महदूद हैसियतसे आज़ाद होकर बरतरअज़ बयान७ सरूरे रुहानीमें८ तबीअत मह्व हो९ जाती है। जब वह शराबे हक़ीकी रंग लाती है।

कां मी शवद बे दस्तो लब, अज़कामे जांहारेख्ता१०।

जब सामने ज़ाहिरी और अस्बाबे दुनियावीको बेएतनाई११ और लापरवाईकी तरङ्ग, बहरे१२ इस्तग़नामें१३ बहा ले जाती है। और क़हक़हा लगाती है—

---

१ यक़ीन अर्थात् विश्वासको तीन श्रेणी हैं :—

(क) "इल्मुल यक़ीन" किसी बातका केवल जान लेना जैसे इस बातका ज्ञान हो कि जहर खानेसे आदमी मर जाता है।

(ख) "ऐनुल यक़ीन" जिस बातको जाना था, उसे आंखोंसे भी देख लेना, जैसे किसीको ज़हर खाकर मरते हुए देख लेना।

(ग) "हक्कुल यक़ीन" स्वानुभव, स्वयं तल्लीन होना, या जहर खाकर मर जाना।

२ भूतकाल ३ वर्तमान काल ४ भविष्य ५ ईश्वरको पहचाननेवाले सत्पुरुष ६ बिम्ब, अक्स। ७ अकथनीय ८ आत्मिकानन्द ९ तल्लीन १० फिर वह हाथ (पांव) नहीं हिलाता, जबान बन्द हो जाती है, मनकी इच्छाएं दूर हो जाती हैं।

११ बेपरवाई १२ समुद्र १३ वैभव सम्पन्नता, सन्तोष, इत्यादि इसके साधारण अर्थ हैं, परन्तु यहां "निवृत्ति" प्रयोजन है।

ई दफ़्तरे बे मानी ग़र्के मये नाब औला१।

यानी जब शिव समाधि आती है, तब दुनियांका मता वो२ माल, फ़तहो इक़्बाल, भूत, प्रेत गणोंकी तरह असमाओ३ अश्काल४ की स्मशानभूमि (क़ब्रिस्तान) में शिवरूप महात्मा (साहबे दिल) के इर्दगिर्द जमघट मचाते नाचना शुरू कर देते हैं धमाचौकड़ी मचाते हैं।

क्या शक वो शुबहेकी गुंजाइश है ?

ओ हथकड़ीके कङ्गन पहने हुए मुजरिम५ ! अगर इस वक़्त भी तू एक लमहा६ भरके लिये या हक़ीक़तकी जिस्मो जहांको सचमुच भूल जाय, अपनी बेखुद ज़ातमें जाग पड़े तो सज़ाका फ़तवा७ देनेवाले जजका दिमाग़ रुक जाय, इज़हार लिखनेवाले मिसल खांका८ क़लम रुक जाय, पकड़नेवाले कोतवालका हाथ रुक जाय, जिरह करनेवाले वकीलकी ज़बान रुक जाय। कौन दिमाग़ है जो तेरे बग़ैर सोच सकता है ? कौन जबान है जो तेरे बग़ैर बोल सकती है ? कौन हाथ है जो तेरी क़ूवत बग़ैर चल सकता है ? मेरी जान ! सब क़ुसूरोंका क़ुसूर (सब पापोंकी जड़) अपनी ज़ात पाकको अमलन या इल्मन भूलना ही था। दरअस्ल अगर क़सूर है तो फ़क़त इतना ही है, बाक़ी सब जुर्म और क़ुसूर इसीके मुख्तलिफ़ भेस हैं। क्यों हो, मुजरिम अहलकारोंकी खुशामदमें पड़े, यह कचहरी वह नहीं।

लिखा है, भृगुने विष्णुके वाम अङ्गमें (बाएं पहलूमें) लक्ष्मीको

---

१ इस निरर्थक दफ्तरका शराबमें डूब जाना अच्छा है (सांसारिक पदार्थोंसे उपेक्षा) २ पूंजी ३ नाम ४ रूप ५ अपराधी ६ क्षण ७ हुक्म ८ सरिश्तेदार।

(यानी दौलत दुनियांको) बड़े ज़ोरसे लात जड़ दी, विष्णुने उठकर भृगुके चरणोंको प्रेमके आंसुसे धोया। उसके केशों (बालों) से पोंछा, और चश्मो१ सरो दिलमें जगह दी, और उस चोटके निशानको सर्टिफिकेट (सनदे फ़ाखिरा) जानकर ताअबद२ पहलूमें अख़्तियार किया। वाह ! जो अग्रनिष्ट (महा फ़िज़ान) लात मारता है दौलत दुनियांको, उसके चरण (क़ुदूमें मुहब्बत बसरोचश्म) ख़ुदाके भी सर-पर क्यों न होंगे, और जो कोई भी दौलत दुनियां (लक्ष्मी) से लिपट-कर ख्वाब ग़फ़लतमें लोटता है, वह भिखारी (गदा) से भी लातें खायगा। शहंशाहे आलम और ख़ुदा ही क्यों न हों। बस यही क़ानून है। यही वेदान्तकी असली तालीमका३ लुब्बे लुबाब है। इसमें संन्यासी फ़क़ीरोंको ठेका नहीं। इस रोशनीकी तो सबको ज़रूरत है। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या ईसाई, क्या मूसाई, सिक्ख, पारसी, औरत, मर्द, छोटा, बड़ा, अदना, आला, हर कोई इस नूरे हक़से फ़ज़याब४ होनेका मुस्तहक़५ है। इस आफ़ताबकी रोशनी बग़ैर किसीका जाड़ा नहीं उतरेगा, इस धूप बग़ैर किसीका पाला नहीं दूर होगा। इसमें ख़ाली माननेकी तो बात ही नहीं। ठीक ठीक जाननेका मुआमिला है। यहां बहस मुबाहिसेकी६ गुंजाइश ही नहीं। हाथ कंगनको आरसी क्या है ? इतने इल्मकी असली वाक़फ़ीयत न होनेसे सबका नाकमें दम होता है।

"कानूनको ला इल्मी उज्रे माकूल करार नहीं पा सकती।"

---

१ आंख २ अनन्तकालतक ३ शिक्षा ४ लाभ उठानेवाला ५ अधिकारी ६ वाद विवाद, शास्त्रार्थ।

एक दफ़ा, वैराग (आत्मज्ञान) को ले लो, बाक़ी सब कुछ ख़ुद आवेगा। इस वास्ते वेद कहता है :—

आत्मानं वा विजानीयात्
अन्यां वाचं विमुंचथ

आत्माको पूरा जान लो, और किसी चीज़की परवा मत करो—

इल्म रा बो अक़्ल रा बो क़ालो क़ील ।
जुम्ला रा अन्दाख़्तम् दर आबे नील[1] ॥
इस्म रा बो जिस्म रा दरबाख़्तम् ।
ता कमाले मारफ़त दरयाफ़्तम[2] ॥

कालिजमें एम० ए० पास करके बाज़ नौजवान तो कालिजमें प्रोफ़ेसर बन जाते हैं। जो कुछ पढ़ा उसीको पढ़ाते रहना उनका पेशा हो जाता है। और कालिजसे एम० ए० पास करके बाज़ नौजवान वकील या मजिस्ट्रेट वग़ैरः बन जाते हैं। अब वह कालिजके मज़ामीन (रियाज़ी[3] वग़ैरः) दोबारा देखनेका शायद कभी भी मौक़ा न पायें। एम० ए० पास करना सब नौजवानोंको ज़रूरी था, लेकिन प्रोफ़ेसर बनना लाज़िमी नहीं। इसी तरह "आत्माको पूरा जान लेना और किसी चीज़की दिलसे परवा न करना" तो हर फ़र्द बशरका फ़र्ज़ है। लेकिन रात-दिन अध्यात्म-विचार और समाधिमें लीन रहना, निजानन्दमें मौजज़न[4] रहना (लहरें मारना) यह ख़ुश-

---

१ इल्म, अक़्ल, गुफ़्तगू सबको दरयामें डुबो दिया २ नाम, रूप सब हार बैठा (खो दिया) हूं, तब सचाईका रहस्य हाथ आया है ३ गणित विद्या ४ लहरें मारना।

क़िस्मती हर एकका हिस्सा नहीं। यह प्रोफ़ेसरी काम है सब संन्यासी फ़क़ीर लोगोंका।

वह लोग जो हस्ब-इक़्तज़ाए फ़ितरत१ अध्यात्म विद्यारूपी (यानी मारफ़ते ज़ातका) एम० ए० पास करके इसी विद्याकी तालीम२ वो तअल्लुम ३ और इल्मको पेशा नहीं बना सकते, उनके लिये वेदका फ़रमान है:—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतो स्तिनकर्म लिप्यते नरे ॥

(ईशा वास्य उपनिषद्)

"अगर काम काज (अफ़आल) में लगे हुए भी तुम ज़िन्दगीके सौ साल बसर कर दो, तो बदीं शर्त (इल्म हक़ीक़त और फ़क़ीर दिली होनेपर) तुम ऐबसे मुबर्रा४ और नुक़ससे मुअर्रा५ हो। लेकिन किसी और सूरतसे नहीं।"

किसी बड़े जागीरदारका बेटा गमे मज़बूर नहीं किया जाता, लेकिन फिर भी वह अमूमन६ टेनिस, क्रिकेट, फ़ुटबाल या शतरंज गंजिफ़ा वग़ैरः खेलोंमें मसरूफ़७ पाया जाता है। और इस खेल-कूदके काम-काजमें लगनेसे वह अपने पैदाइशी हक़ (एमारत८) से गिरकर मज़दूरोंके भी ज़ुमरेमें९ नहीं गिना जाता। इसी तरह जिन्होंने अपने हक़ीक़ी पैदाइशी हक़ (ख़ुदाई शहंशाही) को ले लिया है, वह अगर शग़लन१० रेल तार मशीन वग़ैरः काम काजके खेलमें हिट

१ नैसर्गिक नियमानुकूल २ शिक्षा ३ इल्म होना, पठन पाठन ४-५-पाक, अलग ६-प्रायः, आम तौरपर ७-प्रवृत्त ८-अमोरी ९-मंडल १०-दिल बहलानेके तौरपर।

(चोटपर चोट) मारते हैं, और आसमानतक गेंद उछालते हैं, उनकी शाहज़ादगीसे कौन मुनकिर१ हो सकता है ? और खेलमें बाज़ी जीतना भी सिर्फ़ खुदाहीका हिस्सा है। क्योंकि वह बेफ़िक है, और जिसका फ़िक्रोंसे दम निकल रहा है, वह लह दुनियांके खेलको क्या खाक खेलेगा ? कर्मका निष्काम (बिला चश्मेसिला) होना ज्ञानी (आरिफ़) से खुदबखुद वक़ूअमें आता है। और जहां स्वाभाविक (खुदबखुद) कर्म निष्काम है, कामयावी गुलाम है। और यही आरिफ़ जो निष्काम कर्म हैं यही हैं, जिनको संन्यासका वह गाढ़ा रंग चढ़ता है कि अन्दर-से फूटकर बाहर निकल आता है। बाहर रंगे कपड़ोंसे अन्दर नहीं जाता। जो लड़के खूब खेलते हैं, नींद भी उन्हींकी गाढ़ी होती है। इस छोटीसी दुनियांमें बेफ़िक्रीसे खेलनेवाले बेफ़िक्रसे सोयेंगे। निष्कर्म होयें।

महात्मा देवसेनकी राय तो है यों, कि अध्यात्म विद्या पेश्तर इसके कि ब्राह्मण लोगोंमें उतरे, जो कर्मकांडमें अज़बस२ मस्रूफ़३ रहते थे, राजा लोगोंके अन्दर प्रकट हुई। और बादमें ब्राह्मणोंने इसे संभाला। इस बातको खास वेदके कई हवाले देकर और मुख्तलिफ़४ दलायलसे५ वह अपनी तरफ़से पायये सुबूतको ले जाते हैं। अब गो राम उनसे इत्तफ़ाक नहीं करता और उनके हवालेजातको६ काफी नहीं मानता, और उनके दलायलको नाक़िस७ जानता है, ताहम इस बातसे इन्कार नहीं हो सकता। राजा अजातशत्रु-वरदाहनजबेली, अश्वपति, कैकेय,

१-इंकार करनेवाला २-अत्यन्त ३-लगे हुए, तल्लीन ४-विविध ५-६-प्रमाणों ७-अधूरा।

प्रतरदन, जनक, कृष्ण, राम, शिखिध्वज, अलर्क वग़ैरः सेकड़ों राजे महाराजे इस दर्जेके बेतअल्लुक़ फ़क़ीर दिल हो गुज़रे हैं कि कौन संन्यासी उनकी बराबरी करेगा ? अशोक, रंजीतसिंह, बाबर, अकबर, क्रामवेल, एलिज़ेबेथ, वाशिंगटन, बल्कि चार्ल्स आज़ाम, जिसे नादान लोग नास्तिक क़रार देते हैं, वग़ैरःकी अन्दरूनी ज़िन्दगीपर ग़ौरकी निगाह डाली जाती है, तो उनकी बातिनी बेतअल्लुक़ी, फ़क़ीरदिली, क़ल्बी दर्वेशीको देखकर बुद्ध और ईसा याद आते हैं। इल्म तारीख़की जो किताब है, इस क़ानूनको वाज़ह नहीं करती जो क़ौमोंके उरुज़ो१ ज़वाल२, खान्दानोंकी तबाही और इक़बाल। शाहोंकी पस्ती३ और कमालमें सबब हक़ीक़ी है। वह किताब फ़क़त कांटोंकी बाढ़ है, जिसके अन्दर खेती नहीं, या सजधजकर आई हुई बारात है, जिसमें दुलहा नहीं।

बात थी जो अस्लमें, वह नक़्लमें पाई नहीं।
इस लिये तस्वीरे जानां हमने खिचवाई नहीं॥
एकसे जब दो हुए तो लुत्फ़े यकताई नहीं।
इसलिये तस्वीरे जानाँ हमने खिंचवाई नहीं॥
हम हैं मुश्ताक़े सख़ुन और उसमें गोयाई नहीं।
इसलिये तस्वीरे जानां हमने खिचवाई नहीं॥

लोग कहते हैं, गो बाक़ी उलूमो फ़ुनूनमें भारतवर्ष कभी सब मुल्कोंसे आगे रह चुका है। लेकिन हिन्दुस्तानमें अहले मग़रिब४ की तरह सही तारीख़नवीसीका५ मादा नहीं था—होगा मगर यह

१-उन्नति २-अवनति ३-अधोगति ४-पश्चिमवाले ५-इतिहास-लेखन।

जो सिने-वलादत१, साले फ़ौत२, खाकए-जंग३, इन्क़लावेहुकूमत४, शजरएनस्ब५, खान्दानेशाही६, दौराने तवाही७, वाक़याते-मुल्की८, गुदरोह सरकशी१० वग़ैरःकी तशरीह११ वो तसरीहसे१२ दफ़्तरोंके दफ़्तर काले कर दिये गये हैं। क्या यह सही इल्म तारीखमें शामिल हो सकते हैं? इल्म तारीखमें तो नहीं, लेकिन अज़ीम१३ तारीखमें अलबत्ता दाखिल हैं। अहले मग़रिबके क़लमबन्द१४ किये हुए इस क़िस्मके वारदात१५ और हालात१६ तारीखकी खुश्क हड्डियां कहला सकते हैं। और वह भी अमूमन वेतरतीब१७ और बेमहल१८।

सर आर्थर हेल्पस् एक जगह लिखता है:—"तारीख मेरे सामने मत पढ़ो, मैं जानता हूं कि सिवाय ग़लत और झूठ होनेके कुछ नहीं होगी।"

"हेनरी थूरो" का मक़ूला है:—"माईथालाजी (इल्म मिथ्या कथा क़दीम फ़साना वग़ैरः) में ज़्यादा सचाई पाई जाती है बनिस्बत तारीखके।"

शापन हावरका क़ौल है:—"तारीख ज़मानेके लिये अखबारात मिनिट, वल्कि अक्सर दफ़ै सेकेण्डकी सूईका काम देते हैं। जिस घड़ीके मिनिट ही नहीं दुरुस्त तो घण्टे कहांसे ठीक होंगे।"

एमर्सनः—"वीरका हाल वह लिखे जो उसी दर्जेका वीर हो।"

१-जन्म-तिथि (जन्माब्द) २-मरणाब्द ३-समर-वृत्तान्त (युद्धचित्र) ४-राज्य-परिवर्तन५-कुलवृक्ष ६-राजकुल ७-पतनकाल ८-देशीय घटना ९-विप्लव १०-राजद्रोह ११-व्याख्या १२-प्रस्ताव १३-बड़ी १४-लिखे हुए १५-घटनाएं १६-हालका बहुवचन १७-क्रमरहित १८-बेमौके।

घायलकी गति घायल जाने। और जगह लिखा है:—"मिल्टनको वह समझे जो मिल्टन हो।"

वली रा वली मी शनासद[१]

जो बयानात पेश किये जाते हैं, अगर सही हों तो अमूमन ऐसे बालाई सतहपरके होते हैं जैसे कोई घड़ीकी डायल केस और सूइयोंका हाल तो कह दे, लेकिन उसके अन्दरकी बनावट (कला) का कुछ पता न दे। इतने बयानसे किसीकी बिगड़ी घड़ी नहीं संवरती। फ़क़त इतना इल्म अमली तौरपर कुछ फ़ायदा नहीं देगा, बल्कि दिमाग़पर बोझकी तरह पड़कर "नीम हकीम ख़तरये जान, नीम मुल्ला ख़तरये ईमान" वाली सूरत लायगा। मियां मुअर्रख़[२]! अगर बताते हो तो वह बात बताओ जो मेरे काम भी आये। अजनबी नाम और सन् याद करनेसे मेरा कुछ नहीं सुधरता। बेरूह हड्डियां कोई सबक़ नहीं देतीं। इल्म बेख़ुदाए तारीख तारीकीको नहीं हटाता। आदमीका लिखा हुआ अफसाना[३] पढ़ने बैठें तो छोड़नेको जी नहीं चाहता। क्या ख़ुदाका नाटक (दुनियां) एक मामूली फ़सानेके बराबर भी लुत्फ़ नहीं रखता है और इस लुत्फ़ और दिलचस्पीको दिखाना सही तारीख़नवीसीका काम है?

ऐसी तारीखका मुसन्निफ़[४] वह हो सकता है जो आलमके मुसन्निफ़को सचमुच पहचानता हो, क़ुदरतके क़ानून रूहानीको पूरे तौरपर जानता हो। क़ुदरतके रूहानी क़ानूनको कौन जान सकता

१-महात्माको महात्मा ही पहचान सकता है २-इतिहास-लेखक ३-कहानी ४-प्रणेता।

है ? जो अपनी ही रोज़मर्रा मदोजज़र१ पर :ग़ौर करता करता उस क़ानूनको जान जाए, जिससे रंजो राहत खुशकामी नाकामी वग़ैरः वाबस्ता हैं। आलमके मुसन्निफ़को कौन पहचान सकता है ? जो अपनी ज़ात हक़ीक़ीको सचमुच पहचान जाय (मिन अरफ़ नफ़सेही, फ़िक़द अरफ़ रब्बे ही—२ अरबी) जिसे अपनी खबर नहीं वह ग़ैर ज़मानेवालोंकी, ग़ैर हैसियतवालोंकी, ग़ैर मुल्क और क़ौमवालोंकी खबर क्या खाक देगा ?

किसी किताबमें लुत्फ़ और दिलचस्पी कब होती है ? जब उसमें हम अपने दिलसे सुनें और अपने ही किसी खुफिया तजरबेका पता पाएं। और तारीख आलम अगर रास्त रास्त लिखी जाय तो क्या है ? तुम्हारे ही किसी न किसी वक्त के तजरबोंकी तुज़ुक३ है।

अपने कारनामे४ किसको प्यारे नहीं लगते ? तारीखे आलममें सरज़द५ हुई ग़ल्तियां भी खाली-अजलुत्फ़६ नहीं। आज जवाब-देहीसे पल्ला बचाकर तुम उनसे सबक़ ले सकते हो। यह न कहना कि वाशिङ्गटन, चार्ल्स आज़म, क़ैसर रूमा, मेकाडो वग़ैरःके तजरबे भला मेरे साथ क्या तअल्लुक़ रख सकते हैं ? छिपकर रोनेवाली हिन्दुस्तानकी औरतकी आंखसे :टपकता हुआ आंसूका मोती, जो किसीने भी गिरते नहीं देखा, उसी क़ानून (कशिशे सक़ल) का मजहर७ है। जिसका आसमानमें टूटता दौड़ता हुआ तारा सबको नज़र आनेवाला शिहाब८ है। शाही क़िलोंमें अन्धी बुढ़ियाके

१-ज्वार भाटा २-आत्मपरीक्षासे ईश्वरपरीक्षा हो सकती है ३-घटना ४ जीवन वृत्तान्त ५-अंकित ६-आनन्द ७-प्रकाश ८-चमकीला तारा।

झोंपड़ेमें दिलकी ख्वाहिशें तो एक जैसी हैं, और अन्दरूनी रुओ राहत भी एक जैसे। और क़ानून क़ामयाबी भी एक ही है। इस एक क़ानूनको जान लिया तो तुम गोया तारीखे आलमको जान गये।

इस "ला" (क़ानून) को अमली तौरपर सब मज़हबोंने जाना लेकिन इल्मी बुनियाद सिर्फ़ वेदान्तने क़ायम की। इल्मके ख़ज़ानेमें कोई ताज़ा खबर इसके लिए नहीं। छान्दोग्य उपनिषद्में क़दीम बुज़ुर्गोंने इस अर्फ़ानको पाकर यों कहा:—

"आजसे कोई हमको ऐसी बात नहीं बता सकता जो हम पहले-से न जानते हों; ऐसी कोई ख़बर नहीं ला सकता जो हमको पहलेसे मालूम न हो; ऐसी कोई चीज़ नहीं दिखला सकता जो हमने पहले न देखी हो; क्योंकि इस अर्फ़ानके पानेसे सब अनदेखा देखा गया, सब बेसुना सुना गया, सब नजाना हुआ जाना गया।"

ऐसे आरिफ़का सानी१ (ग़ैर) है नहीं तो उसके आगे दम कौन मारे? स्यापा२ तो उनके लिये है जो इस अर्फ़ानसे बेबहरा३ हैं, और वदीं-वजह४ पारेकी तरह बेक़रार हैं। ऐसे लोग ख़ाली इल्मन वो अक़्लन वेदान्त पढ़कर दरयाये-मआसी५ और क़ुल्ज़ुमे-ग़मको६ उबूर७ नहीं कर सकते, "शोक (ग़म वो ग़ुस्सा) को आत्मवित् (आरिफ़ेहक़) तैर जाता है।" यह वेदकी बतलाई हुई कसौटी (महक) इनको ज़र ख़ालिस नहीं साबित करती। पस कामिल सफ़ाईके लिये और पूरी तरह मेल और मिलावट उतारनेके लिये

१-उपमान, जवाब २-रंज, शोक ३-अनभिज्ञ ४-इस कारणसे ५-पाप-सागर ६-शोक-सिन्धु ७-पार उतरना।

धन्धोंकी आगमें पड़ना और कर्म (फेल) के तेज़ाबमेंसे गुज़रना बेजा नहीं है।

कद्रे *आफ़ियत आँकसे दानद कि ब मुसीबते गिरफ़तार आयद* १।

जिससे वेद निकले हैं उसीसे दुनियांका इज़हार२ है। पस वेद (श्रुति, वेदान्त) की तालीम तो कुछ और हो और ज़िन्दगीके कड़े तजरबे कुछ और सबक़ दें, यह कभी मुमकिन नहीं। दोनों एक दूसरेके मुआविन३ हैं। जो कुछ इल्मन वो अक्लन श्रुति (वेदान्त) का उपदेश है वही अमलन मक़तबे ज़िन्दगीमें सबक़ मिलता है।

क्या तुम्हारा विश्वास (एतक़ाद) वेदान्ततत्त्व (तल्क़ीन हक़ीक़त) पर इतना ही कचा है कि वाक़ेआत ज़िन्दगीसे इसको ज़रर४ पहुंचनेका अन्देशा हो गया? ज़रा सँभल कर देखो, कोई ताक़त वेदान्तकी मुख़ालिफ़५ नहीं है। कोई मज़हब वेदान्तका दुश्मन नहीं, कोई फ़िलासफ़ा वो साइन्स इसका हरीफ़६ नहीं। सब ख़ादिम७ हैं ख़ादिम। अलबत्ता बाज़ दानिस्ता८ ख़ादिम हैं और बाज़ नादानिस्ता९।

अगर आम लोगोंको पहलेकी तरह वह वैकुण्ठ और स्वर्गके लालच आज खींचते ही नहीं, और न स्वर्गलोकके उसूलके मुनासिब कर्म (अफ़आल) बल्कि जीते जी बचनेकी ख़्वाहिश ज़्यादा

१-सुखका मजा वही जान सकता है जिसने दुःख झेला हो २-प्रकाशन ३-मददगार, सहायक ४-नुक्सान ५-विरोधी ६-शत्रु ७-सेवक ८-जानबूझकर ९-अनजानपनसे।

ग़ालिब१ है, या दुनियांके आराम ज़्यादा दिलकश२ हैं, या और सब तरहसे भी उनके इरादे और मतलूब३ बदल रहे हैं, तो कहिये क्या यह नाम रूपके पहातेके नमूदी-अशया४ एक रस (बरएक हाल) भी रह सकती हैं? उनको क़ायम दायम५ रखनेकी कोशिश करना तो नमूद-बेबूदमें६ दिल लगाना है। मिथ्या असमाय७ वो अश्का-लको८ आत्माकी शान देनेकी जहद९ है।

कोशिशे बेफ़ायदास्त वस्मावर अबरूए कोर१०

हिन्दू शास्त्रकी असली तल्क़ीन११ कर्मकाण्डकी सूरतको अब्दी१२ बनानेमें नहीं है। बल्कि अब्दी आत्माको हर सूरतमें और हर कर्ममें, हर मौसिम और ज़माने (एक) में अनुभव (हक्कुल यक़ीन) में लाना है। पस आज रेलों, तारों, जहाज़ों, कलोंसे द्वेष (दुश्मनी) छोड़ो। अगर रात है तो रातके साथ मत लड़ो, बल्कि उसी रातमें दीपक जला दो। अमावस्या (शबेज़ुल्मत) को दीवाली (दीपमाला) की रात कर दो; चिरागां१३ आलम कर दो। जब दिन आया तो रात भी आयेगी। और यह तो कहो, रात किस बातमें दिनसे बुरी है? दिनमें अगर एक क़िस्मका सुख है तो रातमें दूसरी क़िस्मका। पर इससे फ़ायदा उठानेवाला चाहिये, कलयुग अगर बुरा है तो सिर्फ़ उसके लिये जो उसको ब्रह्म देखने (दीदारेहक़) का ज़रीया नहीं बनाता।

१-प्रबल २-मनोहर ३-जिसकी चाह हो ४-दिखावेकी चीजें ५-सदैव ६ जो चीज़ कुछ है ही नहीं ७ नामका बहुवचन ८ रूपका बहुवचन ९ लड़ाई, दुराग्रह १० अन्धेकी भवोंपर ख़िज़ाब लगाना फ़ज़ूल है ११ शिक्षा १२ जिसका अन्त न हो १३ दीपमाला।

यह आत्माको महदूद बनाना या बन्दे-इस्मो-शक्लमें१ लाना नहीं है। बल्कि जिस्मो इस्मकी महदूदियतको उड़ाना है। ख्वाबमें भयानक शेर वग़ैरःका मुक़ाबिला हो तो आंख खुल जाती है। ख्वाब हीका शेर ख्वाबके सारे अशियायको२ खा जाता है। लोहा लोहेको काटता है। तन-परवर३ जब एक दफे भी अपना जिस्म सारा हिन्दुस्तान देखेगा, तो छोटेसे जिस्मानी क़फ़समें जी न लगेगा। दायरा४ वसीअ५ हो जायगा और रफ़्ता रफ़्ता ख़त्ते मुस्तक़ीम मदार बन जायगा। भूमिका चढ़ जायगी।

अच्छा जी! कुछ भी कहो, राम तो हर रंगमें रमता राम है। हर जिस्ममें प्राण है। हर प्राणकी जान है। सबमें सब कुछ है। पर इस वक्त क़लम बनकर लिख रहा है। सूरज बनकर चमक रहा है। गोली गङ्गो (जिसको लोग श्री गङ्गाजी कहते हैं) बनकर गा रहा है। पर्वत बनकर सब्ज़ दुशाले ओढ़े, कुम्भकर्णकी तरह पैर पसारे, सुस्ती (ख्वाबे गफ़लत) में लिपट रहा है। मगर अपनी एक सूरत बहुत ही ज़्यादा भा रही है:—मैं हुआ हूं बे हिस्सो-हरकत६, बेजान।

मेरी सत्ता (क़ूवत) पाये बग़ैर पत्ता नहीं हिल सकता। मुझ बिन सब कुछ दीमक (सुसरी) की तरह सो जाता है। जली हुई रस्सीकी तरह ढय (गिर) जाता है। काम बिगड़ने लगा? मैं किस-को इल्ज़ाम दूं, मेरे बग़ैर और कुछ हो भी।

ओ! मौत! बेशक उड़ा दे इस एक जिस्मको, मेरे और अज्साम७

---

१ नाम रूपके बन्धनमें २ वस्तुओं ३ अपनेही शरीरको पोषण करनेवाला ४ घेरा ५ विस्तारवाला, बड़ा ६ अचल ७-शरीरका बहुवचन।

ही मुझे कम नहीं। सिर्फ चान्दकी किरणें चान्दनीकी तारें पहनकर चैनसे काट सकता हूं। पहाड़ी नदी नालोंके भेसमें गीत गाता फिरूंगा। बहरे-मव्वाजके१ लिबासमें लहराता फिरूंगा। मैं ही बादेखुश-खिराम२ नसीमे३ मस्तान-गाम४ हूं। मेरी यह सूरत सैलानी हरवक्त, रवानीमें रहती है। इस रूपमें पहाड़ोंसे उतरा, मुरझाते पौदोंको ताज़ा किया, गुलोंको हंसाया, बुलबुलको रुलाया, दरवाज़ोंको खड़खड़ाया, सोतोंको जगाया, किसीका आंसू पोंछा, किसीका घूंघट उड़ाया। इसको छेड़, उसको छेड़, तुझको छेड़, वह गया, वह गया, न कुछ साथ रखा, न किसीके हाथ आया।

अकबर दिली *

कुलाहे ताजे सुल्तानी कि बीमें जाँ अजो दर्जस्त।
कुलाहे दिलकशस्तमा बदर्देसर नमी अरजद॥

ख्वाजः हाफ़िज़ने हमारे शहनशाह अकबरको नहीं देखा था वरन इस क़िस्मका इशारा हर्गिज न करते, जो शेक्सपियरने भी किया है।

भारी वह ग़मसे सर है कि जिस सर पे ताज है।

क्या दोस्त क्या दुश्मन, क्या आईने अकबरीके शेख़ साहब

१-तरंगें मारनेवाला समुद्र २-अच्छी चाल चलनेवाली हवा ३-पवन ४-जिसका कदम मस्ताने ढंगसे पड़े * महान् हृदयत्व।

(अबुल्फज़्ल) क्या खुफ़ियानवीस हज़रते मुल्ला, क्या हिन्दु क्या मुसलमान, क्या पुर्त्तगालके पादरी क्या सिंघ गुजरातके जैनी, क्या अमीर क्या ग़रीब, क्या आलिम क्या जाहिल, क्या हिन्द क्या पारसा सबके दिलोंमें जिसकी हुकूमत थी; जहां चाहे और जिस गोदको चाहे सिरहाना बनाकर बेखटके नींदमें पांव पसार सकता था। ऐसा कौन था ? हिन्दुस्तानका शहनशाह अकबर। फ्रांसके मय्यामें ग़दरवाले बादशाहकी बाबत टाम्समैने यह रहमका कलमा इस्तेमाल किया:—

हाय ! यह उसकी बदनसीबी थी कि बादशाह हुआ। बेशक जिस बादशाहका राज रिआयाकी जमीन और जिस्मोंतक महदूद हो उससे बढ़कर ग़रीब क़ाबिलेरहम मुसाफिर दूर वतन कौन हो सकता है ?

क्या अकबरके दुश्मन न थे ? थे क्यों नहीं। लेकिन महाराणा प्रताप ऐसे आली हिम्मत जांबाज़, पक्के, सच्चे, धर्मात्मा क्षत्रियका हरीफ़ होना भी अकबरकी शानको दोबाला करता है। खैर ! हमें तो इस वक्त, हुकूमते अकबरके किसी और पहलूसे सरोकार है।

क्राम्वेल, बाबर, महमूद, रंजीतसिंह, नोज़ और भी हज़ारों बादशाहों और वीरोंका दस्तूर था कि जो मुहिम शुरू करते सिद्क़ १ दिलसे बारगाह इलाहीमें २ अपना सब कुछ नज़र ३ करके खुदाके नामपर शुरू करते और उनके फ़तूहात ४, उनकी सिदाक़त ५ और यादे खुदाके मुतनासिब थीं। बहुत खूब, लेकिन आग़ाज़ेकार ६ पर दुआ और मदद मांगना कौनसी बड़ी बात है। हम हक़ीक़ी बहादुर

१-सच्चे २-ईश्वरार्थ ३-भेंट ४-जय ५-सच्चाई ६-कार्य आरम्भ।

उसको मानते हैं जिसकी अक़ीदत१ और फ़क़ीरदिली२ फ़तहके बाद जोश मारे। "जिसे ऐशमें३ यादे खुदाही रही, जिसे तैशमें४ खौफ़े खुदा न गया।" सामवेदके "केन" उपनिषद्में रिवायत५ है कि हवास६ व आज़ाके७ उक़ूल व मलायक (देवता) एक बार बड़े मार्केकी मुहिम जीत चुके और जैसाकि अभीतक दस्तूर चला आ रहा है ऐशो इशरत और रंगिलियाँ फ़तह मानने लगे। उपनिषद्में ग़जबकी खूबोके साथ दिखलाया है कि क्योंकर इन देवताओंको सबक़ मिला। ऐसे सबक़को याद रखनेवाला हिन्दुस्तानका एक शहन-शाह अकबर हुआ है।

जब फ़तहपर फ़तह पाता गया, और एकके बाद दूसरा सूबा हाथ आता गया, यहांतक कि तक़रीबन८ तमाम क़लमरो९ हिन्दज़ेर क़लम१० हो गया। जब वह मुमलिकतकी११ वसअतके१२ लिहाज़से और आबादीके लिहाज़से खाक़ाने चीनको छोड़कर दुनियांमें सबसे बड़ा बादशाह हो गया—जब उसके इक़बालका सितारा ऐन सिमतुर्रास* पर पहुंचा, जब वह चढ़ते चढ़ते उस फिसलनी घाटीतक उरूज१३ पा चुका, जहां इधर तो नीचे खड़े हुए लोग मुंह तकते हैरान खड़े हुए कहते हैं:—

यह जायेगा बढ़कर कहां रफ्ता रफ्ता

---

१ विश्वास २ साधुता ३ सुख ४ गुस्सा ५ कथा ६ इन्द्रियां ७ अवयव ८ लगभग ९ राज्य १० अधीन ११ राज्य १२ विस्तारमें १३ उन्नति

* सिमतुर्रासका अर्थ है 'सरकी तरफ़' अर्थात् सरसे आस्मानकी ओर सीधी रेखा, भावार्थ है अत्युन्नत दशा।

और उधर नैपोलियन ऐसा मर्दे मैदान पांव फिसलते ही धमसे तहतुस्सरामें१ गिरा और गिरते ही चकनाचूर! ऐसी हालतमें उस ग़फ़लत लानेवाली साइतमें देखिये।

सबको जब भूल गए उनको खुदा याद आया

सोचने लगा यह हड्डी चमड़ेका,ज़रासा जिस्म! उसमें यह ताक़त कहांसे आई, किसकी बरक़तसे---

दौलत गुलामे मन शुदो एक़बाल चाकरम

होता जा रहा है, इस दिलो दिमाग़में नूर कहांसे आता है।

कौन है मनको चलाता, कौन है।

इन पिरानोंको हिलाता कौन है॥

क्या इसरार है! हैरत है!

रोज़मर्रा इस क़िस्मके सिलसिले खयालसे उस नूरन अलानूर, ऐन सुरूर ज़ातेबारीके शुरूएमें बादशाह सलामतका यह हाल हो गया कि--

दिल तेरा जान तेरी आशिके शैदा तेरा--

दिन रातका शग़ल हो गया---नमाज़ोरोज़ओ सस्बीहो तोबा इस्तग़फ़ार---

अकबरके हमअसरोंमें इङ्गलैण्डके तख़्तपर मलका एलिज़ैबेथ रौनक़ अफ़रोज़ थी। यह मलका इंगलैण्डके दीगर हुक्मरानोंमें२ वैसी ही मुमताज़३ है, जैसे अकबर दीगर शहाने हिन्दमें। इंगलैण्डमें अहद एलिज़ैबेथ या प्रोशिया जर्मनीमें अहद फ्रेडरिक आज़म इल्म व हुनरकी तरक़्क़ी और मुल्की इन्तज़ामकी खूबीके एतबारसे तो हिन्द-

---

१ पाताल लोक २ राजाओं ३ प्रतिष्ठित।

में अहद अकबरकी हमसरी१ कर सकते हैं और वह दोनों ताजवर अपने अपने मुल्कमें हरदिलअज़ीज़ीके२ लिहाज़से अकबरकी बराबरी कर सकते हैं, लेकिन मज़हबी तहक़ीक़ात ख़ुदापरस्ती और सब मज़हबों के लिए एकसां रिआयतकी रूसे अकबरकी कामरानी३ लासानी है। महाराज विक्रम और भोजके जमानेमें भी इसी दर्जेकी फ़लाहो४ बहबूदी५ रिआयाको नसीब थी, लेकिन वह दूरके ज़िक्र हैं। महाराज अशोकके ज़मानेमें रिआयाको हर तरहका अम्न मयस्सर था। खयालात और मज़हबकी पूरी पूरी आज़ादी हासिल थी। चीन वग़ैरः ग़ैरमुमालिकके लोग हिन्दुस्तानमें आते और मुस्तफ़ीज़* होकर जाते थे। शिकागो सन् १८९३ ईस्वीकी तरह हिन्दमें जल्सएमज़ाहिबे दुनियां६ बड़ी धूम धामसे मुनअक़िद७ हुआ था। लेकिन अकबरका तो न सिर्फ दर्बार बल्कि दिल भी लगातार जल्सगाह मज़ाहिबे दुनियां बन रहा था। किसी मज़हब या मिल्लतके लिये दर्वाजा बन्द न था। इल्म-रास्ती और हक़को ख़्वाह किसी जानिबसे आए हमेशा खुशामदेद८ कहता था। इस जवांमर्दका दिल सुल्हकुल्का९ घर था और पेशानी किसी मुख़ालिफ़ मज़हब या रायके लिए मुक़फ़्फ़ल१० न थी। उलमा, मुल्ला, शेख, क़ाज़ी, विद्वान्, पंडित, शाक्त, वैष्णव, जैनी, पारसी, ईसाई, पादरी और कश्मीरके, दक्खिनके, पूरबके, सिंध, गुजरात, फ़ारस, अरब, पुर्त्तगाल और फ्रान्सतकके लोग अपने अपने

१ बराबरी २ सर्वप्रिय ३ ख़ुशनसीबी, सौभाग्य, प्रताप ४ सुख ५ शान्ति ६ विश्वधर्म सभा ७ संगठित ८ शुभागमन ९ सबके साथ सन्धि (मित्रभाव रखना) १० ताला लगा हुआ।

* फल पाकर, लाभ उठाकर।

अक़ीदे और ख़यालात दिल खोलकर बादशाहको सुनाते हैं, दाद देते हैं। दिनहीको नहीं, रातको भी जब लोगोंके आरामका वक्त है महलसराके चबूतरेपर शहनशाह अकबर--

पये इल्म चूं समअ बायद गुदाख्त१की ज़िन्दा मिसाल बने हुए हैं और बादशाह सलामत निहायत शौक़से सुनते हैं और दिलसे उन्से२ इन्सानी३ की मशअल रोशन कर रहे हैं। बाज़ नाज़रीनको कुछ दिल्लगीकीसी बात मालूम होगी कि शाही चबूतरेसे रस्से लटकाये जाते हैं और महलोंकी दीवारके साथ एक पलंग खिंचा हुआ ऊपर आता है हत्ता४ कि चबूतरेके क़रीब आ पहुंचा। रातके वक्त मुअल्लक़५ पलंगपर विराजमान पण्डितजी महाराज या हज़रते सूफी ए किराम या कोई और साहिबेदिल अपना मस्लये तक़रीर शुरू करते हैं। शाहेबेदार मग़ुज़ग़ौरसे सुनते और सवाल करते हैं। अक्सर सारी रात ज़िक्र सुनते सुनते या बहसोतफ़तीशमें गुज़र जाती है। वाहरे शौके तहसीले इल्म!

बादशाहके हुक्मसे सब मज़ाहिबकी किताबोंके फारसी तर्जुमे शुरू हो गए। तर्जुमये इंजीलके शुरूका मिसरः है:-

ऐ नामे तो जोज़ू किरस्टू

भागवत, महाभारत और ख़ुसूसन भगवद्गीता, विष्णुपुराण और चन्द उपनिषदें फ़ारसी नज़्मोनस्रमें पिरोई गयीं। इन तर्जुमोंको सुनते रहना और ख़ुद ज़ुबाने हालसे एमालमें सुनाते रहना अकबरका

---

१ विद्याप्राप्तिके लिये मोमबत्तीकी तरह पिघलना चाहिये अर्थात् कठिन परिश्रम करना चाहिये २ प्रेम ३ मनुष्यसे सम्बन्धित ४ यहांतक ५ जमीनसे ऊंचा, अधर।

सबसे बड़ा काम था। गीता, विष्णुपुराण और उपनिषदों के यह तर्जुमे अद्वैत वेदान्तके तरफ़दार हैं, इन्हीं किताबों के फ़ारसी तर्जुमे यादमें भी हुए, मगर यह अकबरवाले तर्जुमे थे जो फ्रांसके आदमी लातीनी ज़ुबानमें (जो उन दिनों यूरुपकी इल्मी ज़बान थी) तर्जुमा करके फ़िरंगिस्तानको ले गए। इस तौरपर ये किताबें पहले पहल फ्रांसमें और वहांसे जर्मनीमें पहुंचीं। यूरुपमें उनकी अज़हद१ क़द्र हुई। श्लीगल, विक्टर कज़िन, शोपेनहर वग़ैरः यूरुपके फ़िलसफ़ियोंकी फ़र्त्ते जोशमें२ हिन्दू फ़िलसफ़ःकी सनाख्वानी३ इन किताबोंकी क़दरदानीकी शाहिद है। फ्रांससे हेनरी थोरोके ज़रिये यह लातीनी तर्जुमे अमरीकामें पहुंचे और थोरोके दोस्त इमर्सन (अमरीकाके सबसे बड़े मुसन्निफ़) के हाथ लगे। इमर्सन और थोरोकी तहरीरपर वेदान्तका बड़ा असर है और ज़्यादःतर इमर्सनकी तसनीफ़ात४की बदौलत अमरीकामें वेदान्तका नया मज़हब खियालेनो५ चल निकला जो बहुत जल्द आलमगीर होनेका उम्मीदवार है।

दुनियांके तक़रीबन सबसे बड़े दारुलउलूम (हार्वर्ड यूनीवर्सिटी) का मुहक्क़िक़ प्रोफेसर जेम्स विश्वविद्यालय रायज़न६ है कि सूफ़ी मज़हब आम मुसलमानीपर वेदान्तके असरका नतीजा है राक़िम इस रायसे इत्तफ़ाक़ नहीं करता अलबत्ता इसमें कुछ शक नहीं कि सूफ़ी खयालातके फैलनेमें अक्सर जगह वेदान्तसे बहुत मदद मिलती है और हमें इस अम्रके तसलीम७ करनेमें भी

---

१ अत्यन्त २ उमंगकी रौ ३ प्रशंसा ४ रचना ५ नया विचार ६ सम्मति देता है ७ मानते।

तअम्मुल१ नहीं कि संस्कृत किताबोंके अकबरी तर्ज़मे हिन्दुस्तान और फारस वग़ैरमें तसव्वुफके बढ़ाने फैलानेमें जुज़ोअज़ीम हुए हैं।

अकबरका चेहरा गुलेनौबहारकी तरह खिला हुआ था। संजीदगी लिये हंसी गोया लबोंसे पैवन्द थी, यह बशाशत२ क्यों न होती? जहां मुहब्बते खल्क़ या इश्क़े इलाही है ग़मोग़ुस्साकी क्या मजाल कि पास फटक सके।

हरजा कि सुल्तां ख़ैमःज़द ग़ौग़ा नमानद आमरा३
यादेअल्ताफ़े ख़ुदा दर दिल निहां दारेम मा
दर दिले दोज़ख़ बहिश्ते जाविदां दारेम मा४ ॥

जिनके दिल ऐसे वसीअ५ और जिनकी बातिनी मुहब्बत आलमगीर न थी, उनमेंसे एक मुल्ला साहब दरपर्दा६ बादशाहको यों तान७ करते हैं,—

खन्दः कर्दन रख़न दर क़सरे हयात अफ्गंदनस्त,
मीशवी अज़हर नसीमे हमचूं गुल ख़न्दां चरा८।

हज़रते नासेह९! आप तो बादशाहकी हर एकसे ख़ंदा पेशानीको मौतके सायेके आंचलके तले छिपाया चाहते हैं। जाइए!

---

१ रुकावट २ प्रसन्नता ३ जहां राजाका डेरा होता है वहां प्रजा कोलाहल नहीं कर सकती ४ ईश्वर कृपाका स्मरण हम अपने दिलमें रखते हैं (मानो) नरकके अन्दर स्वर्ग स्थान है ५ बड़े ६ गुप्त रूपसे ७ ताना मारना ८ व्यर्थ हंसना (बेफिक्र रहना) मानो जीवनका नाश करना है, फूलोंकी तरह हर हवासे क्यों खिलता है (अर्थात् फूल खिलनेके बाद झड़ जाता है) ९ उपदेशक महोदय।

मौतकी गीदड़ भबकियां उनको दीजिये जो मुहब्बते खल्क़से बेबहरः१ हैं। हमारे बादशाहकी तो ज़बाने हाल यूं पुकार रही है।

मरना भला है उसका जो अपने लिए जिए।

जीता है वह जो मर चुका इन्सानके लिए॥

रूए कि जो दिले न कुशायद न दीदनीस्त२।

ग़ैर मज़हबवालेसे भी सूलूक करो। "मुख़ालिफ़३से भी मुहब्बत करो", "शख्सी अदावत४को जड़से उखाड़ डालो", सबसे मुहब्बत रखो" वग़ैरः—कहना आसान है, लेकिन करना बहुत कठिन। पर हां! कठिन हो ख्वाह कठिनसे भी कठिन, अमूमन हमेशा और खुसूसन आजकल हिन्दुस्तानमें बग़ैर इस उसूलको अमलमें लाए २१ ...के क़ौमी५ और इत्तेहादे६ मुल्की हर्गिज़ हर्गिज़ नहीं पैदा हो सकता। हम यह नहीं कहते कि जिस मज़हबमें पैदा हुए उसे छोड़ो, ढुलमुल्यक़ीन या रक़ाबी मज़हब बन जाओ। अलबत्ता हम यह ज़रूर कहते हैं कि जिस मज़हबकी चारदीवारीमें पैदा हुए उस चार दीवारीसे क़दम बाहर निकालनेको गुनाह समझना बज़ाते खुद रूहानी खुदकुशी७का गुनाह है। जहां पैर टिकाओ मुहकम८ जमाओ, फिसल न जाओ। मगर बराए खुदा क़दम आगे भी बढ़ाओ। किसी चारदीवारीमें पैदा होना और परवरिश पाना तो अम्र लाज़िमी है। अलबत्ता उसी चारदीवारीमें बन्द रहकर उसीमें मरना पाप है, और

१ अनभिज्ञ २ किसीको लाभ न पहुंचानेवाला मुख देखनेयोग्य नहीं है ३ विरोधी ४ व्यक्तिगत शत्रुता ५ जातीय ऐक्य ६ देशप्रेम ७ आत्महत्या ८ मजबूत।

लोगोंके नापायदार१ दुनयवी खज़ाने तो, लूटकर ले लेने भी मंजूर हो जाते हैं। लेकिन कैसे तअज्जुबकी बात है कि और लोग जब अपने रूहानी खज़ाने (फ़िल्सफ़ः और उसुलो-अक़ायदेमज़हबी२) मिन्न-तसे भी पेश३ करें तो नफ़रत ही रहती है। इस नफ़रतका बाइस असली क्या है ? खामी, यानी जिस मजहबमें पैदा हुए उसमें तहसील कामिल और काफ़ी तजरबा न होना—

आजादिए मा दर गिरवे पुख्तागिए मास्त

आवेख्तास्त अज़ु रगे खामी समरे मा४

लेकिन कोई कुछ ही कहे औरोंके अक़ायदे मज़हबीकी वही क़द्रो-इज्ज़त करना जो अपनी चारदीवारीके अक़ीदोंकी करते हैं, अज़हद मुश्किल है। प्यारे नाज़रीन ! ज़रा खयाल तो करो, जिस मज़हबमें आपने परवरिश पाई उस मज़हबके मुखालिफ़ लोगोंकी वाज़ोतक़रीर५ सुननेकी तैयारीके लिए किस क़दर दिलकी कमर कसनी पड़ती है। मगर बल बे अकबर६ ! तेरा दिल है कि सबका दिल हो रहा है। तू. गोया रैयतके सब घरोंमें पैदा हुआ था। सब मज़हबोंकी गोदमें खेला था, सब फ़िक़ोंके७ यहां पला था, न सिर्फ मुबारक इस्लाम बल्कि हिंदू

१-अस्थिर २-धार्मिक सिद्धान्त ३-भेंट ४-फलकी कचाई फलको बांध रखती है अर्थात् कच्चा फल डालीसे नहीं छूटता, पका होते ही छूट जाता (आजाद हो जाता) है। इसलिये, कहा है कि—

मेरी स्वतन्त्रता पुख्तगीके हां गिरवी रक्खी है।

कचाईकी शाखामें हमारा फल लटक रहा है॥

५-उपदेश, व्याख्यान। ६-धन्य हो ७-सम्प्रदायों।

धर्म, जैनमत, पारसाई, ईसाई मज़हब भी शद्दोमद[1]से तेरे पैदाइशी मज़हब हो रहे हैं। हिन्दुस्तानको इन्तखाबे जहां नाम देते हैं और तू इन्तखाबे हिन्दुस्तां बन रहा है। इन्सानको आलमेसग़ीर(Microcosm) कहते हैं, मगर तू दरहक़ीक़त इन्साने अकबर बन रहा है। मुहब्बतकी इन्तहा यह होती है कि रफ़ीक़[2]का दिल हमारा दिल हो जाये और यकदिलीका परला सिरा यह है कि दोस्तके अक़ायद और उसका खुदा हमारे अक़ीदे और खुदा हो जायं। और पाकीज़गीकी हद यह है कि यह यकदिलीका परला सिरा एक महबूबतक महदूद न रहे, बल्कि सारी ही खल्के खुदाके साथ अमलमें आजाय। वह कौनसी करामात है जो इस पाकीज़ा इश्क़े आलमगीरके लिये नामुमकिन है। वह कौनसा मोजज़ा है जो इस आशिक़े हक़ीक़ीके लिये बच्चोंका खेल नहीं बन जाता? आज अकबरकी इस पाकीज़ा उल्फ़ते आलमगीरका हम नाम रखते हैं।

अकबर दिली

इस अकबर दिलीसे क्या नहीं हो सकता? आईने अकबरीमें लिखा है कि जब अकबरका जज़्बे अन्दरूनी बहुत बढ़ गया तो अकबरकी निगाहसे बीमार राज़ी हो जाने लगे। अकबरका ध्यान करनेसे लोगोंकी मुरादें बर आने लगीं। दूर दराज़की बातें अकबरके दिलमें मुनकशिफ़ हो जाने लगीं।

> इश्क़ हो रास्त, करामात न हो क्या मानी।
> हस्बे इर्शाद हो हर बात न हो क्या मानी॥

१-ज़ोरशोरसे २-मित्र।

यह कोई नई बात नहीं है। हज़रत मुहम्मद, ईसा, हिन्दुओंके ऋषि, मुनि, महात्मा किन किनकी बाबत ऐसा नहीं सुना गया ? अज़्लाय मुत्तहिदा अमरीकामें आज हज़ारों बल्कि लाखों ऐसे लोग मौजूद हैं जिनके लिये अमराज़का इलाज सिवाय खुदामें यकसूदिलीके और किसी तरीक़से करना सख्त तरीं क़स्म और बदतरीं कुफ़से भी बुरा है।

औषधी खाऊं न बूटी लाऊँ ना कोई वैद बुलाऊँ ।
पूरन वैद मिले अविनाशी वाहिको नब्ज़ दिखाऊं ॥

मौलाना जलाल रूमी—

शाद बाश ऐ अशअशे सौदाएमा
ऐ दवाए जुम्लः इल्लतहाएमा
ऐ दवाए नख़वतो नामूसमा
ऐ तो अफ़लातूनो जालीं नूसेमा

हालमें साइकालोजी आफ़ सजेशन (इल्मुरूह) की इल्मी तहक़ीक़ातने अमरीकाके सरकारी शिफ़ाख़ानोंमें इलाज बिला दवा (इलाज रूही) जायज़ करा दिया। अकबर दिली इस्लाम, विश्वास अगर राईके दानेभर भी हो तो पहाड़ोंको हिला सकता है। मेरे प्यारे नौजवानाने हिन्द ! गई गुज़री १८ वीं सदीके डेविड ह्यूम वग़ैरःके भर्में आकर जहलका नाम इल्म मत रखो, बजाय इस्लाम और विश्वासको कम करनेके रासिखुलएतक़ादी१ और मुहब्बते आलमगीरको बढ़ाते क्यों नहीं ? अगर बर्क़, दुखानकी२ ताक़तें बयानसे बाहर हैं तो क़ल्बे

१ दृढ़ विश्वासता २ बिजली स्टीम।

इन्सान क्या नहीं कर सकता ? विला लिहाज़ क़ौमो मिल्लतो मुल्कके हर फ़र्दे बशरके साथ वह उन्सेइन्सानी, जो सच्चा इन्सान बनाता है, इतना जोशसे भरा पैदा करो जो कुन्बेके दो एक आदमियोंमें खर्च कर रहे हो, मुल्ककी मिट्टीतकको अज़ीज़ बनाकर देखो, यही दुनियां जन्नते-रिज़्वां१को न मात कर दे तो कहना। क्या तुमने दिलको अदावतसे बिलकुल पाक२ और कीना३से शीशेकी तरह साफ़ करनेका तजरबा कभी किया था ?

वफ़ा कुनेमो मलामत कशेमो खुश बाशेम
कि दर तरीक़तेमा काफ़िरीस्त रंजीदन४

अगर यह इम्तहान५ अभीतक नहीं किया तो तुम उसके नतीजोंको रद्द करनेके भी मजाज़ नहीं, योगदर्शनमें लिखा है:—जब हममें मुहब्बते कुल्ली (अहिंसा) मज़बूत तौरपर क़ायम हो जाय तो आसपासके जंगली दरिन्दे-गज़िन्दे६ वग़ैरःमें भी अदावत नहीं रह सकती। अगर अमलोजवाबे अमल (ऐक्शन और रीऐक्शन) की मसावियतका७ मसला दुरुस्त है तो क्यों ऐसा न होगा ?

इल्मनुमा८ जहूल९ या अक़्ले ज़ाहिरमें१० रूहानी बदहज़मीके११ दायमी१२ हो जानेसे शक्की मुहलिक१३ तपेदिक़१४ पैदा होती है। यही कुफ़्र१५ है जो इस्लाम (श्रद्धा-विश्वास) रूहानी जिन्दगीको चुपके

१ बहिश्त (स्वर्ग) के द्वारपालका नाम है २ शुद्ध ३ द्वेष ४ कोई मुझे धिक्कारता है तो भी मैं खुश रहता हूं और उसके साथ सलूक भलाई करता हूं क्योंकि मेरे धर्ममें नाराज होना नास्तिकता है ५ परीक्षा ६ हिंसक जीव, काटनेवाले ७-साम्य ८-विद्याभास ९-अज्ञान १०-बाह्यबुद्धि ११-आत्मिक अजीर्ण १२-स्थिर १३-मारक १४-क्षयरोग १५-नास्तिकता।

चुपके खा जाता है। दिलमें शक रखते हो ? उसके बजाय बन्दूककी गोली क्यों नहीं मार लेते ?

जिसे अवाम१ कशफो, करामात २ (खिर्क़ आदत) कहते हैं, क्या उसकी खातिर इस्लाम और अकबर दिली दर्कार हैं ? हर्गिज़ नहीं। इस्लाम और अकबर दिली तो फ़ीनफ्स ३ ही मुसर्रत है। जब कभी तुम अपने बड़े अफ़सरसे मिलते और उसकी कोठीपर जाते हो तो क्या अफ़सरके उस कुत्तेकी खातिर जाते हो जो कोठीके दरवाज़ेपर दुम हिलाता हुआ तुम्हारे पैर सूंघता है ?

खिर्क़ आदत कय बकारायद दिले अफ़सुर्द: रा।
गर रवद बर आब नतवां मोतक़िद शुद मुर्द:रा४ ॥

एक दफ़े, दर्बारियोंके इम्तहानके लिये अकबरने एक खत खींचा और कहा इसे छोटा कर दो। कोई नीचेसे, कोई ऊपरसे, कोई वस्त५ से खतको काटने लगा। अकबर बोला "यों नहीं, यों नहीं! बग़ैर काटे या मिटाये कम करो।" बीरबलने उससे बड़ी लकीर पासमें खींचकर कहा, "यह लो, तुम्हारा खत छोटा हो गया।" वाह! वाह!! इसी तरह अगर तुम्हें किसी मशरबो६ मिल्लत७का रश्क८ है तो उस खतको मिटाते या काटते मत फिरो। मज़हबी दंगे ठीक नहीं, यह हिकमत दुरुस्त नहीं। तुम अपने दिलको उनके दिलसे वसी अतर९

१-जनता २-चमत्कार ३-वास्तविक ४-ख़िर्क़ आदत अर्थात अनैसर्गिक, अस्वाभाविक, अननैचरल, मौजज़ाचमत्कार। जिसका दिल बुझा हुआ है, जिसमें जीवन नहीं है, उसपर चमत्कारका असर क्या होग ?
मुर्दा अगर पानीपर चले तो भी उसके प्रति श्रद्धा नहीं हो सकती।
५-मध्य ६-सम्प्रदाय ७-धर्म ८-ईर्ष्या ९-विस्तृत।

बना दो, अपनी प्रेमभक्तिको उनके प्रेमसे बढ़ा दो, अपनी उल्फ़ते१ इन्शानीको उनकी उल्फ़तसे दगज़तर२ कर दो, अपनी हिम्मतको बुलन्दतर कर दो, अपने खयालको फ़राखतर३ कर दो। हक़ीक़त (परमेश्वर) अपने यक़ीन (विश्वास) को बड़ेसे बड़ा यानी अकबर बना दो, दुनियाँकी ज़ाहिरी झलक इस्मायो४ अश्काल५ की चमक दमक, उस नमूदोपदीदको६ गूना गूनी७ सूरत हाय नापायदार८को बू क़लमूनी९ ख्वाह किसीकी आँखोंको अन्धा कर दे, फ़िलासफ़र और प्रोफेसर इस सुरावमें पड़े डूबें, हाकिम और अमीर इस दामे अनकबूतमें१० फँसे पड़े रहें, पण्डित और आलिम११ लहरोंमें उलझे रहें, जवान और बूढ़े इस ख्वाबमें पड़े मरें, लेकिन तुम्हें ज़ाते हक़ीक़ीको कभी न भूलना, तुम्हें अपनी आंख, हक़े मुतलक़से न उठानी। ऐ अहले यक़ीन, ऐ हक़ीक़तओं, फिर देख मज़ा किसका रश्क और कैसे हरीफ़१२?

कुमरियां आशिक़ हैं तेरा, सर्वबन्दः है तेरा।
बुल्बुलें तुझपर फ़िदा ह, गुल तेरा दीवाना है॥

ज़ाहिरी हिन्दूपन, मुसल्मानपन, ईसाईपन वग़ैरः मुख्तलिफ़ प्यालोंकी तरह हैं जिनमें पाकीज़ः इश्के आलमगीरका दूध पिलानेकी कोशिश वक्तन फ़वक्तन होती रही है। लेकिन इन सब प्यालोंका दूध, इन सब मुशरबोंकी जान नफ़ी अनानियत१३ या इश्के-हक़१४ है।

१-प्रेम २-बड़ा ३-खुले हुए ४-नाम ५-रूप ६-सांसारिक दृश्य ७-रंगबरंग होना ८-अस्थिर ९-अनेक रंगमय होना १०-मकड़ीके जालेमें ११-विद्वान १२-शत्रु १३-अपने आपको मिटा देना १४-ईश्वरप्रेम।

मज़हबे इश्क़ज़ हमः मिल्लत जुदास्त ।
आशिक़ांरा मज़हबे मिल्लत खुदास्त१ ॥

इन पुराने प्यालोंकी तरह हज़रत अकबरने भी एक जाम गढ़ा, यानी नये रसूमो क़वायदमें यह आवेयहयात२ डाला। इस नये जामका नाम रखा गया —"दीने इलाही"।

आज़ादखीका मशरब३ था। हिन्दू-मुसलमानोंको शीरोशकर४ कर देना इसका मक़सद५ था। प्याला खूब सुथरा था, मगर प्यालों-से हमारी भूख या प्यास नहीं बुझ सकती। प्याले तो पेश्तरसे भी बहुतसे मौजूद हैं। हमको तो दूध चाहिए या शराब सही, जिगरकी आग तो वहदतकी आवेहयातसे बुझती है। अकबर दिली दरकार है, ख्वाह किसी प्यालेमें दे दो, पुराना हो कि नया, ज़रीं६ हो कि सिफ़ाली७।

जिगरकी आग बुझे जिससे जल्द वह शय८ ला

प्याला परस्तीं९से निफ़ाक़१० बढ़ता है। यह प्याले बज़ाते खुद तो बुत११ हैं। आखिर यह बुतपरस्ती१२ कहांतक ? मुबारक है वह, बजाम१३ नोशीकी १४ तरङ्गमें जिसके हाथसे प्याला छूट गया और टूट गया। लामज़हब।

क़दहे बलबम् बूद शिकस्ती रब्बी १५

१-प्रेमधर्म सब धर्मोंसे अलग है। प्रेमियोंको प्रेम ही ईश्वर रूप है।

२ अमृत ३ स्वतन्त्रता ही सिद्धान्त था ४ दूध, मिश्री, अर्थात् दोनोंको मिलाकर एक कर देना ५ उद्देश्य ६ सोने चांदीका ७ मिट्टीका ८ वस्तु ९ पात्र-पूजा १० द्रोह ११ मूर्त्ति १२ मूर्त्तिपूजा १३ प्याला १४ पीना १५ प्याला मेरे मुंहतक आया ही था कि खुदाने तोड़ दिया।

मुबारक है वह दुलहन, जिसके सतरो पर्देको, जिसके कपड़ों गहनोंको, जिसके हिजावे उरूसी१ को ऐन मुहब्बतमें खाविन्द२ खुद आकर उतारता है, यह बनाव-सिंगार, यह पोशाकलिबास पहने ही किसके लिए थे ?

ईं खिरकः कि मी पोशम, दर रहने शराब ऊला३

यह मुबारक मोतियोंवाला जब वैष्णवोंके मन्दिरोंमें जाता है तो कृष्णकी मूर्त्ति उससे मोती मांग ही लेती है। आंसू निकलवाकर छोड़ती है।

हाथ खाली मर्दुमेदीदः ! बुतोंसे क्या मिलें।
मोतियोंकी पंजए मिजगांमें एक माला तो हो४ ॥

मुसल्मानोंकी मस्जिदमें गुजर हो तो—

सिजदः मस्तानाअम बाशद नमाज़,
मुसहिफ़े रूयश बुअद ईमाने मन५।

का हाल होता है। "वेशक कुछ नहीं है मासिवा अल्लाहके" ईसाइयोंके गिर्जाओंमें वह खुदी व जिस्मानियतका सलीव६ पर मुअल्लक़७ नज़्ज़ारा८ अपने साथ सलीवपर खींचे वग़ैर कब छोड़ता है ?

---

१ वधुलज्जा २ पति ३-जो गुदड़ी में पहन रहा हूं वह प्रेम-दारूके बदले गिरवी रक्खी जाय तो अच्छा है।

भावार्थ—४-आंखोंकी पुतलियां बुतोंसे (माशूकोंसे, प्रेमपात्रोंसे) खाली हाथ क्या मिलें—कुछ नहीं तो पलकोंके पंजेमें मोतियोंकी माला तो हो:—प्रेमाश्रुओंसे प्यारेको प्रसन्न करो।

५-मस्तीमें झुकना ही मेरी नमाज़ हो और कुरआनके पवित्र पृष्ठ जसा प्यारेका चेहरा मेरा ईमान हो। ६-क्रोस ७-अधर ८-दृश्य।

न दारेआखि़रत ने दारे दुनियां दर नज़र दारम ।
जे़ इश्क़त कार चूं मनसूर मा दारे दिगर दारम१ ॥

क्या यह अकबर दिली अकबरतक ही मख़सूस थी और हमसे तुमसे बिल्कुल बईद२ है? क्या "सुलतांदिली" ज़ाहिरी सल्तनत होनेपर मौक़ूफ़३ है? हर्गिज नहीं। ईसाके हमरकाब४ कोई सौ घोड़े तो नहीं चलते थे, लेकिन उसकी बर्कते दिलकी बदौलत लाखों नहीं करोड़ों युरुपके बाशिन्दे ग़रीब ईसाके नक़्शेपा५ पर चलनेमें नजात मानते हैं। क्या बंजर अरब और क्या अरबका एक अनपढ़ यतीम जंगलोंमें रहनेवाला जिसके दिलमें शोलएइस्लाम यक़ीनकी आग भड़क उठी "नहीं है कुछ सिवा अल्लाहके" रेगिस्तान अरबके बेजान ज़र्रे इस आगने बारूदके दाने बना दिये और इस रेतकी बारूद आसमानतक उछलते उछलते थोड़े ही अर्सेमें एशियाके इस सिरेसे उस सिरेतक फैल गई। मशरिक़ और मग़रिबको अहाता कर लिया, देहलीसे ग्रेनाडातक घेर लिया। हाय ग़ज़ब! एक दिल ग़रीब दिल बादशाहका नहीं एक उम्मी६ यतीमका और यह ख़ुदा दिली! अब कौन कहेगा कि बादशाह दिली (अकबर दिली) बेरूनी बादशाहतको मुहताज है?

१-"दार" का अर्थ है घर, सूली यह शब्द इस शेरकी जान है, इसीने अलंकार पैदा किया है। अर्थः—मेरी दृष्टिमें (लक्ष्य) न यह लोक है, न परलोक (दारे आख़िरत-क्यामत। दारे दुनियां—यह लोक) परन्तु तेरे प्रेममें मनसूरकी तरह मेरी दूसरी ही दारपर है (मनसूरको सूलीपर चढ़ाया गया था) अर्थात मेरा अभीष्ट कुछ और ही है। इतना लिखनेपर भी थोड़ा है।

२-दूर ३-निर्भर ४-साथ ५-पदचिन्ह ६-अनपढ़।

बेरूनी बादशाहत तो बादशाह दिलीकी सद्देराह और मज़ा, हिम१ है। बुद्ध भगवानको बादशाह दिलीकी ख़ातिर ज़ाहिरी बादशाहतको तर्क करना पड़ा। ऊंटपर चढ़कर ऊंट न लेना तो टेढ़ी खीर है। असबाब ज़ाहिरदारी और सामाने दुनियवीके बीचमें रहकर पानीमें कंवलकी तरह बेलौस२ रहनेका सबक़ आजकल दरकार है और यह सबक़ पिछले ज़मानेमें महाराज जनक, अजातशत्रु, भगवान रामचन्द्र और वह मैंदाने जङ्गमें नग़मये यज़दानी३ गानेवाला दे गये थे, वही सबक़ आज तीन सौ साल हुए रोशन तरीक़पर शहंशाहे अकबरने हमें फिर दिया। मसलहते वक्त यही है कि ख़्वाह किसी हालतमें हो अकबर दिली हासिल कर लो।

अहले हिन्द४! मायूस५ न हूजिए, यह बीज उगे बग़ैर नहीं रह सकते। क़ुदरते कामिला६ इस खेतीको दहक़ान७ है, विश्वास (ईमान) से खाली हों तुम्हारे दुश्मन। यक़ीनसे बेनसीब तुम्हारी बला हो। मेरी जान! मिट्टीके ढेलोंमें अनाजका बीज तो इस क़ुदरतसे उग आता है, तो क्या तुम इन्सानोंके साथ ही ख़ुदाको मज़ाक़८ करना था कि सरज़मीने दिलमें तुख़्म९ अकबर दिली न उगायी?

मैदान मार लेना तो ग़ैरइख़्तियारी १० अम्र है, लेकिन दिलका मारना तो तुम्हारे इख़्तियारका काम है। और सच तो यह है कि जो साहबे दिल हो गया वह साहबे दुनियां भी हो गया।

१-रोकनेवाली २-अलग अलग ३-हरिभजन ४-भारतवासियो ५-हताश ६-पूर्ण ७-कृषिकार ८-उपहास ९-बीज १०-पराधीन।

मारना दिलका समझता हूं जिहादेअकबर१ ।

वही ग़ाज़ी२ है बड़ा जिसने यह काफ़िर मारा ॥

और यह कहा करते हैं—दिल बदस्तावर कि हज्जे अकबर अस्त३ वहां अपने ही दिलकी तसखीर४ मानो खेज़ है। अगर ज़ाहरी सल्तनत तुम्हें नसीब नहीं तो कम अज़ कम एक विलायतमें तो हुक्मरां हो सकते हो। वह कौन ? वह विलायते दिल५। सल्तनते कल्बो।

अगर तन रा नबाशद दिल मुनौवर ज़ेरे ख़ाकशकुन।

न बाशद दर शबिस्तां इज्ज़ते फानूसे ख़ाली राह्?

हक़ीक़ी बादशाह वही है जो—

ग़मोगुस्सओ यासो अन्दोहो हिरमां।

इनादो फ़िसादो अमलहाय शैतां ७॥

को अपनी विलायतमें भटकने न दे।

कामयाबी बख़्शा८ इत्तफ़ाक९ सिर्फ नेकीमें हो सकता है। जो लोग गुलाम नफ़्स१० रहकर तरक्क़ीकी उम्मीद करते हैं, जो लोग बुराईकी नीयतसे मिलते हैं, जिहालतके क़ायम रखनेको इत्तफ़ाक़

१-धर्मके लिये युद्ध २-शूर ३-मनको वशमें कर लेना ही बड़ी तीर्थयात्रा है ४-वशमें करना ५-मनोराज्य।

भावार्थ—६-जिस शरीरके अन्दर मन रोशन नहीं है उसे ख़ाकमें दबा दो। रात्रिके समय ख़ाली फ़ानूसकी इज़्ज़त कुछ नहीं होती अर्थात् दीपक ही फ़ानूसकी शोभा है—प्रकाशित मन ही शरीरकी प्रतिष्ठाका कारण हो सकता है।

७-शोक, क्रोध, रंजोग़म, द्वेष, विग्रह इत्यादि, यह सब शैतानके काम हैं ८-सफलता देनेवाला ९-एका १०-इन्द्रिय-दास।

करते हैं वह रेतके रस्से बटते हैं। उन्हें उरूजे१ आलम (इवोल्यू-शन) का बहाव मशीते-ईज़दी२ का दबाव दरियाये पस्तीमें ग़र्क़ाब३ करता है। यह वह क़ानूने कुदरत है कि इसकी आंखोंमें कोई खाक नहीं डाल सकता। ज़ोर सिर्फ़ पाकीज़गी४में है। अगर थोड़ा बहुत तजरबा५ हासिल कर चुके हो तो अपने दिलसे पूछो, है कि नहीं ? लार्ड निटीसनका सर गिलाहड कहलाता है—

दस जवानोंकी मुझमें है ताक़त,
क्योंकि दिलमें है इफ़्फ़तो अस्मत।

पाकीज़गी व रास्ती, शुद्धि व सचाई, यक़ीन और नेकी, इस्लाम व अकबर दिलीसे भरा हुआ आदमी अलमे तरक्क़ी हाथमें लिये जब क़दम बढ़ाता है तो किसकी मजाल है कि आगेसे टल जाय ? अगर तुम्हारे दिलमें यक़ीन और रास्ती भी है तो तुम्हारी निगाहें लोहेके सुतून चीर सकती हैं। तुम्हारे खयालकी ठोकरसे पहाड़ोंके पहाड़ चकनाचूर हो सकते हैं। आगेसे हट जाओ, दुनियांके बाद-शाहो ! यह शाहे दिल तशरीफ़ ला रहा है। सख्त पत्थरकी तरह मुल्कमें सदियोंके जमे हुए तअस्सुबात६ उसके पांवकी आहट पाकर उड़ जायंगे। अहिल्याकी शिला इस रामके चरण छूते ही देवी होकर आसमानको सिधारेगी। असाए७ अकबरदिली कुल्ज़ुम८को मारो, वह रास्ता दे देगा। सबसे पहले मुसलमान (खुद हज़रते मुहम्मद) का क़ौल है "अगर मेरे दायें कानके पास सूर्य खड़ा हो-

१-विकास २-ईश्वर ३-डुबोना ४-पवित्रता ५-अनुभव ६-बेजा पक्षपात ७-लाठी ८-एक नदीका नाम।

जाय और बाएं तरफ़ चांद, और दोनों मुझे धमकाकर कहें कि चल हट पीछे ! तो भी मैं कभी नहीं हट सकता।

अगरचे कुत्ब१ जगहसे टले तो टल जाए।

और आफ़ताब भी कब्ले उरूज ढल जाए॥

कभी न साहिबे हिम्मतका हौसला टूटे।

कभी न भूलसे अपनी ज़बाँ पे बल आए॥

सफ़ा क़ल्बी२ रास्तबातिनी३, अकबर दिलीमें यह ज़ोर है, खौफ़े दिल इसके बग़ैर दूर नहीं होता, बीमोरजा४ इसके बग़ैर जान खा जाती है और खौफ़ वह बला है कि मर्दको नामर्द करता है। सारी ताक़तके होते कुछ होने नहीं देता। जैसे अन्धेरेमें उमूमन तीराफ़-लीई५के सिवा और कोई काम बन नहीं पड़ता, इसी तरह जब दिलमें यक़ीन और अकबर दिलीकी रोशनी न हो तो इन्सानसे कोई कारे नुमायां६ बन नहीं पड़ता, जिस क़दर पाकीज़गी७ और यक़ीन दिलमें ज़्यादा गहरा होगा उसी क़दर हमारे काम ज़्यादा रोशन होंगे। नक़्शो बनयचा फ़रो शुद बुलन्द मो गर्द द८ दुनियांके ख़ौफ़ो ख़तर

ग़मो गुस्सा व यासो अन्दोहो हिरमा९

उस वक़्त तक तुम्हें ज़रूर हिलाते रहेंगे जबतक दुनियांके

नक़्शो निगारो रंगो बू, ताज़ा बताज़ा नो बनो१०

१-ध्रुव २-हृदयका शुद्ध होना ३-आन्तरिक सत्यता ४-आशा और निराशा ५-कुकर्म ६-महत्कार्य ७-पवित्रता ८ बांसरीकी फूंक नीची होनेहीसे ऊंची होती है ९-रंज क्रोध निराशा दुःख १०-पदार्थ नये नये रंग रूपमें जंचते रहेंगे।

तुम्हें हिला सकते हैं और जब तुम दुनियांके लालचों और धमकियोंसे नहीं हिलते तो तुम दुनियांको ज़रूर हिला दोगे। इसमें जो शक करता है वह काफ़िर है।

अकबर दिलीका हिन्दी या संस्कृत तर्जुमा होगा महान्‌आत्मा यानी बुज़ुर्ग रूह। वह आदमी अकबरदिल या महात्मा हर्गिज़ नहीं हो सकता जिसका दिल तंग महदूद एक छोटेसे दायरेमें१ बन्द है, जिसकी हम्दर्दी२ सिर्फ़ हिन्दू व मुसलमान या ईसाई नामसे वाबस्ता३ है और उससे परे नहीं जा सकती, वह तो असग़र४ दिल है, अकबर५ दिल नहीं लिखो; आत्मा है, महात्मा नहीं। अकबर दिलीका तो हाल यह है।

हर जान मेरा जान है, हर एक दिल है दिल मेरा,
हां! बुल्बुलो गुल, महरो महकी आंखमें है तिल मेरा।
हिन्दू मुसल्माँ पारसी सिख जैन ईसाई यहूद,
उन सबके सीनोंमें धड़कता एकसां है दिल मेरा।

जापानी बच्चा जब स्कूलमें जाने लगता है तो एक न एक दिन उस्ताद शागिर्दमें ज़ैलका६ सिलसिलये गुफ़्तगू ज़रूर छिड़ता है:—

उस्ताद—तुम कितने बड़े हो? (जब बच्चा अपनी उम्र बताता है तो फिर)

उस्ताद—तुम इतने बड़े क्योंकर हुए?

बच्चा—ख़ूराककी बदौलत।

उस्ताद—यह ख़ूराक कहांसे आई?

१-वृत, वर्तुल २-सहवेदना ३-सम्बन्धित ४-छोटा ५-बड़ा ६-निम्न।

बच्चा—हमारे मुल्ककी ज़मीनसे पैदा हुई (बेशक अगर नबाती गिज़ा है तो बराहे रास्त और अगर हैवानी गिज़ा है तो बज़रिए जिस्मे हैवानी अंजामकार ज़मीने मुल्कहीसे तो आती है)।

उस्ताद—पस तुम्हारा जिस्म जापानी मिट्टीसे फलता-फूलता है। और मां-बापमें ताक़त कहांसे आई, जिसकी बदौलत तुम पैदा हुए ?

बच्चा—गिज़ासे, जो जापानकी ज़मीनसे निकली।

उस्ताद—पस जापानकी मिट्टीसे न सिर्फ़ तुम फलते-फूलते हो, बल्कि पैदा भी इसीसे हुए।

बच्चा—जी हां।

उस्ताद—पस जापानको इख़्तियार है, जब मुनासिब समझे, यह जिस्म ले ले।

बच्चा—जी हां, मेरा कोई उज्र जायज़ न होगा।

चलो, इतनीसी बातसे नन्हे बच्चेके हर रगोरेशेमें मुल्कपर जांनिसारीका१ खयाल हमेशाके लिए खुब गया। क़ाबिले तहसीन२ हैं वह छोटे छोटे बच्चे जिनके यह मोटीसी बात ज़हनमें समा जाती है और अमलमें आ जाती है। हमारे मुल्कमें इधर तो विद्वान् पण्डित और उधर आलिमोफ़ाज़िल मौलवी सदियोंमें अमलन यह न समझे कि चूंकि हम हिन्दू और मुसल्मान एक ही मां (हिन्दुस्तान) से पैदा हुए हैं, और इसीके दूधसे पलते हैं, चूंकि हम हिन्दू और मुसल्मान दोनोंकी रगोंमें खून एक ही नबातात३ आबोहवा४ वग़ैरःसे

१-नौछावर होने २-प्रशंसनीय ३-वनस्पति ४-जलवायु।

पैदा हो रहा है तो हम हक़ीक़ी भाई हैं। यूरुपके किसी मुल्कका शख़्स जब अमरीकामें जा बसता है तो वह तीन सालके क़यामसें कुल उसकी हमदर्दी और मुहब्बत अमरीकाके पड़ोसियोंसे हो जाती है, ख्वाह वह उसके हममज़हब१ हों या नहीं। यह नहीं कि जिस्म अमरीकामें और दिल उस पुराने मुल्कमें रहे।

यूरुपके अकसर मज़हब ईसाई लोग हैं और बाज़ उनमें हज़रते ईसाके नामपर जान फ़िदा करना ऐन-राहत२ समझते हैं। लेकिन सारे यूरुपमें एक भी ऐसा न मिलेगा जो हज़रते ईसाकी क़ौम या हज़रते ईसाके मुल्कको अपनी क़ौम या मुल्कसे ज़्यादा अज़ीज़३ रखता हो।

राक़िम मुहब्बतसे कहता४ है और मुहब्बत प्रेम वह चीज़ है कि उसकी सख़्ती भी गवारा होती है। प्यारे अहलेइस्लाम! यह तफ़र्क़ा५ क्यों? बक़ौले शायर—

सर है कहीं दिल कहीं जान कहीं है

सदियोंसे हिन्दुस्तानमें रहते हैं तो दिल हिन्दू लोगोंसे अलग क्यों रक्खे जायं।

हिन्दू पण्डितोंसे हमें यह कहना है "मर्यादा पुरुषोत्तम भगवानके शबरीके जूठे बेर, ग़रीब मल्लाहसे प्रेम, बन्दरोंसे गर्वीदा६ कर लेने-वाली मुहब्बत, दुश्मनके भाईपर वह शफ़क़त" ज़रा याद तो करो। और ज़रा यह भी याद करो कि लफ़्ज़ "पण्डित" की मुन्दर्जः

१-सहधर्मी २-परमसुख ३-प्यारा ४-उत्तम पुरुषको अन्य पुरुषमें कहनेकी शैली है क्योंकि "मैं" उत्तम पुरुषके स्थानमें 'राक़िम' (लेखक) अन्य पुरुष कहा गया है ५-जुदाई ६-आसक्त।

ज़ैल तारीफ़ कौन कर गया है ? दोनों जानिब लड़ने मरनेको फ़ौजें डट रही हैं। सारे हिन्दुस्तानके शहज़ोरोंके दल मारे गुस्से और फ़िसादके गोया आसमानतक उछल रहे हैं। ऐसे मौक़ेपर ज़ुबाने हालसे और काले१ से नूर बख्शे आलम (जगद्गुरु) कैसे साफ़ और सुरीले गीतमें तुम्हारे लिए पैग़ाम या हुक्म छोड़ गया है। हज़ार साल हो गये, आकाशने अपने डाकखानेमें इस चिट्ठीपर गुरुका नाम न पड़ने दिया। क़ासिदे२ हवा इसे अपने परोंसे बांध शुमाल३ जनूब४ मशरिक़ो५ मग़रिब६ पुरानी दुनियां, नई दुनियां, निस्फ़ कुर्रये शुमाली निस्फ़कुर्राए जनूनी, जापान, यूरोप, अमरीका, आस्ट्रे-लिया सब जगह पहुंचा आया। आफ़रीं७ है इस कबूतरकी वफ़ादा-रीको। ग़ैर मुल्कके लोग इस मुरासिले८ पर दिन दूनी रात चौगुनी तरक्क़ी पा रहे हैं। पर हाय! तुमने, जिनके लिये यह श्रुति यह वही९ पहलेपहल नाज़िल१० हुई थी, इसी अमली वर्त्तावके वक्त बहा-नोंहीमें टाल दिया।

पंडितकी तारीफ़११

माहिरे इल्मोफ़न बरहमनमें,
गायमें फीलमें१२ कि दुश्मनमें।
सगमें१३ सगकशमें१४ एक निगाही हो,
दिलमें उलफ़त हो और सफ़ाई हो।
जिसमें इस एकताकी रंगत है।
वही पंडित है वही पंडित है॥

१-वचन २-दूत ३-उत्तर ४-दक्षिण ५-पूर्व ६ पश्चिम ७-धन्य ८-संदेसे ९-इलहाम १०-उतरी ११-लक्षण १२-हाथी १३-कुत्ते १४-कुत्तेमार।

(भगवद्गीता अध्याय १५ श्लोक १८)

ढाई अक्षर प्रेमके पढ़े सो पंडित होय

पंडित तो वो है जिसकी चश्मे-मुहब्बत१ वो२ है। जो ज्ञान और प्रेमके जोशमें हैवानात, बल्कि पाषाण पत्थरतकमें भी अपने ठाकुर भगवान्‌को देखता और पूजता है, चेजाए३ कि पंडित वह कहलाये जिसे हज़रते इन्सानके सायेसे नफ़रत हो, मुसलमानको छूना पाप जाने और अमलन पत्थर (प्रतिमा) हीमें भगवान माने।

अकबरके पास उसके कोकाकी कई दफ़े शिकायत आई। बार बारकी बग़ावत और कई मरतबाकी साज़िशकी खबरें अकबरने इस कानसे सुनकर उस कानसे निकाल दीं। जब हवाखाहाने दौलत४ने सख्त गिला किया कि जहांपनाह! इस क़द्र नर्मी व रियाअत क्यों वा५ रखी जा रही है, तो जवाब दिया कि "तुम लोग नहीं समझते कि मेरे उस कोका भाईके दर्मियान दूधका एक दरिया बह रहा है, जिसको मेरे लिये नामुमकिन है। मैं भला क्योंकर उसपर अताब६ कर हूं?"

क्या अकबरदिली है! आफ़रीं७!

अकबर और उसके कोकाने एक ही राजपूत मांका दूध पिया था। क्या हिन्दू और मुसलमान एक ही मां हिन्दुस्तानका दूध नहीं पी रहे हैं?

१-प्रेमचक्षु २-खुली ३-कहां ४-राज्य-हितचिन्तक ५-जायज़ ६-क्रोध ७-धन्य है।

भावार्थ—बस, जो कुछ गुज़र गया, उसका ख़याल न करो।

पिछली शिकायतें भूल जाओ। गिले गुस्से सब माफ़, रूठे यार मनाये गये।

गरज़े दस्त ज़ुल्फ मुश्कीनत खताय रफ्त रफ्त
वरज़े हिन्दुएशुमा बरमा जफाए रफ्त रफ्त
गरादिले अज़ ग़मज़ए दिलदार यारे वुर्दे वुर्दे
दरमियाने जानो जानां माजराए रफ्त रफ्त
तारे कब रोशनीसे न्यारे हैं।
तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं॥
अय अदू! ऐंठ ले बिगड़ तन ले।
सख्त कह दे कि सुस्तही कह दे॥
जोशे गुस्सा निकाल ले दिल से।
ताक़ते तैश आज़मा तो ले॥
मुझे भी इन तेरी बातोंसे रोक थाम नहीं।
जिगरमें घाम न कर लूं तो "राम" नाम नहीं॥
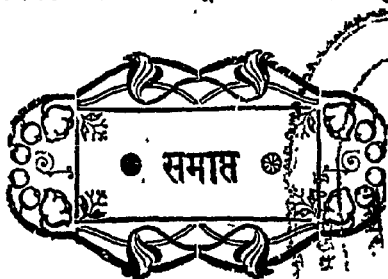
४३—रामचरितमानसकी भूमिका

लेखक—अध्यापक श्रीरामदास गौड़ एम० ए० ।

यह पुस्तक क्या है, गुसाईं तुलसीदासकृत रामचरितमानसकी कुंजी है । रामचरितमानसपर इतनी गवेषणापूर्ण पुस्तक अभीतक नहीं छपी है । इस पुस्तकके पांच खण्ड हैं ।

१ ले खण्डमें " शिक्षा और व्याकरण " है ।

२ रे खण्डमें "मानस शंकावली" है । रामचरितमानसके पाठकों तथा श्रोताओंको पढ़ते सुनते समय अनेक कथाओंपर शंकाएं हुआ करती हैं, जिनके समाधान इसमें प्रश्न और उत्तरके रूपमें दिये गये हैं ।

३ रे खण्डमें "मानस-कथा-कौमुदी" है । रामचरितमानसमें आनेवाली कथाओंका समाधान उसका पूरा विवरण देकर किया गया है ।

४ थे खण्डमें "मानस-शब्द-सरोवर" है । इसमें रामचरितमानसमें आनेवाले शब्दोंका कोष दिया गया है ।

५ वें खण्डमें तुलसीदासजीकी जीवनी, गुसांईजीका चित्र और उनके हाथकी लिखी रामायणका फोटो भी दिया गया है । पुस्तक बड़ी विद्वत्ता और खोजके साथ लिखी गयी है । प्रत्येक साहित्यप्रेमी तथा मानसप्रेमी और भगवद्भक्तको पढ़नी चाहिये । मूल्य ३) रेशमी जिल्द ३॥)

४४—उषाकाल

लेखक—पण्डित हरिनारायण आपटे ।

इस उपन्यासमें वीरकेशरी शिवाजीके जन्मके पहलेकी मराठा जातिकी अवस्था तथा हिन्दुओंकी मनोवृत्तिका इतना उत्तम दिग्दर्शन कराया गया है कि पढ़ते ही बनता है । लेखकने इतने रोचक ढंगसे लिखा है कि पढ़ना आरम्भ कर विना समाप्त किये नहीं रहा जाता । पुस्तक दो भागोंमें छापी गयी है । ११४० पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य ५॥) सुन्दर रेशमी सुनहरी जिल्द सहित ६॥)